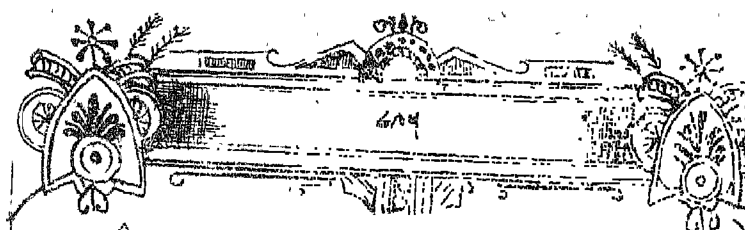


انتخاب

مثنوی مولانا روم

دفتر اوّل

کا

ہندی ترجمہ

مترجمہ



فہرست اغلاط فارسی

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۴	۷	دردران	وزدزدون
۶	۱	سنے	سینے
"	"	مست	نیست
"	۱۱	مشقے	عشقے
"	۱۶	نیر	نوا
"	۱۸	ہم	بم
۸	۵	سخت	تحت
۸	۸	درسنے	دالی
"	۱۶	حسدری	صیادسے
۱۰	۶	دریاکم	دریاکم
۱۲	۱۴	حاجات	حاحاشت
۱۴	۱۱	خیبی	غیبی
۱۶	۱۰	اتش	آتشش
"		سکنیدیں	مےکشیدش
۱۸	۶	دور	دود
"	۸	رازی	زاری
"	۱۸	خون	چون
۲۴	۸	کتارت	کتارت

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۲۴	۱۰	نرم	ترم
۳۲	۴	گریہ	گربہ
"	۱۰	چوکتے	جوکتے
"	۱۳	قیاسیں	قیاسش
۳۴	۱	بالبشر	مابشر
"	۱۵	در	ور
۳۸	۱۴	نواہم	نواہم
"	"	گہ	گر
۴۴	۱۰	سنے	سینے
۴۶	۶	ونے	وسے
۴۸	۳	زلدی	زاری
۵۰	۱	اشت	استت
"	۱۵	از	ار
۵۶	۲	مخسن	مخمس
"	۱۹	غزار	مشرار
۶۲	۴	چرخ	مرخ (سوختہ)
"	۱۱	گرد	گزد
۶۴	۱	بلیتی	بہ بلیتی
۶۶	۹	کسعب	کسب
۶۸	۴	بایا	بابا

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۷۰	۶	مسرت	سرت
"	۷	ابان	امان
۷۴	۹	شبے	سمے
۷۶	۳	زان	زن
"	۷	دریاباطن	درباطن
۸۰	۱۴	زیافتش	زیانفشش
"	۱۶	لبن	لبس
۸۲	۲	وور	ور
۹۲	۱۲	بوذر	بور
۹۴	۴	رنگ	زنگ
۱۱۲	۳۰	وندانہا	دندانہا
۱۱۴	۵	با	یا
۱۱۶	۱	دود	دور
"	۱	روجہا	روح ہا
۱۲۲	۱۳	خیالی	خالی
۱۲۴	۱۹	جس	حسّ
۱۲۸	۱۱	کارہش	کارش
۱۳۰	۱۴	درویش	درونش
۱۳۲	۴	فلامنگ	فلاسنگ
۱۶۶	۲	اتش	آتش
"	۳	اتش	آتش

تمت

शुद्धाशुद्ध पत्रम्

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	यम	मद्य	८७	१७	यार	भार
७	१८	मात	भांति	९३	१३	मान	मगन
८	१६	वेह	बहे	९९	१	तराहि	तूगाहि
१५	१०	मृत्य	भृत्य (नौकर)	१०५	१०	असरा	अरुरा
१७	११	सास	सीस	१०८	१०	भयंकररक्षक	(भयंकरभक्षक
१८	८	मुनत	सुनत	१०९	१८	तनस्वभाव	तवस्वभाव
२७	१०	जतु	जनु	११५	३	निमान	निमरन
२७	११	मृत्य	मृत्यु	११५	१२	पष्ठ	पृष्ठ
२७	१२	वधाता	विधाता	१२५	१७	काटौ	काढ़ा
३१	२४	वधुवंत	बुधवंत	१३३	१	सर्वस	सर्वस्व
३७	१३	विकारै	निकारै	१३३	१०	सुसां	सुसंग
३८	१८	करम	करन	१३७	१५	पम	प्रेम
४१	११	भःसे	भासे	१३७	१६	दुखमेंवस	दुखमेंदुख
४८	८	अंजलि	अंजुलि	१३९	३	विय	त्रिय
५३	१५	शाट	शाठ	१४३	२	नरु	मरु
५३	१८	मांगत	मानत	१५१	४	गरु	गुरु
५७	१८	जनालि	जननि	१५९	१	अल	लहै
६५	१६	वहु	वह	१५९	१	सयाहि	सवाइ
७५	१६	मति	भनि	१५९	१४	ववहु	कबहु
७७	१७	तर्क	नर्क				
७८	४	यन्तिम	अन्तिम				
८५	११	रलो	चलो				

انتخاب مثنوی مولانا روم

دفتر اوّل

کا

ہندی ترجمہ

مترجم شنکر انند

مطبع شمسی آگرہ میں باہتمام سید محمد بشیر الدین خان چھاپی گئی

هو الغنی

حمد بی حد مر ذات وحده لا شریک را سزد که این گلزار سراپا نگار کائنات را بگلهای اصناف و انواع مخلوقات بدین خوبی آراسته که دیده باریک بین نظارگیان محو تماشای اوست اما بعد نیازمند فقیر شنکر ابن ... بعز عرض ارباب فهم و ذکا میرساند که این گلستان جاوید بهار که از دست تطاول گردش زمان برکنار است و بگلهای نصایح بوقلمون سرسبز و شاداب از نتائج طبع بلبل شاخسار حقایق و علوم مولانای روم که بزبان فارسی ست و این شعر مصداق حال او

مثنوی مولوی معنوی — هست قرآن در زبان پهلوی

اگرچه محوای وجدان اولیای کرام را در حیطهٔ تحریر آوردن تصرف مشکل بیجاست مگر بامید افضال نامتناهی بنظر آنکه هندی خوانان نیز از نفحه بر نهج ... خود و پرده اختلافات نمایند خیر اندیشی که باغوای ... خود سرایان که بر ضمیر ایشان حایل است برخیزد و بجادهٔ مستقیم سلوک گرایند بزبان بهاشا منظوم ترجمه نموده ... و بمصارف خاص چند اصحاب قدرشناس که نام نامی شان بفهرست ملحقه به صفحهٔ آخر ثبت نموده حلیهٔ الطباع پوشیده بامید از ارباب فطرت و ذکا آنکه اگر سهوی و خطائی بینند که منشای بشریت است بذیل عفو پوشند و یا باصلاح گرایند بمصداق آنکه ؎ نوشته بماند سیه بر سپید * نویسنده را نیست فردا امید * تاریخ تالیف که نتیجه کلک مولف است موافق رباعی است شعر

مونس رند و مشرب زهاد — راحت روح و دل بصر فصحا
گفت شنکر ز سال تاریخش — باغ امید مثنوی بهاشا

۱۹ بکرم

ओ३म्

उस अनुपम अद्वितीय अविनश्वर निर्विकार सर्वाधार का कोटिशः धन्यवाद है जिसने संसार उपवन को बिबिध रचनारूप पुष्पों से सुभूषित किया है जिसको देखि योगीजनों की सूक्ष्म बुद्धि औ विचार में निमग्न हो चकित रहि जाती है तत्पश्चात सज्जनों विद्वानों की सेवा में सविनय निवेदन है कि यह सद्ग्रंथ जो महात्मा मौलवी रूम के सदुपदेशों का भंडार है यावनीय भाषा में पद्यात्मक था यद्यपि महत्पुरुषों के गूढ़ विचारों का अनुवाद करना और उसका सच्चा चित्र खैंचना कठिन ही नहीं किंतु असम्भव सा प्रतीत होता है तथापि परमात्मा से बल प्राप्ति की आशा पर इस विचार से कि भाषानुरागी प्रेमियों को भी लाभ हो अनधिकार चेष्टा की है और पद्यात्मक भाषा अनुवाद किया है जो आपकी सेवा में समर्पित है आशा की जाती है कि न पठन या बनी भाषा स्वार्थी लोगों के शब्द को अपने स्वरूप अनुभव की कसौटी पर जांचेंगे कि भाषा के भेद से महात्माओं के सिद्धांत में कुछ भेद नहीं हो सकता जिसको प्रेमी सज्जनों की मराला और उनके निज व्यय से जिनका नाम इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर लिखित है प्रकाशित कराया है जिससे श्रीमानों की उदारता का परिचय अनुभवती है अनुवादक की अल्पज्ञता पर ध्यान न देकर शिक्षा ग्रहण करें।

चन्द्र अंक स्वर ग्राम सह संवत्सर सुखदाय शंकर मति अनुरूप निज भाषा पद्य बनाय
१ ९ ७ ३

ہو اللہ

بشنو از نے چون حکایت میکند — وز جدائی ہا شکایت مے کند

کز نیستان تا مرا ببریده اند — از نفیرم مرد و زن نالیده اند

سینه خواهم شرحه شرحه از فراق — تا بگویم شرح درد اشتیاق

ہر کسے کو دور ماند از اصل خویش — باز جوید روزگار وصل خویش

من بہر جمعیتے نالان شدم — جفت خوشحالان و بدحالان شدم

ہر کسے از ظن خود شد یار من — وز درون من نجست اسرار من

سر من از نالہ من دور نیست — لیک چشم و گوش آن نور نیست

تن ز جان و جان ز تن مستور نیست — لیک کس را دید جان دستور نیست

آتش است این بانگ نائے و نیست باد — ہر کہ این آتش ندارد نیست باد

آتش عشق ست کاندر نے فتاد — جوشش عشق است کاندر مے فتاد

نے حریف ہر کہ از یارے برید — پردہ ہایش پردہ ہائے ما درید

ہمچو نے زہرے و تریاقے کہ دید — ہمچو نے دمساز و مشتاقے کہ دید

نے حدیث راہ پر خون میکند — قصہ ہائے عشق مجنون میکند

۱۔ نے مراد روح سے ہے جو اپنے وطن سے دور پڑے سے ہے۔ ۲۔ بھوک یا پریم کو انا ریچوس نہیں کر سکتیں۔ ۳۔ ہوا اگر کہ انجماد پیدا کرتی ہے یا صرف چھو کر رہ جاتی ہے۔

۴۔ شراب میں آفتاب کی حرارت سے جوش پیدا ہوتا ہے اگر اسکو چھوڑ دیا جاوے تو کچھ عرصہ میں خشک ہو کر عناصر میں ملجاوے یہی حالت عشق کی ہے جو اصلی وطن کو پہونچاتا ہے۔ ۵۔ اپنے حسن میں زہر ہے کہ اپنے کو فنا کرتی ہے اور ونکو تریاق ہے جو فنائی اللہ کا درجہ دلاتی ہے یا عشق کو حرکت دیتی ہے جو ظاہر بربادی کا سامان ہے اور اصلی ہستی کیلئے تریاق

ओ३म् [illegible]

१ सुनी कबहुं बंसी की बानी | कहत कहा यह बिकट कहानी
बंस वियोग दुखित अति भारी | सुना हुआ [illegible] नरनारी ॥
हृदय फिरै ओ बिरह दुहाई | [illegible] प्रेम गभुताई
निज प्रियतम महि बिलग जो होई | मिलन मार्ग [illegible] आनहि सोई
सब के निकट बैठ दुख रोये | भले बुरे का सबहि बिगोये
मति अनुरूप सबहि सन मानेउ | अंतर दुख काहु नहिं जानेउ
मर्म दुख प्रगट हूक के माहीं | पर कहुं इन्द्रिन की गति नाहीं
प्रथक देह से होइ न देही | तदपि देह नहिं जानत नेही

४ [illegible] यह बंसी को राग
जरियो वह [illegible] में जहीं प्रेम को आग

प्रेम अग्नि बंसी के माहीं | यस माहि प्रेमाहि की छाहीं
बंसी सुहृद वियोग [illegible] | दीन [illegible]
— २ बिना करुणा के सह्य यक — [illegible]
गरल सुधा दोहुन को खानी | बन [illegible] मानी
बंसी प्रेम उमंग बढ़ावे | प्रेमन प्रेम रंग सरसावे

१ जीव रूप बंसी है जो अपने परमानंद स्वरूप से अलग होकर अपार संसार में पड़ी है ॥ २ बंस बांस कुटुंब
३ जैसे भूख की गति को भूखा ही जान सकता है इन्द्रियों की गम नहीं ॥ ४ वायु [illegible] रह
जाती और कठोरता उत्पन्न करती पर अग्नि औरों को लगकर जलाती और दाह उत्पन्न करती है —
१ [illegible] योग को अमृत अर्थात प्रेम के बढ़ाने में जो [illegible] में बरबाद करता है जहर और
ईश्वर प्राप्ति में अमृत है ॥

محرم این هوش جز بیهوش نیست | مر زبان را مشتری جز گوش نیست
گر نبودی ناله نی را ثمر | نی جهان را پر نکردی از شکر
در غم ما روزها بیگاه شد | روزها با سوزها همراه شد
روزها گر رفت گو رو باک نیست | تو بمان ای آنکه چون تو پاک نیست
هر که جز ماهی ز آبش سیر شد | هر که بی روزیست روزش دیر شد
در نیابد حال پخته هیچ خام | پس سخن کوتاه باید والسلام

بند بگسل باش آزاد ای پسر
چند باشی بند سیم و بند زر

گر بریزی بحر را در کوزهٔ | چند گنجد قسمت یک روزهٔ
کوزهٔ چشم حریصان پر نشد | تا صدف قانع نشد پر در نشد
هر کرا جامه ز عشقی چاک شد | او ز عیب و حرص کلی پاک شد
شاد باش ای عشق خوش سودای ما | ای طبیب جمله علتهای ما
ای دوای نخوت و ناموس ما | ای تو افلاطون و جالینوس ما
جسم خاک از عشق بر افلاک شد | کوه در رقص آمد و چالاک شد
جسم خاک از عشق بر افلاک شد (جسم محمد) | کوه در رقص آمد و چالاک شد (کوه طور)
با لب دمساز خود گر جفتمی | همچو نی من گفتنیها گفتمی
هر که او از همزبانی شد جدا | بی زبان شد گرچه دارد صد نوا
سر پنهانست اندر زیر و بم | فاش اگر گویم جهان برهم زنم

ف: جز ماہی یانی سے سیر نہیں ہوتی جو پانی سے سیر ہو جاوی وہ جز ماہی ہیں یعنی جو تجلیات حق مشاہدہ کرکے صابر ہو گئے جو سیر نہیں ہوئے وہ ماہی ہیں — بے روزی جو عشق سے واقف ہی نہیں۔

२

अबुध बुद्धि सों गति पहिचाने । श्रवणही शब्द केर गुण जाने
बनसी में प्रभाव यदि नाहीं । क्यों यह प्रेम बसौ जग माहीं
हा हमरे दिन बिनु हरि बीते । धृक जीवन बिनु प्राण पिरीते
शोक दिवस गत को कछु नाहीं । प्रेम पुनीत रहै मन माहीं
कछुक न रिद्धि सिधि मन रहाहीं । हरि विमुखन कर जन्म वृथाहीं
मर्मी बिनु कोई भेद न पावहि । श्रवण कथन कछु काम न आवहि

धन योवन की प्रीति मन मुकुर मलिन कर देत
[illegible]

समुद्र [illegible] । [illegible]
तृष्णा [illegible] । पुनि के शांति [illegible] मौक्तिक पाई (सीपी, मोती)
मन में प्रेम [illegible] बोई । तृष्णा बिगत भयो नर सोई
प्रेम तुही हमरो हितकारी । सब रोगन को औषधकारी (वैद्य)
लज्जा अहंकार [illegible] टारी । वैद्य धनन्तर तुही हमारी
[illegible] प्रेम से गगन समाई । अचल पहाड़ हिं देहि [illegible]
प्रेम पाइ ध्रुव गगन सिधारो । गिरधारी नख पर गिरधारो
पाइ प्रेम पथ को मद भारी । हम हु कहत कछु ज्ञान विचारी
निगम सहस्र [illegible] बिनु पाये । गूढ़ रहस्य न पर न जनाये
[illegible] । सुनो भेद संसार न पावे

२ ओ संसार की ओर से बुद्धि रहित है ॥ ३ संसार में ईश्वर प्रेमी अनेक हैं यह प्रेम का ही प्रभाव है

४ [illegible]

آنچه نے میگوید اندرین دو باب / گر بگویم من جهان گردد خراب

جمله معشوقست و عاشق پرده / زنده معشوقست و عاشق مرده

چون نباشد عشق را پروای او / او چو مرغی ماند بی پر وای او

من چگونه هوش دارم پیش و پس / چون نباشد نور یارم پیش و پس

نور او در یمن و یسر و تحت و فوق / بر سر و بر گردنم مانند طوق

عشق خواهد کین سخن بیرون بود / آینه غماز نبود چون بود

آینه‌ت دانی چرا غماز نیست / زانکه زنگار از رخش ممتاز نیست

آینه کز زنگ و آلایش جداست / پر شعاع نور خورشید خداست

رو تو زنگار از رخ او پاک کن / بعد ازان آن نور را ادراک کن

عاشق شدن بادشاه بر کنیزک و رنجور شدن او و معالجه بادشاه

بشنوید ای دوستان این داستان / خود حقیقت نقد حال ماست آن

نقد حال خویش را گر پی بریم / هم ز دنیا هم ز عقبی بر خوریم

این حقیقت را شنو از گوش دل / تا برون آئی بکلی ز آب و گل

بود شاهی در زمانی پیش ازین / ملک دنیا بودش و هم ملک دین

اتفاقا شاه روزی شد سوار / با خواص خویش از بهر شکار

بهر صیدی می‌شد او بر کوه و دشت / ناگهان در دام عشق او بگشت

یک کنیزک دید او بر شاه راه / شد غلام آن کنیزک جان شاه

۵۱ من عرف نفسه فقد عرف ربه جس نے اپنے نفس کو پہچانا اوس نے اپنے رب کو پہچانا

जैसी ध्वनि गति मानि इक होई
ईश्वर छांड़ि अन्य नहिं कोई
आपहि छिप्यो आवरण माईं
दृश्य असत्य सत्य इकसाईं
ईश्वर प्रेम न जाहि उठावै
पक्षी पंख विना कहां जावै
जिन प्रभु प्रेम प्रकाश पसारी
सकहिं काम क्रोधहि किमटारी
[2] दशहू दिशा माहि द्युतिकारी
व्यापि रह्यो सब विश्व मंझारी

अकथ कहानी प्रेम की कथनी मैं न समाइ
मलिन मुकुर मन मैं कबहु मूरति परत दिखाइ

दर्पण द्युति क्यों नहिं दरसाई
विषय मलिनता की अधिकाई
जहां नहिं मन नहिं अहंकृत काई
आत्मसूर्य तहां परत दिखाई
दुविधा धूरि दूर करि डारो
तत्क्षण आत्म प्रकाश निहारो

एक राजा का दृष्टांत इसी विषय पर

सुनौ मित्रवर एक कहानी
तिहि प्रसंग बश कहब बखानी
तत्व ज्ञान को जो हम पावहिं
क्यों लोक औरपरलोक नसावहिं
सुनहु श्रवण दै सीख हमारी
फाटै पीन प्रमाद पिटारी
रह्यो एक महिपाल सुजाना
नय संपन्न सुज्ञान निधाना
भृत्य सहित ह्वै कर असवारा
मृगया हेत नृपति पग धारा
मृग पाछै बन खोजत राऊ
दीख नारि इक मृदुल स्वभाऊ
नहिं आखेट तहां कोई पावा
प्रेम जाल में आप बंधावा

२ यो नै भूमा तत्त सुखम नाल्पे सुखमास्ति॥

مرغ جانش در قفس چون می‌طپید | داد مال و آن کنیزک را خرید
چون خرید او را و برخوردار شد | آن کنیزک از قضا بیمار شد
آن یکی خر داشت پالانش نبود | یافت پالان گرگ خر را در ربود
مثال اول
کوزه بودش آب می‌نامد بدست | آب را چون یافت خود کوزه شکست
مثال دوم
شه طبیبان جمع کرد از چپ و راست | گفت جان هر دو در دست شماست

جان من سهل ست و جان جانم اوست
دردمند و خسته‌ام درمانم اوست

هر که درمان کرد مر جان مرا | برد گنج و مال و مرجان مرا
جمله گفتندش که جان بازی کنیم | فهم گرد آریم و انبازی کنیم
هر یکی از ما مسیح عالمی است | هر الم را در کف ما مرهمی است
گر خدا خواهد[1] نگفتند از بطر | پس خدا بنمودشان عجز بشر
ترک استثنا[3] مرادم قسوتی[2] ست | نے همین گفتن[4] که عارض حالتی است
ای بسا ناگفته استثنا بگفت | جان او با جان استثناست جفت
هر چه کردند از علاج و از دوا | گشت افزون رنج و حاجت ناروا
شربت و ادویه و اسباب او | از طبیبان برد یکسر آب رو
آن کنیزک از مرض چون موی شد | چشم شاه از اشک خون چون جوی شد
چون قضا آید طبیب ابله شود | آن دوا در نفع خود گمره شود
از قضا سرکنگبین صفرا فزود | روغن بادام خشکی می‌نمود

١ ترجمه انشاء الله تعالی ٢ سنگدلی ٣ استثنا ترجمه انشاء الله تعالی ٤ محض بزبان گفتن کافی ست.

प्रेम विवस नल फत जिमि मीना । बहु धन दै तिहि कीन अधीना ॥
बिधिवत ब्याह कीन गृह आनी । बिधि वश भई रोग बश रानी ॥
गदहा रह्यो पलान हि रोयो । मिल्यो पलान गधा तब खोयो ॥
पात्र रह्यो तब जल नहि पायो । वारि मिलो तब पात्र नसायो ॥
नरपति बहुत वैद्य हंकारे । कही तुमहि प्रानन रखवारे ॥

दृष्टांत

निज प्रानन ते मोहि प्रिय तिहि तुम लेहु बचाय ।
अमित अनुग्रह करि करिय अमित अनूप उपाय ॥

विरुज विशोक करै इह जोई । बहु मणि धन गज पावे सोई ॥
सबन कही हम रोग निवारहिं । सम्मति कर सब सुमति सुधारहिं ॥
धनवंतर सुखेन रुज हारी । हम सम कोउ न भेषज कारी ॥
अस अभिमान मनहिं जब धारो । ईश करो तिन का मुख कारो ॥
नहिं भगवत भरोस जिय माहीं । भयो कहा पुनि भुवन रिझाहीं ॥
मुख से कबहुं न नाम उचारें । ईश्वर को चित में नित धारें ॥
करी निदान चिकित्सा भारी । तिलनहिं घटी बढ़ी बीमारी ॥
औषधि सुखद देत भई हानी । उनके मुख की कांति सिरानी ॥
नृपति रोग बश रानि निहारे । नेत्रन ते ह रुधिर के नारे ॥
चूकहि वैद्य मृत्यु जब आवे । तंत्र मंत्र कछु काम न आवे ॥
औषधि गुण प्रतिकूल दिखावे । भेषज शीत न उष्ण नसावे ॥

औषधि उष्ण गरमी

از هلیله قبض شد اطلاق رفت — آب آتش را مدد شد همچو نفت

سستی دل شد فزون و خواب کم
سوزش چشم و دل پر درد و غم

عجز حکیمان از معالجهٔ کنیزک رو آوردن بادشاه بحق تعالی

شه چو عجز آن طبیبان را بدید — پا برهنه جانب مسجد دوید
رفت در مسجد سوی محراب شد — سجده‌گاه از اشک شه پرآب شد
چون بخویش آمد ز غرقاب فنا — خوش زبان بگشاد در مدح و ثنا
کای کمینه بخششت ملک جهان — من چه گویم چون تو میدانی نهان
حال ما و این طبیبان سربسر — پیش لطف عام تو باشد هدر (ناچیز)
ای همیشه حاجت ما را پناه — بار دیگر ما غلط کردیم راه
لیک گفتی گرچه میدانم سرت — زود هم پیدا کنش بر ظاهرت
چون برآورد از میان جان خروش — اندر آمد بحر بخشایش بجوش
درمیان گریه خوابش در ربود — دید در خواب او که پیری رو نمود
گفت ای شه مژده حاجات رواست — گر غریبی آیدت فردا ز ماست
چونکه آید او حکیم حاذق است — صادقش دان کو امین و صادق است
در علاجش سحر مطلق را ببین — در مزاجش قدرت حق را ببین
خفته بود این خواب دید آگاه شد — گشته مملوک کنیزک شاه شد
چون رسید آن وعده‌گاه و روز شد — آفتاب از شرق اخترسوز شد
بود اندر منظره شه منتظر — تا ببیند آنچه بنمودند سر

हर्ष हु अफरा देत बढ़ाई । जलहु अग्नि की करत सहाई ।

मन की निर्बलता बढ़ी नींद न आवहि ताहि
नेत्र जल न भड़ कत हृदय रोवे रानि कराहि

वैद्यों की दीनता पर ईश्वर पर ध्यान आना राजा का

वैद्यन की दीनता निहारी । नृपतिहि दुख उपजो बहु भारी ।
गदगद गिरा नयन बहि धारा । मन मंदिर में कीन पुकारा ।
कछु कस्वस्थ जब भयउ नृपति मन । कहिहे शिव हे शोक विमोचन ।
तृण सम राज्य तुमारे दाया । तुमसे कहा कछु दुरै दुराया ।
हम कृत प्रावश्य अभागे । तुम दयालु करुणा रस पागे ।
सदा इष्ट फल के तुम दाता । परे भूल बश हम जन त्राता ।
यद्यपि तुम मन की गति जानो । तदपि अज्ञ ना हेतु बखानो ।
अंतर्ध्वनि जब कीन भुआला । दया समुद्र उमग्यो तिहिकाला ।
आपके नेत्र स्वप्न के माहीं । पुरुष पुरातन पेखेउ ताहीं ।
कह्यो नृपति क्यों रोल मचावे । हम प्रेरित अनिथी इक आवे ।
वैद्य होइ गुन ज्ञान निधाना । सत्य पुरुष हरि भक्त सुजाना ।
रसरस रोगहि सहज हटावे । ईश्वर माया प्रगट दिखावे ।
जाग्यो नृपति हर्ष हिय मानी । सुन्दर सुनत सुधा सम बानी ।
पुजवे प्रभु कब आस हमारी । जबहि भानु निज किरन पसारी ।
निरखत बैठ झरोखा माहीं । अतुलित प्रभु प्रताप उर माहीं ।

دید شخصے فاضلے پر مایهٔ — آفتابے درمیان سایهٔ

بر خیالے صلح شان و جنگ شان — وز خیالے فخر شان و ننگ شان

مہ ستید از دور مانند ہلال — نیست بود و ہست بر شکل خیال

نیست وش باشد خیال اندر روان — تو جہانے بر خیالے بین روان

جان

ان خیالاتے که دام اولیاست — جارے عکس مہرویان بستان خداست

ان خیالے را که شہ در خواب دید — در رخ مہمان ہمے آمد پدید

نور حق ظاہر بود اندر ولی
نیک بین باشی اگر اہل دلی

ان ولے حق چو پیدا شد ز دور — از سراپایش ہمے میتخیت نور

شہ بجائے حاجبان در پیش رفت — پیش ان مہمان غیب خویش رفت

ضیف غیبی را چو استقبال کرد — چون شکر گوئی که پیوست او بورد

چون یکے لب تشنه دان دیگر چو آب — ان یکے مخمور دان دیگر شراب

بہا

ہر دو بحری آشنا آموختہ — ہر دو جان بے دوختن بر دوختہ

مناسبت ازلی تھی

گفت معشوقم تو بودستی نه ان — لیک کار از کار خیزد در جہان

اے مرا تو مصطفیٰ من چون عمر — از برائے خدمتت بستم کمر

درخواست توفیق و رعایت ادب از جناب باری عزاسمه

از خدا جوئیم توفیق ادب — بے ادب محروم گشت از لطف رب

بے ادب تنہا نه خود را داشت بد — بلکه آتش در ہمه آفاق زد

ف بخیالے صلح و بخیالے دیگر جنگ تمام دنیا کا ایسا ہی حال ہے کمال کا خیال آیا وہم ہو گیا بد نامی کا خیال آیا ننگ و عار ہو گیا ف فنا فی الله

देखेउ मुनिवर इक मन भावा	डूबत मनहुं थाह नर पावा
दौज चन्द्र की भांति निहारै	कबहुं झूंठ पुनि सत्य बिचारै
मन कल्पना अनेक मन माहीं	सब जग एकहि मारग जाहीं
कबहुं मिलैं कबहुं उत्पाता	लज्जित कबहुं कबहुं सुख गाता
अस विकल्प हरि जन मन माहीं	ईश्वर भक्ति बसत तिन माहीं
स्वप्नहिं जिमि देखै नृप जाये	लक्षण सोई अतिथि में पाये

ईश्वर के गुण प्रगट ही भक्तन माहिं दिखाहिं
जिनके मन हैं स्वच्छ ते उनकी परख कराहिं

दूरहि ते मुनिवर जब देखे	ईश्वर गुण नख शिख लौं पेखे
मृत्यसमान गयेउ तिह पाहीं	अतिथि भक्ति अति ही मन माहीं
कर अगवानि परस्पर भेटे	मानहु क्लेश जनित दुख मेंटे
महा तृषित जिमि वारि हि पावै	अमृत पाइ मन मोद बढ़ावै
कर्णाधार दोउ भक्ति समुद्र के	मिले भये जनु जन्मान्तर के
तुमही जीवन आधार हमारे	रानी के मिस तुम पग धारे
कृष्ण समान इहां तुम हमरे	अर्जुन सम हम चाकर तुम्हरे

ईश्वर से प्रार्थना कृतघ्नता की

माया विषम विवश भरमाये	हम कृतघ्नता के फल पाये
तनु कृतघ्न निज अनहितकारी	जगत माहिं जिन ज्वाल पजारी

بدگمانی کردن و حرص آوری   کفر باشد پیش خوانِ مهتری
ابر ناید از پے منع زکات   وز زنا افتد وبا اندر جہات
ہرچہ آید بر تو از ظلمات غم   آن ز بیباکی و گستاخی ست ہم
ہر کہ بیباکی کند در راہ دوست   رہزنِ مردان شد و نامرد اوست
(راہ خدا میں) ہر کہ گستاخی کند اندر طریق   گردد اندر وادیِ حسرت غریق
از ادب پرنور گشت است این فلک   وز ادب معصوم و پاک آمد ملک
بد ز گستاخی کسوف آفتاب   شد عزازیلے ز جرأت ردِّ باب
(شیطان اسی گستاخی سے نکالا گیا)

شہ چو پیش میہمان خویش رفت   شاہ بود و لیک بس درویش رفت[۵۱]
دست بکشاد و کنارانش گرفت   ہمچو عشق اندر دل و جانش گرفت
دست و پیشانیش بوسیدن گرفت   وز مقام و راہ پرسیدن گرفت
پرس پرسان میکشیدش تا بصدر   گفت گنجے یافتم آخر بصبر
صبر تلخ آمد ولیکن عاقبت   میوۂ شیرین دہد پرمنفعت
گفت اے ہدیۂ[۵۲] حق و دفع حرج   معنی الصبر مفتاح الفرج[۵۳]
اے لقائے[۵۴] تو جواب ہر سوال   مشکل از تو حل شود بے قیل و قال
ترجمانِ ہرچہ ما را در دل ست   دستگیر ہر کہ پایش در گل است
چون گذشت آن مجلس و خوانِ کرم   دست او بگرفت و برد اندر حرم
قصۂ رنجور و رنجوری بخواند   بعد از ان در پیش رنجورش نشاند

۵۱ فقیرانہ صورت سے ملا ۵۲ عطیہ ۵۳ یعنی کنجی کشادگی کی ہے ۵۴ تمہاری ملاقات ہی ہر سوال کا جواب ہے

तजि विश्वास परिग्रह आने । सोई ईश्वरहि समर्थ न जाने
छांड़ि दान बिन किह निधि आवे । महामारी व्यभिचार बढ़ावै
त्रिविधि ताप जो तुमहि न पावे । ईश अनाराधन से आवे
ईश्वर नियम करहिं जे भंगा । ते बटमार बोधु गत बंगा
चलत कुपंथ कुवेश कुकर्मी । गिरहिं ते गर्त (निर्बुद्धि) गुनाह अधर्मी
सूर्य चन्द्र निज नियम न टारहिं । देवन होहिं दिव्य गुण धारहिं

गर्वहि से सूरज ग्रस्यो लोक प्रकाशक जोइ
गर्वहि ते रावण हन्यो गर्व न कीजो कोइ

अतिथि माहि गवने अवनीशा (राजा) । तजेउ राज्यमद पद धरि सीसा
हाथ बढ़ाइ अंक भर लीने । शांति सिंगार मनहु रस भीने
सास (गोद) राखि चरणन कर धूरी । माथ नाइ अस्तुति कर भूरी
कुशल पूछ सिंहासन दीनो । आज सुकृत फल हम सब लीनो
शम संतोष कठिन श्रुति गायो । मोदक मधुर मुनिन बतलायो
दया रूप धरि जनु तुम आये । हम संतोष जनित फल पाये
संकट मोचन दरस तुम्हारा । दुख दारिद्र अब रहहि कि हमारा
कही व्यथा सब हमरे मन की । हरहु पीर सब अपने जन की
भोजन करि निश्चिंत जब भयेऊ । कर गहि रनवासहि ले गयेऊ
दुसह दुख कारण कहि दीनो । रानीनि कर बरासन दीनो

رنگ و قارورہ و نبض او بدید — ہم علامات و ہم اسبابش بدید

گفت ہر دارو کہ ایشان کردہ اند — آن عمارت نیست ویران کردہ اند

بے خبر بودند از حال درون — استعیذ اللہ[1] مما یفترون

دید رنج و کشف شد بروے نہفت — لیک پنہان کرد و با سلطان نگفت

رنجش از صفرا و از سودا نبود — بوی ہر ہیزم پدید آید ز دود

دید از زاریش کو زار دل است — تن خوش ہست اما گرفتار دل است

عاشقی پیداست از زاری دل — نیست بیماری چو بیماری دل

علت عاشق ز علتہا جداست — عشق اصطرلاب[2] اسرار خداست

عاشقی گر زین سر و گر زان سراست — عاقبت ما را بدان شہ رہبرست

ہرچہ گویم عشق را شرح و بیان [مجازی یا حقیقی] — چون بہ عشق آیم خجل باشم ازان

گرچہ تفسیر زبان روشنگر است — لیک عشق بے زبان روشن تر است

چون قلم اندر نوشتن مے شتافت — چون بہ عشق آمد قلم بر خود شکافت

چون سخن در وصف این حالت رسید — ہم قلم بشکست و ہم کاغذ درید

عقل در شرحش چو خر در گل بخفت — شرح عشق و عاشقی ہم عشق گفت

آفتاب آمد دلیل آفتاب — گر دلیلت باید از وے رو متاب

از وے ار سایہ نشانے میدہد — شمس ہر دم نور جانے میدہد

خود غریبے در جہان چون شمس نیست [انتقال قصہ] — شمس جان باقی ست کورا امس نیست [زوال]

[1] پناہ مانگتا ہوں اللہ سے جسکو وہ اطبا افترا کرتے ہیں یعنی علاج برخلاف مرض کیا گیا [2] اصطرلاب ایک آلہ ہے جس سے آفتابی اور نجومی حالات دریافت کرتے ہیں ایسے ہی عشق اسرار خدا کا آلہ ہے۔

नाडीबरणचेष्टादेखी कारणरोगसमयसबपेखी

बोल्योभिषजभेदभरमाये उनविपरीतभावदरसाये

वैद्य पहिलेवद्यांन्

अंतरव्यथानउनपहिचानी उलटचलेचेनहिंकिमरानी

मनकरमर्मखोजसबराखेउ भावनकछुभुआलसनभाखेउ

बातपित्तकफजनितयहरोगनयाकोहोइ

होइदारुजिहवृक्षकीप्रगटधूमकरसोइ

तनकीव्यथानयाकहंहोई प्रेमदुरायसकहिकिमकोई

सुनतमूढदुखसंयुतबानी प्रेमगृहीतनाहिपहिचानी

सज्जनसत्यमार्गसबसोधा पूर्णपुण्यपथप्रेमपुरोधा

सत्यसनेहमांहिमनराता प्रेमअंतअभिमतफलदाता

प्रेमकथाकिमकहिबखानी बचनबिहायबिकलजहांवानी

यदपिनबाणीबिनुब्यवहारा बिनकहेप्रगटप्रेमउजियारा

व्यवहारसबबाणीसेहोतेहैं परंतु

धीरजधारिलिखनकछुभयेऊ हृदयलेखनीकोफटगयेऊ

प्रेमकथाअघटितजगमाहीं मनलेखनीकीगतनाहीं

बपुरीबुद्धिस्वयंबौराई प्रेमहिनिजप्रतापप्रगटाई

स्वयंप्रकाशस्वरूपनमारी तिहहितदीपकचहियनबारी

सूर्य

उदयअस्तइहसूरजमाहीं इकरसआत्मसूर्यसबठाहीं

निसदिनभ्रमेभानुगतिएही अटलअमरइकआरासनेही

شمس در خارج اگرچه ہست فرد | مے توان ہم مثل او تصویر کرد
لیک ان شمسے کہ شد بندش اسیر | نبودش در ذہن و در خارج نظیر
در تصور ذات او را گنج کو | تا در آید در تصور مثل او
شمس تبریزی کہ نور مطلق است | آفتاب است و ز انوار حق است
چون حدیث روے شمس الدین رسید | شمس چہارم آسمان سر در کشید
واجب آمد چونکہ آمد نام او | شرح کردن رمزے از انعام او

این نفس جان دامنم بر تافتہ است
بوے پیراہان یوسف یافتہ است

کز براے حق صحبت سالہا | باز گو رمزے ازان خوش حالہا
تا زمین و آسمان خندان شود | عقل و روح و دیدہ صد چندان شود
گفتم اے دور اوفتادہ از حبیب | ہمچو بیمارے کہ دور است از طبیب
لا تکلفنی فانی فی الفنا | کلت افہامی فلا احصی ثنا
کل شیٔ قالہ غیر المفیق | ان تکلف او تصلف لا یلیق
ہرچہ میگوید مناسب چون نبود | چون تکلف نیک نالایق نبود
من چگویم یک رگم ہشیار نیست | شرح آن یارے کہ اورا یار نیست
قال اطعمنی فانی جائع | واعتجل فالوقت سیف قاطع
باشد ابن الوقت صوفی اے رفیق | نیست فردا گفتن از شرط طریق
صوفی ابن الحال باشد در مثال | گرچہ ہر دو فارغ اند از ماہ و سال

۵۱ جو مضمون بیان کرے غیر افاقہ والا یعنی ہوش درست نہیں۔ جو تکلف اور تصلف سے کیا جاوے وہ لائق نہیں لاف زنی سے کرنا
تکلف اپنے کمال و ظاہر یعنی تصلف۔

बाह्य दृष्टि एकहि रवि होई
प्रतिमा न दृगि सकै कर कोई
जो अद्वैत न द्वैत समावे
मन बुधि चित जाहि नहिं पावै
अकथ अगोचर कहत न आवे
ताकी प्रतिमा कवन बनावे
मानहु धर हरि नर की सूरत
ईश्वर के प्रकाश की मूरत
सूर्य्य रूप गुरु मूरत पाई
सूर्य्य अस्त सम परत लखाई
श्रीगुरु देव पर्म हित जानी
गुरु महिमा कछु कहब बखानी

हृदय प्रेम अंबुध उमग बढ़त बारि अनुराग
मचल्यो मन मांझी तहां गुरु गुण मुक्ता लाग
मल्लाह

गुरु प्रताप से जो कछु पायो
गूढ़ रहस्य न चहिये दुरायो
जिह सुनि निज मद मान घटावैं
आत्मिक शारीरिक बल पावैं
कहेउ ताहि हम हैं जन रोगी
भये वैद्य गुरु चरण वियोगी
हठ परिहर जिन्ह मंहि सतावै
बलि वियोग वश कहत न आवै
कुंठित बुद्धि न हृदय उछाऊ
नीक न होइ दिखाउ बनाऊ
अस्थिर बुद्धि ने जो कछु भाखे
कहा बनाव किये गुर साखे
साखी है
विश्व बसो गुण सुधि नहिं मोही
गुरु उपमा न सकहि जग जोही
कहेउ सो ज्ञान अधार हमारा
झपटो काल खड्ग की धारा
भूलि नहि होइ जो इत उत भाखे
वर्तमान पर ही चित राखे
स्वांग गण तबही अतिथि कहावैं
मास वर्ष तिथि तिन हिं न भावैं

تو مگر خود مرد صوفی نیستی   نقد را از نسیہ خیزد نیستی
گفتمش پوشیدہ بہتر سر یار   خود بود ضمن حکایت گوش دار
خوشتر آن باشد کہ راز دلبران   گفتہ آید در حدیث دیگران
گفت مکشوف و برہنہ نے غلول   بازگو دفعم مدہ اے بوالفضول
بازگو اسرار رمز مرسلین   آشکارا بہ کہ پنہان سر دین

پردہ بردار و برہنہ گو کہ من
نے نخسپم با صنم با پیرہن

گفتم ار عریان شود او در عیان   نے تو مانے نے کنارت نے میان
آرزو میخواہ لیک اندازہ خواہ   بر نتابد کوہ را یک برگ کاہ
تا نگردی خون دل جان جہان   لب ببند و دیدہ بر دوز این زمان
آفتابے کز وے این عالم فروخت   اندکے گر پیش تابد جملہ سوخت
فتنہ و آشوب و خونریزی مجو   بیش ازین از شمس تبریزی مگو

این ندارد آخر از آغاز گو
رو تمام این حکایت را بگو

چون حکیم از این حدیث آگاہ شد   وز درون ہم داستان شاہ شد
گفت اے شہ خلوتے کن خانہ را   دور کن ہم خویش و ہم بیگانہ را
خانہ خالے کرد شاہ و شد برون   تا بخواند بر کنیزک او فسون
خانہ خالے ماند و یک دیار نے   جز طبیب و جز ہمان بیمار نے
دست بر نبضش نہاد و یک بیک   باز مے پرسید از جور فلک

حال — آنکہ وقت آیندہ — علانیہ — عداوت — خالی — مکان والا

सुनि प्रभु कर्म न बेग कराही इह क्षण भूप होइ क्षण माहीं
कहेउ कि भेद प्रगट भल नाहीं जान लेहु सब सैन न माही ॥
नहिं प्रत्यक्ष मोद मन भरहीं सज्जन सब परोक्ष[1] हित करहीं
कहि मन कर प्रत्यक्ष बखानो मत परोक्ष कर करहु बहानो
हमैं गुरुन की सैन बुझावहु धर्म रहस्य प्रगट करगावहु

कहु प्रत्यक्ष सुनाइ मोइ बीच न राखौ कोइ
पारस मिल आवरण सह लोह न कंचन होइ

कहेउ जो तेज पुंज प्रगटावे तेरो खोज कितहु नहिं पावे
वित्त समान होइ चित चाही फूके नहिं सुमेर उड़ाही
जौ प्रनेत्र किन राखि संभारी संसारिन जिन होउ दुखकारी
रवि कर तेज जो जगत तपाई अधिक प्रताप सह्यो नहिं जाई
आत्म कोटि रवि सरस प्रकासू सहज सुखेन सहै को तासू

महिमा श्री गुरुदेव की सकै न शारद गाय
अर्थ कहानी को हमैं तात कहहु समुझाय

व्यथा देखि पुनि वैद्य सुजाना नृपत भयेउ सहमन जब जाना
बोल्यो वैद्य सुनहु नरराया रहै न यहां कोइ अपन पराया
जब रनवासहि शून्य निहारो गूढ़ मंत्र वर वैद्य विचारो
भूप भुवन कर भीड़ सिरानी केवल वैद्य रह्यो अरु रानी
कह्यो भीरु प्रिय भय जिन करहू कहो व्यथा विस्मय परहरहू

१ परोक्षप्रिया इव हि देवाः प्रत्यक्षद्विषः

چون کسے را خار در پایش خلد — پاے خود را بر سر زانو نهد
(انتقال ... سے)
وز سر سوزن همے جوید سرش — ور نیابد میکند از لب ترش
خار با شد چون چنین دشوار یاب — خار در دل چون بود واده جواب
خانه دل را اگر بدیدے هر خسے — دست کے بودے غمانرا بر کسے

با حکیم او رازها میگفت فاش
از مقام خواجگان و شهر تاش

گفت انگه آن حکیم با صواب — آن کنیزک را که رستی از عذاب
چونکه دانستم که رنجت چیست زود — در علاجت سحرها خواهم نمود
شاد باش وفارغ وایمن که من — ان کنم با تو که باران با چمن
من غم تو میخورم تو غم مخور — بر تو من مشفق ترم از صد پدر
تا توانی پیش کس مکشاے راز — بر کسے این در مکن زنهار باز
چونکه اسرارت نهان در دل بود — ان مرادت زودتر حاصل شود
گفت پیغمبر که هر کو سر نهفت — زود گردد با مراد خویش جفت
دانه چون اندر زمین پنهان شود — سر او سر سبزی بستان شود
وعدها و لطفهاے ان حکیم — کردان رنجور را ایمن ز بیم
وعدها اهل کرم گنج روان — وعدها نا اهل شد رنج روان
وعدها باید وفا کردن تمام — ور نخواهی کرد باشی سرد و خام
آن حکیم مهربان چون راز یافت — صورت رنج کنیزک باز یافت
بعد ازان برخاست عزم شاه کرد — شاه را زان شمه آگاهی کرد

कंटक (कांटा) नख चुभे मग माहीं । निज जंघा धरि देखै ताहीं
सूक्ष्म सूचि (सुई) कर नाहि निकारै । नहिं दीखै तब जलहि पखारै
पद कंटक अस दुस्तर होई । मन कंटक कस कठिन न होई
मन कर शूल सबहिं अब जानाहिं । दुखित न रहै को जीव जहां नहि

प्रेम व्यथा निज वैद्य ते पुलक गात जल नयन
कही नाम गुण वास सब जहां सो प्रियतम अयन (स्थान)

विलखत वैद्य कही मृदु बानी । तब दुख रंचक रहै न रानी
मर्म तोर मन कर हम जाना । तब दुख हरौं सुखेन (नाम वैद्य) समाना
रहु निशंक भय शोक विहाई । सुखहि कमला कि बारहि पाई
तब दुख सहौं जो ईश्वर इच्छा । पितु ते अधिक करौं तब रक्षा
सबही सन यह भेद दुरायेउ । जिन काहू सन प्रगट दिखायेउ
जब लग भेद गुप्त मन माहीं । निज कर निधि (धन) कहं विग्रह (हानि) नाहीं
ऋषि कह भेद गुप्त जो राखै । शीघ्र सो वांछित फल को चाखै
धान्य (बीज) धरातल (पृथ्वी) रहेउ मिलाई । सघन वृक्ष हुइ कर लहराई
द्वादस दै ताको सम भावा । दारुण दुख दलि अभय करावा
शरण पालक जन शरण बचावहिं । पामर शरण मंझधार डुबावहिं
तजि प्रमाद शरण पूरी पारौ । काहि न करौ तिहि क्लीव (नामर्द) बिचारौ
वैद्य सुनिय मन गत पहिचानी । जिहि दुख दुखित भई वह रानी
त्वरित नरेश निकट सो आवा । कछुक सैन दे ताहि बुझावा

شاه گفت اکنون بگو تدبیر چیست	در چنین غم موجب تاخیر چیست

گفت تدبیر آن بود کان مرد را
حاضر آریم از پے این درد را

زر خود را واله و شیدا کند	خاصه مفلس را که خوش رسوا کند
زر اگرچه عقل مے آرد ولیک	مرد عاقل باید او را نیک نیک
پس فرستادان طرف یکدو رسول	حاذقان و کافیان بس عدول
اینک این خلعت بگیر این زر و سیم	چون بیای خاص باشی و ندیم
مرد مال و خلعت بسیار دید	غره شد از شهر و فرزندان برید
اندر آمد شادمان در راه مرد	بے خبر کان شاه قصد جانش کرد
اسپ تازی برنشست و شاد تاخت	خونبہاے خویش را خلعت شناخت
اے شده اندر سفر با صد رضا	خود بپاے خویش تا سوء القضا
در خیالش ملک و عز و مهتری	گفت عزرائیل رو آرے بری
چون رسید از راه آن مرد غریب	اندر آوردش بپیش شه طبیب
شاه دید او را بس تعظیم کرد	مخزن زر را بدو تسلیم کرد
پس حکیمش گفت کاے سلطان مه	این کنیزک را بدین خواجه بده
بعد از آن از بهر او شربت بساخت	تا بخورد و پیش دختر میگداخت
چون ز رنجوری جمال او نماند	جان دختر در وبال او نماند
چونکه زشت و ناخوش و رخ زرد شد	اندک اندک از دل او سرد شد
عشقهاے کز پے رنگے بود	عشق نبود عاقبت ننگے بود

कहेउ नृपति पुनि अब कहा कीजे	करहु उपाय जोय दुख छीजे

जिह नर विरह वियोग बश विकल भई वरनारि
ताहि बुलावहु यत्न कर नाशहि दुःख दवार (अगिनि)

धन कर लोभ सिखावहु ताई	नसै दरिद्री जब निधि पाई
यदपि बिना धन है बुधि दाना	यह रहस्य पावै कोई ज्ञाना
दूत भेज नृप ताहि बुलायो	चतुर बतन कहीं मैं जिह पायो
दूतन कही भेट धन लीजे	प्रात पयान नृपति तन कीजे
धन को लोभ सुबुद्धि नसावा	पुत्र कलत्र घर हु विसरावा
हर्षित चलो राजगृह पाहीं	लखि पशु समन शोक मन माहीं
चलो अश्व चढ धन रंग भीनो	आशा बेच जतु निज कर दीनो
हर्षित मार्ग चलो धन भोजी	अपने ही पांय भृत्य जिन खोजी
मन में ध्वनि जहां धन की ढेरी	मृत्यु घोर निज घात घनेरी
पथिक जबहि पुर पाटन ठयेऊ	नरपति निकट वैद्य ले गयेऊ
नृपति देखि बहु आदर कीनों	मणि हाटक धन बहु विधि दीनों
कहेउ वैद्य पुनि राजा पाहीं	राखो याहि राजगृह माहीं
मधुर पय (शरबत) विषमय अस दीनो	खान ही बलयो बन भयो झीनो
जस जस तन की कांति (शोभा) सिरानी	तस जस प्रेम हीन भई रानी
पीन वक्षा मुख द्युति कुमलाई	घटौ प्रेम बाढी निठुराई
तन कर प्रेम मुच्छ सु निभाई	मल धर निकट कि सज्जन जाई

چونکه زرگر از مرض بدحال شد
وز گدازش شخص او چون نال شد

گفت من آن آهوم کز ناف من — ریخت این صیاد خون صاف من
اے من آن پیلم که زخم پیلبان — ریخت خونم از براے استخوان
آنکه کشتستم پے مادون من — مے نداند که نخسپد خون من
بر من است امروز فردا بروے است — خون چون من کس چنین ضایع کے است
گرچه دیوار افگند سایه دراز — باز گردد سوے او آن سایه باز
این جهان کوه است و فعل ما ندا — سوے ما آید نداها را صدا
این بگفت و رفت در دم زیر خاک — آن کنیزک شد ز رنج و عشق پاک
زانکه عشق مردگان پاینده نیست — چونکه مرده سوے ما آینده نیست
عشق زندان در روان و در بصر — هر دمے باشد چو غنچه تازه تر
عشق آن زنده گزین کو باقی است — وز شراب جانفزایت ساقی است
عشق آن بگزین که جمله انبیا — یافتند از عشق او کار و کیا
تو مگو ما را بدان شه بار نیست — با کریمان کارها دشوار نیست
کشتن آن مرد بر دست حکیم — نے پئے امید بود و نه ز بیم
او نکشتش از براے طبع شاه — تا نیامد امر و الهام از اله

آنکه از حق یابد او وحی و خطاب
هرچه فرماید بود عین صواب

मुख छबि हीन मलीन मन रोग ग्रसन कृश गात
मांगत मृत्यु महेश पै जीवन तिन्ह न सुहात

कहत दैव मैं कहा बिगारा । मृगमद हेतु हिरण जिन मारा
हाय कष्ट कोइ संग न साथी । दंतन हित मारो हाथी
तुच्छ लोभ हित जिन मोहि मारो । सो कहा सुख सोवे हत्यारो
जे नर हमैं आज कल्पावहि । निश्चै ते नर दुख कल्पावहि
छाया भांति जो भोर बढ़ावै । संध्या लौट ताहि पर आवै
पर्वत मांहि कहै कोइ जैसो । उत्तर तिन्ह पावै पुनि तैसो
अस कहि प्राण त्याग तिन दीनो । प्रेम विगत रानी को कीनो
बादलकी छाया
प्रेतन भांति पोच जग माहीं । जिमि अग्नि पावक वारिद छाहीं
मृतक संसारी
जिन्ह कर सकल अमंगल नाहीं । सिंधु सरस समर हत सदाही
मोक्ष लोग अमृत समुद्र
या परमात्मा
तासु प्रेम अभिमत फल दाता । मोक्ष पियूष पयोधि बधाता
मुनि जन प्रेम पुंज जग जेते । पूजिन तासु प्रेम रस तेते
मन कहि प्रभु मोहि किह विध पावहिं । प्राणन पाल तोहि आप बुलावहि
यहमत कहा कि हम वहा कैसे पहुंचे
वैदान तिह स्वारथ बश मारेउ । इच्छा द्वेषन भय चित धारेउ
निस्स्वारथ निर्वैर अकामी । ईश रजायस को अनुगामी

होइ प्रकाशक जिन हिये ईश्वर करुणा सीव
ते कबहु कि अनुचित करहिं नहिं साधारण जीव

همچو اسمعیل پیشش سر بنه ۔ شاد و خندان پیش تیغش جان بده
تا بماند جانت خندان تا ابد ۔ همچو جان پاک احمد با احد
عاشقان جام فرح آنگه کشند ۔ که بدست خویش خوبانشان کشند
شاه ان خون از پے شهوت نکرد ۔ تو رها کن بدگمانی و نبرد
گر نبودے کارش الهام الله ۔ او سگے بودے درانندہ نه شاه
پاک بود از شهوت و حرص و هوا ۔ نیک کرد او لیک نیک بدنما
ان کسے را کش چنین شاهے کشد ۔ سوے تخت و بهترین جاهے کشد
گر بدیدے سود او در قهر او ۔ کے شدے ان لطف مطلق قهر جو
طفل مے لرزد ز نیش احتجام ۔ مادر مشفق ازان غم شاد کام
نیم جان بستاند و صد جان دهد ۔ انچه در وهمت نیاید ان دهد
تو قیاس از خویش میگیری و لیک ۔ دور دور افتادہ بنگر تو نیک

بیشتر آتا بگویم قصه
بو که یابی از میانم حصه

بود بقالے مرا و را طوطے ۔ خوش نوا و سبز گویا طوطے

قصہ کا خلاصہ جیو ایک راجا ہی جو سنسار بن مین شکار کو جاتا ہے جو کام کرودہ وغیرہ دُشٹ جیو مین (موذی جانور) اونکو مارے مگر یہ پرکرتی روپ استری کو دیکھ اوسپر عاشق ہو جاتا ہے پرکرتی (فطرت) کا یہ خاصہ ہی کہ جیو کو پہندے مین پہنسا کر آپ جہٹ الگ ہو جاتی ہی اوسکے علیحدگی سے جیو بہت دکھی ہوتا ہی پہر سچے دل سے پرارتہنا کرتا ہی تب اوسکو سد گرو (مرشد کامل) ملجاتا ہی اور وہ یم نیم (ترک منہیات وحصول واجبات) کا شربت پلاکر ابہمان (منی) کو جسپر پرکرتی عاشق ہے مار ڈالتا ہی جسسے وہ پرکرتی (فطرت) اسکے ہمیشہ کو تابعدار ہو جاتی ہی اور جیو سکھی ہو جاتا ہے

ईश आज्ञा (आज्ञा) सीस जो धारे	ज्यों प्रल्हाद सो नाहि उबारे
ध्रुव सम अमर धाम ते पावहिं	योग अगिन में जे जरि जावहिं
प्रियतम हाथ जो सीस गमावें	अमर होइ आनन्द घन पावें
स्वारथ हित न नृपति मरवायो	करि विकल्प जिन पाप कमायो
लिह शुक में ईशहि नहिं भावत (यदि उसके शुक में ईश्वर को अच्छे न लगते)	होतो श्वान राज किम पावत (कुत्ता)
ईर्षा मोह निकट नहिं जाके	स्वप्नेहु अनुचित होइ कि ताके
आतम विन जन जाहि संघारे	सुयश होइ सुर धाम पधारे
शुभ परिणाम जान नहिं लेनो	तो मुनीश आयसु किम देनो
होइ अधीर बाल बिललावे	मात प्रसन्न होइ चिरवावे
मारा जो ईश्वर हेत गमावें	अन पावनी बस्तु ने पावें
करि विकल्प गुण दोष लगावें	ईश्वर भेद समझ नहिं पावें

कहूं एक आख्यायिका जाते समझो मर्म
निज बिचार अनुसार जन धरैं संत पर भर्म

वणिक एक बधुवंत सुहायो	प्रिय शुक तिन इक पालि पढ़ायो

संक्षेप इतिहास

जीव रूप राजा संसार रूप बन में आखेट (शिकार) को गया कि कामादिक को मारे वह प्रकृति रूपा स्त्री को देख आसक्त होगया प्रकृति का यह स्वभाविक गुण है कि जीव को फन्दे में आप अलग हो जाती है फिर उसके बियोग से जीव दुखी होगया पर सच्चे मन से ईश्वर से प्रार्थना करने पर वैद्य सद्गुरु की प्राप्ती हुई उसने अभिमान को जिसपर प्रकृति आसक्त थी यम नियमादि का शर बतदिया जिससे वह मरगया बस फिर प्रकृति उसकी चेरी बन रहने लगी —

بر دکان بودے نگهبان دکان	نکته گفتے با همه سوداگران
در خطاب آدمی ناطق بدے	در نواے طوطیان حاذق بدے
خواجه روزے سوے خانه رفته بود	در دکان طوطی نگهبانی نمود
گربه برجست ناگه از دکان	بهر موشی طوطیک از بیم جان
جست از صدر دکان سوے گریخت	شیشهاے روغن گل را بریخت
از سوے خانه بیامد خواجه اش	بر دکان بنشست فارغ خواجه وش
دید پر روغن دکان و جامه چرب	بر سرش زد گشت طوطی کل ز ضرب
روزکے چندے سخن کوتاه کرد	مرد بقال از ندامت آه کرد
ریش بر میکند و میگفت اے دریغ	کافتاب نعمتم شد زیر میغ
چو جولقے سر برهنه مے گذشت (فقیر)	با سر بے مو چو پشت طاس و طشت (سر گھوما ہوا)
طوطی اندر گفت آمد در زمان	بانگ بر درویش زد کاے فلان
از چه اے کل با کلان امیختی	تو مگر از شیشه روغن ریختی
از قیاسش خنده آمد خلق را	کو چو خود پنداشت صاحب دلق را
کار پاکان را قیاس از خود مگیر	گرچه ماند در نوشتن شیر و شیر (یعنی)

جمله عالم زین سبب گمراه شد
کم کسے ز ابدال حق آگاه شد (اولیا)

اشقیا را دیدهٔ بینا نبود	نیک و بد در دیده شان یکسان نمود
همسری با انبیا برداشتند (کافر)	اولیا را همچو خود پنداشتند

तिह प्रतिदिन दुकान पर राखै । सो मृदु बैन ग्राहकन भाखै
मनुज समान मधुर कहै बचना । लोक चकित देखैं मधुर रचना
इक दिन वैश्य गयेउ गृह काजू । तजेउ दुकान त्रास शुक राजू
इक बिलार मूषक हित धावा । तिह शंका शुक शुभग उड़ावा
पैर सुराही परत पर जाई । पक्ष प्रहार फुलेल गिराई
कर गृह कार्य तासु प्रभु आवा । बैठ सहर्ष न शुक तहाँ पावा
देखि दुकान तेल मय टाटा । मार कीर कीनो खल्वाटा
शिथल भयो शुक बोलत नाहीं । बरिक विकल भा अति मन माहीं
मीजि हाथ बहुत पछितावे । शोभा हीन दुकानहि पावे
आवा तहाँ एक सन्यासी । लुप्त केश नख मश्रु उदासी
ताहि देखि शुक बोलत भयेऊ । निकट बुलाइ मुनहि अस कहेऊ
किह विधि तुम खल्वाट बनाये । कहो तुम कितिक फुलेल गिराये
हंसे लोग लखि तासु विचारी । जिन निज सम जानो ब्रतधारी
दुष्ट स्वभाव सहज मन वारे । निज भ्रम संतन माहि निहारे

चर्म दृष्टि आकार धरा कर भ्रष्ट भये बहु लोग
संत धर्म क्यों जान ही लगे अहि निशि भोग

चर्म दृष्टि असुरन की होई । विधि निषेध में भेद न कोई
संतन से सम ताग हि आनहिं । उनहू निज सम कलपि बखानहि

گفت اینک ما بشر اینان بشر — ما و ایشان بستهٔ خوابیم و خود

این ندانستند ایشان از عمی — هست فرقی درمیان بی انتها

هر دو گل خوردند زنبور و نحل — لیک زین شد نیش و زان دیگر عسل

هر دو نے خوردند از یک آبخور — آن یکی خالی و آن پر از شکر

صد هزاران همچنین اشباه بین — فرقشان هفتاد ساله راه بین

این خورد گردد پلیدی زو جدا — وان خورد گردد همه نور خدا

این خورد زاید همه بخل و حسد — وان خورد زاید همه عشق احد

این زمین پاک وآن شورست و بد — این فرشته پاک وآن دیوست و دد

هر دو صورت گر بهم ماند رواست — آب تلخ و آب شیرین را صفاست

جز که صاحب ذوق نشناسد طعوم — شهد را ناخورده کے داند ز موم

نعمت الله این عمل را در قفا — رحمة الله ان عمل را در وفا

هر چه مردم میکند بوزینه هم — آن کند کز مرد بیند دمبدم

مومنان را برد باشد عاقبت
بر منافق مات اندر آخرت

مومنش خوانند جانش خوش شود — در منافق تند پر آتش شود

نام ان محبوب از ذات وی است — نام این مبغوض ز آفات وی است

میم واو و میم و نون تشریف نیست — لفظ مومن جز پی تعریف نیست

زشتی این نام بد از حرف نیست — تلخی آن آب بحر از ظرف نیست

حرف ظرف آمد درو معنی چو آب — بحر معنی عنده ام الکتاب

मांस रुधिर अस्थीन (हड्डी) सञ्चारा	निन्द्रा भय समान अहारा
हिय की फूटन देत दिखाई	हैं बहु अंतर तिनके मांई
जोंक हंस दोउ जल में रहाई	बिधि दोहुन की गति बिलगाई
ईख मिर्च इक खेत नाहि बोई	तीक्षरा एक मधुर इक होई
भेद अनेक परस्पर पेखिय	पूरब पश्चिम अंतर देखिय (पश्चिम)
इनको भोग मलहि उपजावे	उनको आत्म प्रकाश बढ़ावे
इनमें ईर्षादिक मल नाना	उनमें बेद ईश गुण गाना
ऊसर खेत भेद हैं जेतो	भक्त दुष्ट में जानहु तेतो
देखन परत भेद नहिं जाना	जल अमृत किम कहिय समाना
जिह्वा जासु बिगत रस होई	मधु (प्राहन) और मौम कि जाने सोई
नर्क राह इन आप संवारी	श्रेय (कल्याण) मार्ग के वे अधिकारी
देखे करे सोई नहिं आना	नर वानर किम कहिये समाना

रवि मंडल को भेद वे अंत मुक्ति को जांहि
शूकर कूकर योनि में परे सो यह बिललाहि

सुखी होइ देव कहि टेरौ	असुर कहे दुख होइ घनेरो
उत्तम पद वह निज गुण पावै	निज अब गुण यह नीच कहावे
अक्षर मात्र दकार (देव) बकारा	इसमें बहै न गुण की धारा
वर्ण अकार सकार रकारा	इनहू में कछु नाहिं विकारा
अक्षर (असुर) पात्र अर्थ जल जानौ	समुद्र एक दोउ माहि समानौ

دان که این هر دو ز یک اصلی روان — بر گذر زین هر دو رو تا اصل آن

زر قلب و زر نیکو در عیار — بی محک هرگز ندارد اعتبار

هر کرا در جان خدا بنهد محک — مر یقین را باز داند او ز شک

آنکه گفت استفت قلبک مصطفا — آن کسی داند که پر بود از صفا

ور هزاران لقمه یک خاشاک خورد — چون در آید حس زنده پی برد

حس دنیا نردبان این جهان — حس عقبی نردبان آسمان

صحت این حس بجویید از طبیب — صحت آن حس بجویید از حبیب

صحت این حس ز معموری تن — صحت آن حس ز تخریب بدن

شاه جان مر جسم را ویران کند — بعد ویرانیش آبادان کند

ای خنک جانی که در عشق مآل
بذل کرده جان و مان و ملک و مال

کرد ویران خانه بهر گنج و زر — وز همان گنجش کند معمورتر

آب را ببرید و جو را پاک کرد — بعد از آن در جو روان کرد آب خورد

پوست را بشکافت پیکان را کشید — پوست تازه بعد از آتش بر دمید

کار بیچون را که کیفیت نهد — اینکه گفتم از ضرورت می‌دهد

گه چنین بنماید و گه ضد این — جز که حیرانی نباشد کار دین

کاملان کز سر تحقیق آگهند — بیخود و حیران و مست و واله‌اند

نی چنان حیران که پشتش سوی دوست — بل چنین حیران که غرق و مست دوست

آن یکی را روی او شد سوی دوست — وین یکی را روی او خود روی دوست

दोउन को इक सिरजन हारो	दहुन त्याग इक पितहि निहारो
खोटो खरो जो सोनो लाओ	बिना कसौटी जान न पाओ
आनम मांहि परख हरि दीनी	भल अन भल जानहु तुम चीनी
भलो करन मन हर्ष बढ़ावे	बुरे माहिं संताप न पावे
ग्रास अनेक जीव नित खावे	एकहु तिनका होइ न भावे
इन्द्रिन चेष्टा है जग माहीं	आत्मेच्छा कब सुर पुर जाहीं
दैहिक लाभ वेद ते पावहु	गति चाहो सतगुरु में आवहु
मन इच्छा तन पोखन हारी	आत्मेच्छा तन देइ उजारी
योग अग्नि जो तन नहिं तपावे	अंत परम सुख को सोइ पावे

ईश प्रेम कहि न दिये जिन तन धन और प्राण
धन्य सोई नर जगत में साखी वेद पुराण

साक्षी

ज्ञान दवी निधि धरहिं निहारे	धन लै नात अधिक समारे
गदलो सरि को नीर विकारे	स्वच्छ वारि पुनि तिह मंडारे
त्वचा विदारि कै कहिं काढ़े	कछु दिनों में नूतन त्वक बाढ़े
ब्रह्मादिक तिह जिन नहिं जानी	भक्तन हित कछु युक्ति बखानी
दुखन दुखी नहिं सुख हरसाहीं	विघ्न अनेकन तिह मग माहीं
जिन जाना कछु मर्म विशेषी	रहे चकित प्रभु रचना देखी
कबहुन विसरहि तिनैं स्वरूपा	निपट निमग्न भये तद्रूपा (प्रेम में डूबे हुए)
प्रभु रुख लखहिं सोइ शुभ सनेही	तन्मय एक न निज सुधि नेही
एक तो ईश्वर आज्ञा के अनुकूल चलते हैं (योगी)	एक ऐसे हैं जिन्हें अपनी सुधि नहीं है (अवधूत)

روی هر یک مینگر میدار پاس ‌ ‌ ‌ بو که گردی تو ز خدمت روشناس

دیدن دانا عبادت این بود ‌ ‌ ‌ فتح ابواب سعادت این بود

چون بسی ابلیس آدم روی هست ‌ ‌ ‌ پس بهر دستی نباید داد دست

زانکه صیاد آورد بانگ صفیر (سیٹی) ‌ ‌ ‌ تا فریبد مرغ را آن مرغ گیر

بشنود آن مرغ بانگ جنس خویش ‌ ‌ ‌ از هوا آید بیابد دام و نیش

حرف درویشان بدزدد مرد دون ‌ ‌ ‌ تا بخواند بر سلیمی زان فسون

کار مردان راستی و گرمی است ‌ ‌ ‌ کار دونان حیله و بی شرمی است

آن شراب حق ختامش مشک ناب
باده را ختمش بود گند و عذاب

خشم و شهوت مرد را احول کند ‌ ‌ ‌ ز استقامت روح را مبدل کند

چون غرض آمد هنر پوشیده شد ‌ ‌ ‌ صد حجاب از دل بسوی دیده شد

چون دهد قاضی بدل رشوت قرار ‌ ‌ ‌ کی شناسد ظالم از مظلوم زار

صد هزاران دام و دانه است ای خدا ‌ ‌ ‌ ما چو مرغان حریص بی نوا

دمبدم پابستهٔ دام توایم ‌ ‌ ‌ هر یکی گر باز و سیمرغی شویم (باعتبار بلند پروازی)

میرهانی هر دمی ما را و باز ‌ ‌ ‌ سوی دامی میرویم ای بی نیاز

ما درین انبار گندم میکنیم ‌ ‌ ‌ گندم جمع آمده گم میکنیم

می نیندیشیم ما آخر بهوش ‌ ‌ ‌ کین خلل در گندم است از مکر موش

موش تا انبار ما حفره (سوراخ) زده است ‌ ‌ ‌ وز فنش انبار ما خالی شده است

اول ای جان دفع شر (برائی) موش کن ‌ ‌ ‌ وانگهان در جمع گندم جوش کن

करियै सदा सबकी सेवकाई । नाशहि अघ सत संगति पाई
सत संगति हि परम तप होई । मंगलमूल मोक्ष प्रद सोई
मंदहु बहु मुनि वेश बनावें । तिनके निकट सुजन नहिं जावें
बोलैं व्याधि खगन की बानी । पक्षी निज सहचारी जानी
अपनी सी बोली सुनि आवें । झट जड़ जंतु जाल फँसि जावें
चोरहिं शब्द मनीशन केरे । भोरे भक्त फँसहिं तिह फेरे
संतन संग प्रकाश बढ़ावे । राग रोष रुचि दुष्ट हटावे

मृगमद नैना खुलन ही कारन जगत प्रतिपाल
मदको घट खोलो जबहिं फाड़े गंध का पाल ॥

काम क्रोध मद अंध करावे । आत्मा स्थिर रहन न पावे
इच्छा निज अधिकार जमावे । अमित भावना मन पर लावे
न्यायाधीश घूँस ले जोई । दीनन हित कि विचारहि सोई
मायानें बहु जाल पसारे । हम बहु भूखे विहंग विचारे
कैसीहु हम निज शक्ति बढावें । तिन नये जाल माहिं फँसि जावें
यदपि नित्य तुम लेत बचाई । तदपि फसें पुनि जालहि जाई
बहुत अन्न संचय हम कीनो । ताको ढेर परन नहिं चीनो
अज्ञानी हम जानत नाहीं । मूषक कीन छिद्र तिह माहीं
निपट निठुर तिन लेत चुराई । अनशय अन्न न परत दिखाई
पुन प्रथम तुम नाहिं बिडारो । शोक कसमहि न तब पगधारो

بشنو از اخبار آن صدر صدور | لا صلوة تم الا بالحضور[1]
گر نه موشی دزد در انبار ماست | گندم اعمال صدساله کجاست
ریزه ریزه صدق هر روزه چرا | جمع می ناید درین انبار ما
بس ستاره آتش از آهن جهید | زان دل سوزیده پذرفت و کشید
لیک در ظلمت یکی دزدی نهان (انوار الهی / نفس) | می نهد انگشت بر استارگان (شراره)

میکشد استارگان را یک بیک
تا که نفروزد چراغی بر فلک

[1] با حضور قلب [illegible]

چون عنایاتت بود با ما مقیم | کی بود بیمی از آن دزد لئیم
گر هزاران دام باشد در قدم | چون تو با مایی نباشد هیچ غم
میرهند ارواح هر شب زین قفص | فارغان نی حاکم و محکوم کس
شب ز زندان بیخبر زندانیان | شب ز دولت بیخبر سلطانیان
نی غم و اندیشهٔ سود و زیان | نی خیال این فلان وان فلان
حال عارف این بود بیخواب هم | گفت ایزد هم رقود[1] زین مرم
خفته از احوال دنیا روز و شب | چون قلم در پنجهٔ تقلیب رب[2]
آنکه او پنجه نبیند در رقم | فعل پندارد ز جنبش از قلم
شمهٔ زین حال عارف وانمود | خلق را هم خواب حسی (حیاتی) در ربود
رفته در صحرای بیچون جانشان | روحشان آسوده و ابدانشان
فارغان از حرص و اکباب و حصص | مرغ وار از دام جسته در قفص
چون بسوی دام باز اندر شوند | داد جویان در پی داور شوند

[1] [illegible]
[2] [illegible]

सुत सनेह बिनु राम न रीझै । मन ही ताहि समर्पित कीजै
मूषक जो नहिं लेत चुराई । जीवन भर की कहां कमाई
जो सत्कर्म नित्य हम कीने । सो किम आज परत नहिं चीने
योग विचित्र प्रकाश बढावे । बहु श्रम कर जाको मन भावे
घुसो चोर इक अंतर माहीं । अहंकार तिह देत बुझाई

बिस फुलिंग उपजै बहुत करै चोर तिह नाश
दीखे नहि अज्ञान तम कैसे होइ प्रकाश

प्रभु प्रताप जो करहि सहाई । चोर हु करै सदा सिव काई
पग पग पे बहु बिघ्न हु घेरैं । तुमरी कृपा सकल निरवेरैं
मग्न सुषुप्ति सुख हिन जोई । राजा प्रजा न सुख दुख कोई
चोर हि कारागार न भासे । राज हि राज हु नाहि उजासे
लाभ अलाभ न भय दुख नाना । शत्रु मित्र जहां एक समाना
ऐसी हि दशा मुनिन कर होई । जाग्रत हू सुषुप्त सम सोई
छिन हू सो न जगत तन हेरे । शुष्क पत्र जिम मारुत प्रेरे
लेखक जिन्हें दृष्ट नहि आवे । लिखत लेखनी अस कहि गावे
मुनि निज सुख में मगन रहाहीं । जैसे जन सुषुप्ति के माहीं
उनकी लौ प्रभु चरणन लागी । आत्मिक शारीरिक सुख भागी
रागद्वेष ईर्षा जहां नाहीं । पद्म पत्र इव जिम जल माहीं
जब समाधि ते होइ उथाना । तब पुनि करैं ईश गुण गाना

چونکہ نور صبحدم سر بر زند — کرگس زرین گردان سر زند
ترک روز آخر چو بازرین سپر — ہندوے شب را بہ تیغ افگندہ سر

میل ہر جانے بسوے تن شود
ہر تنے از روح آبستن شود

اسپ جان را میکند عاری ز زین — سر النوم اخوت الموت است این (نیند موت کی بہن ہے)
لیک بہر آنکہ روز آیند باز — بر نہد بر پاے شان بند دراز
تا کہ روزش واکشد زان مرغزار — در چراگاہ آردش در زیر بار
کاش چون اصحاب کہف این روح را[۱] — حفظ کردے یا چو کشتی نوح را
تا ازین طوفان بیداری و ہوش — وارہیدے این ضمیر و چشم و گوش
اے بسا اصحاب کہف اندر جہان — پہلوے تو ہست اندرین زمان
غار با تو یار با تو در (عارفا) سرود — مہر بر چشم است و بر گوشت چہ سود

گفت لیلی را خلیفہ کان توئی
کز تو مجنون شد پریشان و غوی

از دگر خوبان تو افزون نیستی — گفت خامش چون تو مجنون نیستی
دیدہ مجنون اگر بودے ترا — ہر دو عالم بے خطر بودے ترا
با خودی تو لیک مجنون بیخود است — در طریق عشق بیداری بد است
ہر کہ بیدار است او در خواب تر — ہست بیداریش (دنیاوی سعادت)[۵] از خوابش بتر
چون بحق بیدار نبود جان ما — ہست بیداری (دنیاوی حالات سے) چو در زندان ما

[۱] ۳۰۰ سال تک اصحاب کہف کی حفاظت کی تھی [۵] خواب میں ہر قسم صفات سے محروم رہتا ہو مگر بیداری میں پہلے مشہور ہو [illegible]

हंस सुनहरी जब पग धारें
सहस किरन जब भानु पसारें
(सूर्य)
रजनीकान्त दृष्टि न आवे
ज्ञान भये जड़ता जिमि जावे

मानो जीवन के किये निसमें प्राण पयान
भोर हि ईश्वर कृपा से प्रविशे तन में प्रान

रहै न तनु जनु प्राण दुलारौ
नींद मृत्यु की भगिनि निहारौ
लांबी डोर बांध बन माहीं
छाड़ैं अश्व जहां तृण खाहीं
दिन में नाहिं पकर जिमि लावें
वोभकालादि आप चढ़ जावें
कुंभकरण सम इन्द्रिय दासा
सोवत रहैं लै जो छैः मासा
तौन जगत में द्वंद मचाते
(बचन)
मन बच्च कर्म न पाय कमाते
(गण)
ऋषि गण विचरत बहु जग माहीं
रहैं निमग्न सुषुप्त कि नाहीं
हिलें मिलें तुम में निस बासर
होंहि न तुमरे नयन उजागर

नृपति कह्यो अस निदरि कर लै लीहि माहिं निहार
विवरन तन मन मलिन अति लखहि न राजकुमार

तोते सुभग सुघर मम चेरी
क्यों ऐसी प्रिय मजनूं केरी
बोली वह न दृष्टि दृढ़ तोही
वह जिह दृष्टि विलोकन मोही
अहंकार सुन नृप तब जाना
मोमिन में न अहम मद माना
जगत जाल जिह की मति पागी
वह नहीं राम चरण अनुरागी
ईश्वर भय जो देति भुलाई
भाड़ परै ऐसी चतुराई

جان همه روز لگدکوب خیال	در زیان و سود در خوف زوال

امید نفع و نقصان

نے صفا میماندش نے لطف و فر

نے بسوئے آسمان راه سفر

عالم ملکوت

خفته آن باشد که او از هر خیال	دارد امید و کند با او مقال
نے چنان که از خیال آید بحال	آن خیالش گردد او را صد وبال
دیو را چون حور بیند او بخواب	پس ز شهوت ریزد او با دیو آب
چونکه تخم نسل را در شوره ریخت	او بخویش آمد خیال از وے گریخت
ضعف سر بیند از آن و تن پلید	آه از آن نقش پدید ناپدید
مرغ بر بالا پران و سایه‌اش	میدود بر خاک پران مرغ وش
ابلهے صیاد آن سایه شود	میدود چندانکه بے مایه شود
بے خبر کان عکس آن مرغ هواست	بے خبر که اصل آن سایه کجاست
تیر اندازد بسوئے سایه او	ترکشش خالی شود از جست و جو
ترکش عمرش تهی شد عمر رفت	از دویدن در شکار سایه تفت
سایه یزدان چو باشد دایه‌اش	وا رهاند از خیال و سایه‌اش
سایه یزدان بود بنده خدا	مرده این عالم و زنده خدا
دامن او گیر زوتر بے گمان	تا رهے از آفت آخر زمان
کیف مد الظل نقش اولیاست	کو دلیل نور خورشید خداست
اندرین وادی مرو بے این دلیل	لا احب الآفلین گو چون خلیل

(حاشیه: [illegible])

رو ز سایه آفتابے را بیاب

دامن شه شمس تبریزی بتاب

[illegible]

द्वंद फसौ चित छिन थिर नाहीं ॥ हान लाभ यश अपयश माहीं ॥

ज्यों मासे प्रतिबिंब तहां जहां न निर्मल नीर ।
विमुख मुक्ति पथ से भये व्याकुल चित्त अधीर ॥

जगत स्वप्नवत भाये ताके ॥ सब संकल्प ईश हित जाके ॥
सोयो मूढ़ स्वप्न चित लाई ॥ जागत ही पाछे ताल अघाई ॥
कल्पित अबला चित्त जिन धारी ॥ खलित बीर्य दुख पावत भारी ॥
उत्तर रत्न अमोलिक खोयो ॥ नारि अदृष्ट देख मन रोयो ॥
तन अपवित्र बढ़ी शिर पीरा ॥ गदगद कंठ नैन बहि नीरा ॥
उड़त सुपर्ण (पक्षी) एक नभ माहीं ॥ भूमि मांहि ताकी परछाहीं ॥
मूढ़ बधिक तिह मारत जाई ॥ यत्न करत कछु हाथ न आई ॥
नहिं जानत है खग की छाया ॥ कहां पक्षी जाकी यह माया ॥
छाया माहि सो तीर पंवारे (फेंका) ॥ छूछो तीरा चले हथ मारे ॥
श्वास तीर गये सब ही खाली ॥ तरकस (नरकप्र) डार चलो सब ख्याली ॥
श्री गुरु देव करहिं जो दाया ॥ छूटे तब यह झूंठी माया ॥
ईश भक्त जो होइ विदेही ॥ मरजीवा कोई राम सनेही ॥
ताको चरण शरण गहि लीजै ॥ जाते यह संसृत दुख छीजे ॥
छाया जिम सूरज हि लखावे ॥ तिम हरि भक्त ईश दरसावे ॥
सदगुरु सन्त को देत लखाई ॥ नाशवंत से कहा मिताई ॥

प्रति बिंबहिं (नकल छाया) कर पाइये बिंब (असल) विशोक विशाल ।
श्री गुरु पद रज पाइये त्यों गोविन्द गुपाल ॥

ما چو چنگیم و تو زخمه میزنی / زاری از ما نے تو زاری میکنی

ما چو نائیم و نوا در ما ز تست / ما چو کوهیم و صدا در ما ز تست

ما چو شطرنجیم اندر برد و مات / برد و مات ما ز تست اے خوش صفات

ما که باشیم اے تو ما را جان جان / تا که ما باشیم با تو درمیان

ما عدمهائیم و هستیهاے ما / تو وجود مطلقی فانی نما

ما همه شیران ولے شیر علم / حمله شان از باد باشد دمبدم

حمله شان پیداست ناپیداست باد / آنکه ناپیداست هرگز گم مباد

باد ما و بود ما از داد تست / هستی ما جمله از ایجاد تست

لذت هستی نمودی نیست را / عاشق خود کرده بودی نیست را

لذت انعام خود را وا مگیر / نقل و باده و جام خود را وا مگیر

ور بگیری کیست جست و جو کند / نقش با نقاش چون نیرو کند

منگر اندر ما مکن در ما نظر / اندر اکرام و سخاے خود نگر

ما نبودیم و تقاضا مان نبود / لطف تو ناگفتهٔ ما مے شنود

نقش باشد پیش نقاش و قلم / عاجز و بسته چو کودک در شکم

پیش قدرت خلق جمله بارگه / عاجزان چون پیش سوزن کارگه

گاه نقشش دیو و گه آدم کند / گاه نقشش شادی و گه غم کند

دست نے تا دست جنباند بدفع / نطق نے تا دم زند از ضر و نفع

گر بپرانیم تیر آن نے ز ماست / ما کمان و تیر اندازش خداست

वीणा सम हम मनुज घनेरे
बाजत तार तुमारेहि प्रेरे
नट कृत बंसी में स्वर होई
नर्तकि बश दुंदभि गति होई
जीतत हंसत रुदत जब हारे
हार जीत दोऊ हाथ तुमारे
प्राणनाथ हमरी गति कैसे
खल खद्योत तरणि तट जैसे
पटबीजना सूरज
असत माहि सत कर अभिमाना
सत चिन्मात्र प्रभाव समाना
हम सब ही जनु सिंह ध्वजा के
बल हित रहें मरुत रुख ता के
पवन न दीख परत परिहारा
पूरण पुरुष प्रभाव पसारा
प्राण अपान उदान उपाये
पंच भूत मय पुर उपजाये
यदपि भूतमय जगत पसारा
अंतः प्रेम ज्ञान उजियारा
निज पद भक्ति आप जो दीन्ही
प्रेम रु विरति न चाहिये लीनी
कर प्रक्षेप जो लेहु बहोरी
घट कुम्हार पर कौन कि जोरी
प्रभु दुर्गुण पर दृष्टि न दीजे
निज दयालुता परिचित कीजे
यदपि तासु हम नहिं अधिकारी
कीन कृपा निज ओर निहारी
मलिन अप्रति दीन हम कैसे
मिलन गर्भ में बालक जैसे

भुवनेश्वर भूपाल प्रभु भुवि दे लास भव जास
संसार
नट मरकट इव वश्य सब को कहि महिमा तास

सुर नर नाग असुर तन दाता
हर्ष अमर्ष शोक भ्रम भ्राता
दूसरों की विभूती देख मन में जलाहोना
कोऽसमर्थ जो हाथ हलावे
मूर्ख जो हठ कर गाल बजावे
पावन पुण्य जो हमसे होई
करुणा सिंधु करावत सोई

این نه جبر این معنی جباری ست / ذکر جباری برای زلدی ست
زلدی باشد دلیل اضطرار / خجلت باشد دلیل اختیار
گر نبودے اختیار این جبر چیست / وین دریغ و خجلت و ازرم چیست
زجر استادان بشاگردان چراست / خاطر از تدبیرها گردان چراست
ور تو گوی غافل ست از جبر او / ماه حق پنهان ست اندر ابر او
هست این را خوش جواب ار بشنوی / بگذری از کفر و بر دین بگروے
حسرت و زاری که در بیماری است / وقت بیماری همه بیداری است
آن زمان که مے شوی بیمار تو / میکنی از جرم استغفار تو
مے نماید بر تو زشتی گنه / میکنی نیت که باز آیم بره
عهد و پیمان میکنی که بعد ازین / جز که طاعت نبودم کار گزین
پس یقین گشت آنکه بیماری ترا / مے ببخشد هوش و بیداری ترا
پس بدان این اصل را ای اصل جو / هر کرا درد ست او بر دست بو

هر که او بیدارتر پر دردتر
هر که او آگاه تر رخ زردتر

گر ز جبرش آگهی زاریت کو / بینش زنجیر جباریت کو
بسته در زنجیر چون شادی کند / کے اسیر حبس آزادی کند
ور تو مے بینی که پایت بسته اند / بر تو سرهنگان شه بنشسته اند
پس تو سرهنگی مکن با عاجزان / زانکه نبود طبع و خوے عاجزان
چون تو جبر او نمی بینی مگو / ور همے بینی نشان دید کو

आर्द्र स्वभाव समर्थ गुसाईं   तिह पर चलै कि कछु बरियाई
कोमलचित्त
परवश भोग माहि नर होई   भोगत न नर देत क्यों रोई
जो स्वतंत्र कर्तव में नाहीं   लज्जा   व्रीड़ा किम आवत मन माहीं
नहिं उपदेश विवश पर कोई   पुरुषारथ पथ प्रेम कि होई
कहब प्रमाद प्रताप बढ़ाई   सत उपदेश न प्रगट दिखाई
उत्तर देहु जिह सुनि सुख पावहु   तजहु अधर्म धर्म मग आवहु
जब उपताप व्याधि तनु घेरे   तबहि कुटिलता रहत न नेरे
बीमारी   वक्रता
अंजलि जोर नयन बहि बारी   हाय नाथ कहि करत पुकारी
पापरूप जनु परत दिखाई   करत प्रलाप न तिह ढिग जाई
अब की जो दुखनिधि को तरऊं   भजन छोड़ कछु काज न करऊं
बीमारी
निश्चय रुज जब करत दुखारी   ज्ञान चक्षु को देत उघारी
तैसेही दर्द जो मन में आवे   उत्कंठा विनु हरि किम पावे

प्रेम प्रफुल्लित जासु मन प्रभु तहां करत प्रकाश
अधर सूख मुख पति अति जगते होत निराश

समरथ जान प्रणाय नहिं भावत   दीन बनत कस दुखिन सतावत
बन्धन
बंध्यो पाश को मंगल गावे   बधु आकब आकाश उड़ावे
जब सामर्थ ताहि कछु नाहीं   ईश्वर गरा दीखत चहुं घाहीं
अत्याहित दीनन पर कैसे   दीन स्वभाव होहि नहिं ऐसे
जुल्म
किधौं ताहि समरथ मत मानो   नाहिं तो मनहि दीनता आनो
ईश्वरको

१ यदि मनुष्य परवश है तो पुरुषार्थ और उपदेश निष्फल है

در هزاران کار یکسیل اشتبهان — قدر ستره خود را همچی بیتی عیسیان

در هزاران کار یکسان نیست و خاست — خویش را جبری کنی کاین از خداست

انبیا در کار عقبی جبری اند — کافران در کار عقبی جبری اند

انبیا را کار عقبی اختیار — کافران را کار دنیا اختیار

زانکه هر مرغی بسوی جنس خویش — میپرد او در پس و جان پیش پیش

کافران چون جنس سجین آمدند — سجن دنیا را خوش آیین آمدند

انبیا چون جنس علیین بدند — سوی علیین جان و دل شدند

چون خدا اندر نیاید در عیان — نایب حقند این پیغمبران

نی غلط گفتم که نایب با منوب — گر دو پنداری قبیح آید نه خوب

نی دو باشد تا توی صورت پرست — پیش او یک گشت کز صورت برست

چون بصورت بنگری چشمت دوست
تو بنورش درنگر کان یک تواست

لاجرم چون بر یکی افتد نظر — آن یکی بینی دو ناید در بصر

نور هر دو چشم نتوان فرق کرد — چونکه در نورش نظر انداخت مرد

ده چراغ ار حاضر آید در مکان — هر یکی باشد بصورت غیر آن

فرق نتوان کرد نور هر یکی — چون بنورش روی آری بیشکی

اطلب المعنی من الفرقان و قل — لا نفرق بین آحاد الرسل

در معانی قسمت و اعداد نیست — در معانی تجزیه و افراد نیست

اتحاد یار با یاران خوش است — پای معنی گیر صورت سرکش است

इष्ट पदारथ जो कछु पाओ । तिह में अपनी शक्ति जताओ
जो अनिष्ट अनुभव में आवे । तब ईश्वर के माहि बनावे
मुनि संतोष भोग में करही । परमारथ पथ बहु श्रम भरही
अहनिश दुष्ट भोग में लागे । मुक्ति माहि संतुष्ट अभागे
हंसन हंस काग में कागा । (नियमित) अनुमित संस्कार मन पागा
असुर श्रेय मारग चित लावें । रच प्रपंच तन पोखन धावें
दैवी (प्रवृत्ति) संपति जिह मन माही । श्रेय मार्ग में ते नर जाहीं
ब्रह्म अरूप अगुण गुणकारी । गुरु (प्रवृत्ति) ब्रह्मरूप देव अघहारी
गुरु ईश्वर दोउ एक समाना । कनक कटक कहिये किम नाना
मोर तोर में चित्त रहावे । सर्वातम क्यों कर दरसावे

अंतर मुख हुइ देखिये जबहि होइ भ्रम नाश ।
नेत्र कल्पना मात्र युग होइ न एक प्रकाश ॥

(दोनों) दृष्टा उभय नेत्र कर देखे । दृश्य पदारथ एकहि पेखे
युगल मध्य कछु भेद न पावे । हुइ पराङ्मुख जबहि लखावे
मन्दिर मध्य दीप दश बारे । तिनके (अन्तरमुख) विविध स्वरूप निहारे
संज्ञा माहि दृष्टि जब आवे । ज्योति अनेक तहां नाहि पावे
ऋषिगण सब ही होहि समाना । सहमत सब श्रुति शास्त्र पुराना
आत्मा माहि विभाग न होई । अंतर नाहि सामिष्ट में कोई
मिल सह धर्म सुखेन रहाई । (एकता) भेद अनातम पर्यत लखाई (गई)

صورت سرکش گدازان کن برنج — تا ببینی زیر او وحدت چو گنج
ور تو نگدازی عنایتهای او — خود گدازد ای دلم مولای او
او نماید هم بدلها خویش را — او بدوزد خرقهٔ درویش را
منبسط بودیم و یک جوهر همه — بی سر و بی پا بدیم آن سر همه
یک گهر بودیم همچون آفتاب — بی گره بودیم و صافی همچو آب
چون بصورت آمد آن نور سره — شد عدد چون سایه‌های کنگره
کنگره ویران کنید از منجنیق — تا رود فرق از میان این فریق
لیک تا چون تیغ پولادست تیز — گر نداری تو سپر واپس گریز

پیش این الماس بی اسپر میا — کز بریدن تیغ را نبود حیا

کشتن و مردن که بر نقش تن است — چون انار و جوز را بشکستن است
جوزها بشکست وان کو مغز داشت — بعد کشتن روح پاک و نغز داشت
آنچه شیرینست او شد یار دانگ — وانکه پوسیدست نبود غیر بانگ
آنچه با معنیست خوش پیدا شود — وانچه بی معنیست او رسوا شود
رو بمعنی کوش ای صورت پرست — زانکه معنی بر تن صورت پرست
همنشین اهل معنی باش تا — هم عطا یابی و هم باشی فتا
جان بی معنی درین تن بی خلاف — هست همچون تیغ چوبین در غلاف
تا غلاف اندر بود با قیمتست — چون برون شد سوختن را آلتست
تیغ چوبین را مبر در کارزار — بنگر اول تا نگردد کار زار

त्याग अनातम बंधनकारी । आत्मनिधि पावहु सुखकारी
भय दुस्साध्य मानि जिन आनो । प्रेमहि सानुकूल प्रभु मानो
(दुर्लभ)
स्वयं प्रकाश तुम पर प्यारो । विगरी केर बनावन हारो
हम स्वतंत्र व्यापक सब ठाईं । इन्द्रिय तन बंधन जहां नाहीं
ज्ञानरूप अविचल अविकारी । रहे स्वच्छ जिम निर्मल वारी (जल)
एकोहं बहु स्याम बखाना । दृश्य स्वभाव भये पुनि नाना
चिद्घन माहिं जो दृश्य समावे । पुनि यह भेद निकट नहिं आवे
तीक्षण ज्ञान कृपाण समाना । सन्मुख आव कि कोउ अज्ञाना

चर्म[1] ज्ञान संतोष धनु[2] ध्यान त्रोण[3] शम[4] तीर
कवच साम[5] मन अश्व चढ़ समर[6] चढ़े कोइ वीर

पंच भूतमय तन विनशाई । अजर अमर आतम श्रुति गाई
धर्म हेत जो तनु परिहरहीं । सुरपुर धाम वास ते करहीं
भोगें स्वर्ग जगत यश पावें । नीच अयश ले जमपुर जावें
योग भ्रष्ट लहें शुभग शरीरा । ईश विमुख सहें तिर्यक पीरा
ज्ञानहीन तन पर शस्त्र सोहें । मुक्ताफल बिन शुक्ति न सोहें
संतन केर सुसंगति कीजे । बढ़े धर्म बल पातक छीजे
प्रबुध न शुभ तनु पाइ सुहाहीं । काष्ठ कृपाण मेखला माहीं
ध्यान माहिं भय मानत लोगू । प्रगटत होइ जरावन योगू
खड्ग हीन मत रण में जाओ । काहे कुलहि कलंक लगाओ

१ ढाल २ धनुष ३ तरकश ४ मनकोनिग्रह ५ समता ६ लड़ाई

گر بود چوبین برو دیگر طلب ‌ ‌ ور بود الماس پیش آ با طرب
تیغ در زرادخانهٔ اولیاست ‌ ‌ دیدن ایشان شمار کیمیاست
یک زمانے صحبت با اولیا ‌ ‌ بهتر از صد ساله طاعت بے ریا
گر تو سنگ خاره و مرمر شوی ‌ ‌ چون بصاحبدل رسی گوهر شوی
مهر پاکان درمیان جان نشان ‌ ‌ دل مده الا به مهر دلخوشان
کوے نومیدی مرو کامیدهاست ‌ ‌ سوے تاریکی مرو خورشیدهاست

دل ترا در کوے اهل دل کشد
تن ترا در حبس آب و گل کشد

صحبت صالح ترا صالح کند ‌ ‌ صحبت طالح ترا طالح کند
صحبت صالح ترا صالح کند ‌ ‌ صحبت طالح ترا طالح کند
هر که او بنهاد ناخوش سنتے ‌ ‌ سوے او نفرین رود هر ساعتے
زانکه هر چه او کند زان گون ستم ‌ ‌ زاولین جو بد خداے بیش و کم
نیکوان رفتند و سنتها بماند ‌ ‌ وز لئیمان ظلم و لعنتها بماند
تا قیامت هر که جنس آن بدان ‌ ‌ در وجود آید بود رویش بدان
رگ رگست این آب شیرین آب شور ‌ ‌ در خلایق میرود تا نفخ صور
شد نیاز طالبان ار بنگری ‌ ‌ شعلها از گوهر پیغمبری
نور روزن گرد خانه میدود ‌ ‌ زانکه خور برجے به برجے میرود
شعلها با گوهران گردان بود ‌ ‌ شعله آنجا نب رود هم کان بود
هر کرا با اخترے پیوستگی ست ‌ ‌ مر ورا با اختر خود همتگی ست
طالعش گر زهره باشد با طرب ‌ ‌ میل کلی دارد و عشق و طلب

ज्ञान कृपाण लेहु कर माहीं । श्रद्धा बाड़ धरावहु ताहीं
वह कृपाण संतन ढिंग पावे । कामादिक दल जासु नसावे
सराहु मात्र संत सत संगा । करत कोट दारुण ५ दुख भंगा
संग पाइ शठ सज्जन होई । नीम मलय मिल चंदन सोई
करहु प्रेम जिमि चंद चकोरा । आरा समान करहिं हित तोरा
कृश तनु लखि ६ जिन करहु गलानी । जानहु तेज पुंज सुख खानी

प्रेम प्रकाशै प्रबल जब पातक पुंज नसाइ
तन की तृष्णा नन्द ७ काहू जड़ता तिमिर बढ़ाइ

लोह कनक पारस संग होई । क्षीर सर्प मुख बिष गत सोई
साधु संग तोहि साधु बनावे । नीच मीच पथ में ले जावे
जिन तज वेद कुपंथ चलाये । धूर्त जिन मोरे जीव भुलाये
कायर कुटिल कर्म अनुरागी । नेता होहि पाप को भागी
हरिजन जश भाजन जग माहीं । मृतक अघायु जियत जग माहीं
पापकर्मी
करहिं कुकर्म चलहिं विपरीते । अशुभ भरे शुभ मारग रीते
संत असंत दोष गुण दोऊ । जग में रहै मरौ पच कोऊ
आर्य सदा आर्जव अनुरागे । नम्र नीति निर्मद रस पागे
धर्मात्मा नम्रता मानरहित
छिद्र प्रकाश सदन के माहीं । जित २ सूर्य फिरै फिर जाहीं
(प्रा)नदान का प्रकाश.... घर
प्रकृति बशात चलैं नर कैसे । शुष्क पत्र मारुत गत जैसे
वेद पुराण संत अस कहहीं । संस्कार बश नर सब अहहीं
होहिं सुकर्म प्रबल जिन केरे । चलै प्रेम मग तिन के प्रेरे

ور بود مریخی خونریز جو	جنگ و بہتان و خصومت جوید او
اختر انند از ورائے اختران	کاحتراق و نحس نبود اندران
سایران در آسمان ہائے دگر	غیر این ہفت آسمان مشتہر
راسخان در تاب انوار خدا	نے بہم پیوستہ نے از ہم جدا
ہر کہ باشد طالع او زان نجوم	نفس او کفار سوزد در رجوم
خشم مریخی نباشد خشم او	منقلب رو غالب و مغلوب جو
نور غالب ایمن از کسف و غسق	در میان اصبعین نور حق
حق فشاندان نور را بر جانہا	مقبلان برداشتہ داماںہا
وان نثار نور را او یافتہ	روئے از غیر خدا بر تافتہ
ہر کرا دامان عشقے نابدہ	زان نثار نور بے بہرہ شدہ
جزوہا را رویہا سوئے کل ست	بلبلان را عشق با روئے گل ست
گاو را رنگ از برون و مرد را	از درون جو رنگ سرخ و زرد را
رنگہائے نیک از خم صفاست	رنگ زشتان از سیاہ آبہ جفاست
صبغۃ اللہ نام آن رنگ لطیف	لعنۃ اللہ بوئے این رنگ کثیف
آنچہ از دریا بدریا میرسد	از ہمانجا کامد آنجا میرود
از سر کہ سیلہائے تیز رو	در تن ما جان عشق آمیز رو
مادر بتہا بت نفس شماست	زانکہ آن بت مار این بت اژدہاست
آہن و سنگ است نفس و بت شرار	ان شرار از آب بے گیرد قرار

[illegible]

मलिन कर्म बश जे जग आये । वैर विरोध विकार बढ़ाये
रवि शशि सरस संत जगमाहीं । होहिं न अस्त उदित सब पाहीं
नहिं न संत इह गगन बिहारी । अघदित नभ घट के संचारी

अभय अशंक अमल रहे पाइ अखंड प्रकाश
योग वियोग न संभवे जहां शोक भ्रम नाश

निशा तम हटे जो भानु प्रकासे । घोर अविद्या संत बिनासे
क्रोध हु कर न संत अति पालहिं । बल कर निर्बल हु इम चालें
तप प्रताप माया न कमाहीं । रहैं सदा प्रभु आज्ञा माहीं
भूलि न मर्यादा पर लावहिं । सुकृति सेवहिं शुभ गति पावहिं
ज्ञान पाइ लहि जीवन लाहू । पर अज्ञ तजि न बहि न काहू
प्रेम हीन नर निकट न जाहीं । जिम उलूक दिनकर के माहीं
जो मन बसे सो ताहि सराहे । चकित चकोर चन्द्र जिम चाहे
लघुमत[१] बाल कलेवर देखहिं । तनु परिहर मुनि मन मत पेखहिं
आर्जव[२] शांति शौच तप धारी । संत धन्य शुभ गुण अधिकारी
हिंसा दम्भ मान मद मांड़े । धृग असंत जिन सत पथ छांड़े
वारिधि[३] माहि तरंगिणी[४] जाहीं । जहां से उपजे तहां समाहीं
श्रद्धा शैल स्रवत[५] शुचि धारा । प्रेम रहे जिम प्रभु ते न्यारा
मम अज्ञान तें जीव भरमाये । जहां जन्म दुख जिन उपजाये
शिल्पी[६] जिम बहु पुतरी ढारे । शिल्पी मरे न पुतरिन मारे

१ तुच्छ बुद्धि वाले २ नम्रता ३ समुद्र ४ नदी ५ श्रद्धा रूप पर्वत से निकलने वाला ६ कारीगर

سنگ و آہن ز آب کے ساکن شود
آدمی با این دو کے ایمن شود

سنگ و آہن در درون دارند نار
ز آب چون نار برون گشتہ شود
ہست سیاہ آبیست در کوزہ نہان
ہست درون کوزہ چون آب کدر
سنگ و آہن چشمہ نار دود
آب ہست منحوت چون سیل سیاہ
صد سبو را بشاند یکپارہ سنگ
آب خم و کوزہ گر فانی شود
ہست شکستن سہل باشد نیک سہل
صورت نفس ار بجوی اے پسر
ہر نفس مکرے و در ہر مکر شان
در خدا اے موسی و موسے گریز
دست را اندر احد احمد بزن
چون خدا کہ پردہ کس درد
ور خدا خواہد کہ پوشد عیب کس

آب را بر نار شان نبود گذار
در درون سنگ و آہن کے رود
نفس ہر آب سیہ را چشمہ دان
نفس شوم ست چشمہ ان اے مصر
قطرہا شان کفر و ترسا و جہود
نفس بت گر چشمہ بر شاہ راہ
و آب چشمہ میز ہاند شستہ و زنگ
آب چشمہ تا آبد باقی بود
سہل دیدن نفس را جہل ست جہل
قصہ دوزخ بخوان با ہفت در
غرق صد فرعون با فرعونیان
آب ایمان را ز فرعونی مریز
اے برادر وا رہ از بوجہل تن
میلش اندر طعنہ پاکان برد
کم زند در عیب معیوبان نفس

چون خدا خواہد کہ مان یاری کند
میل ما را جانب زاری کند

मन चकमक संकल्प सर अगणित देवत नाग
जलकर नाग बुझाइये बुझे न चकमक आग

पावक पाहन बीच रहाही वारि प्रवाह न नाहि बुझाई
प्रगट अनल को नीर बुझावे जो पाहन गत नाहि न पावे
(अग्नि)
चतुरन्हि नीरो न्हित है एकू पंथ चित्र जिन रचे अनेकू
वारिध मन जहां वारि बिलासू देव अनेक नीर घट जासू
मनहि समुद्र वारि की खानी देव कलश जिम गादर पानी
वारिध चित्त थाह जहां नाहीं देव मलिन जल जिम घट माहीं
पाहन शत घट सकहि विदारी मन सहस्र तहां लेन समारी
ने:र पात्र यदि निर्गत होई सकहि समुद्र शोष कस कोई
फेरु चलाइ सकै वरु कोई मन बस करन सहज नाहि होई
मन बैनर राशि माहि घुमावे रौर बनके मनहि ले जावे
छिन छिन दम्भ अनेकन धारे पुएय पुंज छिन माहि उजारे
ईश्वर गुरु शरणागत जाई तजहु मित्र मन की सेवकाई
समित्पाणि सद्गुरु पै जाओ [1] शम बिराग युत योग कमाओ
(समिधा हाथ में लेकर)
कुपित ईश जिह पर है जावे संतन मांहि कलंक लगावे
(क्रुद्ध) (दोष)
ईश्वर कृपा जाहि पर होई अवरन छिद्र दुरावे सोई

विधि सुदृष्टि जिह पर भई दंभ दोष निर्वार
देव बुद्धि सोई दास बन रहै दीनता धार

[1] अहिंसादि दश गुणों का त्याग

ای خنک چشمی که آن گریان اوست / وی همایون دل که آن بریان اوست

آخر هر گریه آخر خنده ایست / مرد آخربین مبارک بنده ایست

هر کجا آب روان سبزه بود / هر کجا اشک دوان رحمت بود

باش چون دولاب نالان چشم تر / تا ز صحن جانت بر روید خضر (میدان)

رحم خواهی رحم کن بر اشک بار / لطف خواهی بر ضعیفان رحمت آر

آتش طبعت اگر غمگین کند / سوزش از امر ملیک دین کند

آتش طبعت اگر شادی دهد / اندرو شادی ملیک دین نهد

چونکه غم بینی تو استغفار کن / غم بامر خالق آمد کار کن

چون بخواهد عین غم شادی شود / عین بند پای آزادی شود

باد و خاک و آب و آتش بنده اند / با من و تو مرده با حق زنده اند

پیش حق آتش همیشه در قیام / همچو عاشق روز و شب پیچان مدام

سنگ بر آهن زنی آتش جهد / هم بامر حق قدم بیرون نهد

آهن و سنگ از ستم بیرون مزن / کاین دو می زایند همچون مرد و زن

سنگ و آهن خود سبب آمد ولیک / تو ببالا بر نگر ای مرد نیک

کاین سبب را آن سبب آورد پیش / بی سبب کی شد سبب هرگز ز خویش

وان سببها کانبیا را رهبر است / آن سببها زین سببها برتر است

کاین سبب را آن سبب عامل کند / باز گاهی بی بر و عاطل (بیکار) کند

این سبب را محرم آمد عقلها (ظاهری)
وان سببها راست محرم انبیا (باطنی)

धन्य सो दृग जिह बसत विधाता
प्रेम अश्रु जिह नेत्र बहावें
(आंसू)
जलतट उगैं हरित तृण नाना
पुलकित गात नयन बहे नीरा
जो चाहत भव बंधन टारौ
दारुण दुःख हृदय जब आवे
सुख सरिता जो मनहि बहाई
पश्चाताप करहु दुख पाई
ईश्वर हित दुख हू सुख लावे
पंच भूत प्रभु आज्ञा पालहिं
अग्नि अज्ञ अनुचारि प्रभु केरी
(जड़ सेवक)
पावक पाहन माहि रहाई
अतुल अनील अनल अघकारि
लोह पखान कृशानु उपाई
शक्ति[2] पदारथ माहि दिखावे
तिह पर दृष्टि ऋषिन कर होई
प्रेरक शक्ति मान सब केरो

धन्य सो मन जो प्रभु रंग राता
निश्चय प्रभु दर्शन तिह पावें
प्रेम नीर तट उपजे ज्ञाना
नहीं फिर रह भव सम्भव पीरा
दीनन देखि दया बिस्तारौ
विन ईश्वर को ताहि पठावे
अपर ईश अंबुध ते आई
तजहु कर्म[1] जिन कुशल नसाई
बूडे प्रेम पयोध तिरावे
नाथ का नियम तनक नहिं टालहिं
अग जग ईश रु खहिं रहे हेरी
(जड़ चैतन्य)
प्रभु पाहि चान सकहि न जराई
जन्म जरा जननी यश हारी
शुभ तहां प्रभु की चतुराई
कुशल शक्ति मत को दरसावे
माया माहि जीव रहे सोई
कबहु न्यून पुनि करहि घनेरो

मनुज मोह माया ग्रसे निज मति मांहि भुलान
ऋषि मायिन मग में मगन माया मरु जल जान
(मायिन = मायाकीपति; मरु = ऊसर)

१ प्रेमसमुद्र में जो डूबता है वह तर जाता है २ शक्ति को देख शक्तिमान को जान सकते हैं

گردش چرخ این سبب را علت است — چرخه گردان ندیدن ذلت است

این سبها سببهای جهان — هان وهان زین چرخ سرگردان مدان

تا بمانی صفر و سرگردان چو چرخ — تا نسوزی تو ز بیمغزی چو چرخ (سوختہ)

باد آتش میشود از امر حق — هر دو سرمست آمدند از خمر حق (نشہ معرفت)

آب حلم و آتش خشم ای پسر — هم ز حق بینی چو بگشائی نظر

همچنین شیبان راعی میکشید — گرد بر گرد رمه خطی پدید (نام، چرواہا، ظاہری خط)

چون بجمعه می شد او بهر نماز — تا نیارد گرگ آنجا ترکتاز

هیچ گرگی در نیامد در میان — گوسفندی هم نگشتی زان نشان

باد حرص گرگ ٥١ و حرص گوسپند — دایره مرد خدا را بود بند

همچنین باد اجل با عارفان — نرم و خوش همچون نسیم گلستان

آتش ابراهیم را دندان نزد — چون گزیده حق بود چونش گزد

ز آتش شهوت نسوزد مرد دین — باقیان را برده تا قعر زمین

هست ٥٢ تسبیحت بجای آب و گل — مرغ جنت شد ز نفخ صدق دل

از دهانت چون برآید حمد حق — مرغ جنت سازدش رب الفلق (صبح صادق)

آنکه او بوده است امه هاویه (عدو اللہ)

هاویه آمد مر او را زاویه

(جسکا رحم مادر دوزخ ہو وہ ہاویہ یعنی دوزخ میں ہی رہیگا)

مادر فرزند جویان وی است — اصلها مر فرعها را در پی است

اب ٥٣ ها در حوض گر زندانی است — نشفش میکند کارکانی ست (ہوا، سکھاتی ہے)

٥١ بھیڑیے اور بکری دونوں کی حرص مرد خدا کی دایرہ مین بند تھی ٥٢ تسبیح سے یا ذکر سے تو بہشت کی چڑیا بن جائیگا۔

रवि शशि स्वयं गगन नहिं जारे	सो जो वाहि जो इन्है भ्रमावे
ईति भीति (त्रास) नीतज्ञ कृपाला	मेरा न तु रवि शशि गृह काला
गहन (गहरा) अज्ञान गर्त (गढ़ा) क्यों गिरिये	चिंता ज्वाल वृथा क्यों जरिये
अनिल (पवन) अनल (आग) अनुचर प्रभु केरे	राम रजाइ रहें रुख हेरे
धृत जल कोष अनल तन माहीं	समता सहित सुखेन सदाहीं (सदैव)
अजा (बकरी) वृन्द मुनि एक चरावे	संतन संध्या करन सिधावे
रेखा कादि सुरक्षित राखे	वृक (भेड़िया) बराह कोइ नाहिन नाखे
वृक न तासु मध्य कोइ जाहीं	अजा मेष लांघें नहिं ताहीं
इन्द्रिय अजा विषय वृक (भेड़िया) होई	नियम रेख मुनि राखें गोई
मृत्यु वासु नाहिं तिन नाहिं संतावे	त्रिविधि समीर समान सिरावे
प्रल्हादहि नहिं अनल जरायो	भद्र भक्त प्रभु के मन भायो
विषय कृशानु न मुनि मन जारे	नीचन मीच मार्ग में डारे
जपन नाम मारी की सेना	विनु श्रद्धा शुचि होइ कि बैना
शास्त्र विहित श्रद्धा जब आवे	जपत नाम निरुपम पद पावे

असुर अबुध अभिमान युत नहिं प्रभु न को इष्ट
निश्रेयस[2] से मरा[1] ते विमुख परे नर्क भये भ्रष्ट

(आसुरी संपत्ति वाले नर्काधिकारी होते)

प्रकृति प्रभाव प्रबल जग माहीं	शाखा मूल गुरानि पर जाहीं
वाष्प (भाप) रूप जल गगन उड़ाई	शोषे पवन न परत लखाई

१ परलोक २ मुक्ति

ईति अति वृष्टि अनावृष्टि मूसों से हानि टीढ़ी सुआ राजाओं का बैर मदेस वास

می‌رهاند می‌برد تا معدنش　　اندک اندک تا نبینی بردنش

وین نفس جانهای ما را همچنان　　اندک اندک دزدد از حبس جهان

چشم هر قومی بسویی مانده است　　کان طرف یکروز ذوقی رانده است

ذوق جنس از جنس خود باشد یقین　　ذوق جزو از کل خود باشد ببین

یا مگر آن قابل جنسی بود　　چون بدو پیوست جنس او شود

همچو آب و نان که جنس ما نبود　　گشت جنس ما و اندر ما فزود

نقش جنسیت ندارد آب و نان　　ز اعتبار آخر آن را جنس دان

ور ز غیر جنس باشد ذوق ما　　آن مگر مانند باشد ذوق را

(اگر کہ کو غیر جنس سے دلچسپی ہو)

آنکه مانندست باشد عاریت　　عاریت باقی نماند عاقبت

مرغ را اگر ذوق آید از صفیر　　چونکه جنس خود نیابد شد نفیر

(سیٹی)

تشنه را اگر ذوق آید از سراب　　چون رسد در وی گریزد جوید آب

مفلسان گر خوش شوند از زر قلب　　لیک آن رسوا شود در دار ضرب

(کھوٹا روپیہ)　　(ٹکسال)

تا زر اندودیت از ره نفگند
تا خیال کژ ترا چه نفگند

طایفهٔ نخچیر در وادی خوش　　بودشان از شیر دایم کشمکش

بسکه آن شیر از کمین در می‌ربود　　آن چرا بر جمله ناخوش گشته بود

(جنگل)

حیله کردند آمدند ایشان بشیر　　کز وظیفه ما ترا داریم سیر

جز وظیفه در پی صیدی میا　　تا نگردد تلخ بر ما این گیا

گفت آری گر وفا بینم نه مکر　　مکرها بس دیده‌ام از زید و بکر

अपनेहिकारण माहि मिलावे	दुर्गम गति कछु दृष्ट न आवे
प्राण पवन जीवन जल चोरे	जन्ममरण वारिद में बोरे
	समुद्र
फस्यो जीव कर्मन के पाश	तह्मं ले जाइ जहां जिह आश
गुणि माहिं गुण ग्राम सिधावे	कारज कारण कोष रहावे
गुण स्वभाव समता जहां होई	सहगुण समरू समावे सोई
अन्नोदक अज आत्म न भावे	अन्न कोष मिल मोद बढावे
जल	शरीर
चेतन पुरुष अन्न जड होई	तासु अधार जानि रुचि होई
प्रकृति रूप प्रिय पुरुषहि लागे	संस्कार बश संग न त्यागे
स्वाभाविक सुठ सत्य सदाई	नैमित्तिक गुण चिरन रहाई
सुनि सगोत्र वाणी खग आवे	व्याधि बैन सुनि तुरत उडावे
	शिकारी
तृषित मरुहि लखितोष बढावे	पाइ प्रपंच फेर पछितावे
प्यासा ऊसर	
दीन झोल ले हृादक जाने	उघरहिं अंत अगिन में आने
दुखी मुलम्मा सोना	

प्रकृति प्रपंचहि परत नर पेखत रूप अपार

तुच्छ शशा जिम सिंह को पटक्यो कूप मझार

बन इक बसत बहुत बनचारी	आयो तहां केहर भयकारी
पान लगाइ पशुन ले जावे	ताते बहुबन उन्हें न भावे
मृगगण मिल यह मतो बनायो	भेजें भोग तुमें मन भायो
घर ही घनो भोग जब पायो	कर कुचाल क्यों कष्ट बढायो
बोल्यो सत्य सुकृत जो कीने	धूर्तन हम धोखे बहु दीने

نفس ہر دم از درونم در کمین
مقولا مولانا

از ہمہ مردم بتر در مکر و کین

جملہ گفتند اے امیر با خبر

الحذر دع لیس یغنی عن قدر
یہ پرہیز کرے قضا و قدر سے بے پروا نہیں ہوسکتا

ظ

در حذر شوریدن از شور و شر است

رو توکل کن توکل بہتر است

با قضا پنجہ مزن اے تند و تیز

تا نگیرد ہم قضا با تو ستیز

حکم الٰہی سے مت گرد

مردہ باید بود پیش امر حق

تا نیاید زخم از رب الفلق

[illegible]

گفت آرے گر توکل بہتر است

این سبب ہم سنت پیغمبر است

گفت پیغمبر باواز بلند

با توکل زانوئے اشتر بہ بند

رمز الکاسب حبیب اللہ شنو
حلال کی کمائی کرنیوالا حبیب اللہ ہوتا ہے

از توکل در سبب غافل مشو

در توکل جہد و کسب اولی تر است

تا حبیب حق شوی این بہتر است

رو توکل کن تو با کسب اے عمو

جہد میکن کسب میکن مو بمو

جہد کن جہدے نما تا وا رہی

ور تو از جہدش بمانی ابلہی

ترجیح نخچیران توکل را بر جہد

قوم گفتندش سبب از ضعف خلق

لقمہ تزویر دان بر قدر حلق

پس بدان کہ کسبہا از ضعفہاست

در توکل تکیہ بر غیرے خطاست

نیست کسبے از توکل خوب تر

چیست از تسلیم خود محبوب تر

پس گریزند از بلا سوئے بلا

پس جہند از مار سوئے اژدہا

حیلہ کرد ایشان و حیلہ اش دام بود

آنکہ جان پنداشت خون آشام بود

در ببست و دشمن اندر خانہ بود

حیلۂ فرعون زین افسانہ بود

तैसे हि मन मानस मठ माहीं। मुदित मंद मति जानत नाहीं॥
बोले मृग जोरे दोऊ हाथा। भूर भाग भूप तुमरे साथा॥
भूप
वृथा कलाप करिये किम नाना। सुख संतोष समान न आना॥
यदि हम भीरु त्रिसित तुम पाहीं। कठिन कृपाण काल कर माहीं॥
डरपोक तलवार
वेद अवज्ञा भोजन करहीं। दारुण दुख दावानल जरहीं॥
बोलो सिंह सहज संतोषा। पुरुषारथहु विदित नहिं दोषा॥
भुजा उठाइ कही श्रुति बानी। बिन प्रयत्न संतोषहि हानी॥
पुरुषार्थ
पुरुषारथी पुरुष प्रभु प्यारे। कहा संतोष प्रयत्न निबारे॥

सत पथ श्रम संतोष गहि प्रबल पराक्रम धार।
वर्य विशद वर पाइये विटप विपत्ति विदार॥

उत्तम
पुन प्रथम पुरुषारथ कीजे। सत संतोष संग लै लीजे॥
पुरुषारथ पथ तजहिं अभागे। संकट सहें संतोषहिं लागे॥

मृग गरणो बाच संतोष मुख्य है

मुनिन नरन जब निर्बल चीनो। पुरुषारथ कहि साहस दीनो॥
तज संतोष पोच श्रम करही। संत सदा संतोषहि धरही॥
संतोषहि अनुपम धन होई। तजें ताहि जिह कुमति बिगोई॥
तज संतोष अमित का दरही। मूषक तजि विषधर आदरही॥
अस जग को जिह सुखन सुहावे। तजि संतोष न सुख नर पावे॥
कंस कुकर्म अनेकन कीने। कीनिकर किल कलंक न लीने॥

صد هزاران طفل گشت آن کینه‌کش — وانکه او مهجست اندر خانه‌اش

دیدهٔ ما چون بسی علت دروست — رو فنا کن دید خود در دید دوست

دید ما را دید او نعم العوض — یابی اندر دید او کلی غرض

طفل تا گیرا و تا پویا نبود — مرکبش جز گردن بابا نبود

چون فضولی گرد و دست و پا نمود — در عنا (سختی) افتاد و در کور و کبود

جانهای خلق پیش از دست و پا — می‌پریدند از وفا سوی صفا (تردد و مشقت)

چون بامر اهبطوا بندی شدند
حبس خشم و حرص و خورسندی شدند

با عیال حضرتیم و شیرخواه — گفت الخلق عیال للاله

آنکه او از آسمان باران دهد — هم تواند کو ز رحمت نان دهد

ترجیح نهادن شیر جهد را بر توکل

گفت شیر آری ولی رب العباد — نردبانی پیش پای ما نهاد

پایه پایه رفت باید سوی بام — هست جبری بودن اینجا طمع خام

پای داری چون کنی خود را تو لنگ — دست داری چون کنی پنهان تو چنگ

خواجه چون بیلی بدست بنده داد — بی زبان معلوم شد او را مراد

دست همچون بیل (بھاوڑہ) اشارتهای اوست — آخر اندیشی عبارتهای اوست

چون اشارتهاش را بر جان نهی — در وفای آن اشارت جان دهی

پس اشارتهاش اسرارت دهد — بار بردارد ز تو کارت دهد

حاملی محمول گرداند ترا — قابلی (قابلیت) مقبول گرداند ترا

बधे बहु नवसुदेव दुलारे । तदपि मरे नहि मारन हारे ॥
चिन चाहे न होहि उपचारू । राखि ईश सेवा पर भारू ॥
नारायण निराश नहि फेरहिं । हरे होहि जिह हरि पर हेरहिं ॥
जब लग शिशु निज बल नहि नाखे । पय पूतर सम तिहि पितु राखे ॥
तरुण भये तनु तेज बढायो । भ्रम वश भुवन भोग मन भायो ॥
भये न हम जब लग तनु धारी । रहे अमल अविचल अविकारी ॥

तन नौका चढ़ि जब चले जगत तरंगिण माहिं ।
मान मन्यु मद भमर में माया मरुत भ्रमाहिं ॥

जिम शिशु (बालक) क्षीर मिले बिनु मांगे । तिम संतोष करिय प्रभु आगे ॥
जो जल दै जड़ चेतन पालहि । भजिय दंभ तजि दीनदयालहि ॥

सिंह उवाच पुरुषार्थ ही मुख्य है

बोलो सिंह सत्य तुम भाखो । स्वामि सबहि साधन दे राखो ॥
साधन दे समरथ प्रभु कीना । दुर्गति धारि रहिय किम दीना ॥
पग दोउ पाइ पंगु किम रहिये । होते हस्त हि हर हर रहिये ॥
स्वामि वासो सेवक कर दीनी । बिनु कहे युक्ति परत सब चीनी ॥
कर पद नयन श्रवण मुख दीने । मन बुधि चित हित मारग नवीने ॥
समझ सैन सम्मति (सभी) प्रीति पालहु । परिहरि मारग न आज्ञा टालहु ॥
मुनिवर पुरुषारथ श्रम करही । अनुभव मार्ग मोद मन भरही ॥
आज्ञा पाले अमर होइ जावे । सो मुनि माधव के मन भावे ॥

قابل امر وی قابل شوی | وصل جوی بعد از آن واصل شوی

سعی شکر نعمت قدرت بود | جبر تو انکار آن نعمت بود

شکر نعمت نعمتت افزون کند | کفر نعمت از کفت بیرون کند

۹۰ جبر تو خفتن بود در ره مخسپ | تا نه بینی آن در و درگه مخسپ

هان مخسپ ای کاهل بی اعتبار | جز بزیر آن درخت میوه دار

تا که شاخ افشان کند هر لحظه باد | بر سر خفته بریزد نقل و زاد

جبر خفتن درمیان رهزنان | ۹۱ مرغ بی هنگام کی یابد امان

ور اشارتهاش را بینی زنی | مرد پنداری و چون بینی زنی

این قدر عقلی که داری گم شود | ۹۲ سر که عقل از وی بپرد دم شود

زانکه بی شکری بود شوم و شنار | می برد بی شکر را در قعر نار

گر توکل میکنی در کار کن | کسب کن پس تکیه بر جبار کن

[illegible]

تکیه بر جبار کن تا وارهی
ورنه رفتی در بلا و گمرهی

باز ترجیح نهادن نخچیران توکل را بر جهد

جمله با وی بانگها بر داشتند | کان حریصان که این سببها کاشتند

صد هزار اندر هزار ان مرد و زن | پس چرا محروم ماندند از زمن

صد هزاران قرن ز آغاز جهان | ۹۳ همچو اژدرها گشاده صد زبان

۹۱ یعنی مرغ بے وقت رات کو بولا دیکھتا ہی اسکو شکاری جانور جو راستہ مین شکار کرتے ہین مار کھاتے ہین ۹۲ جس سر مین سے عقل نکل جاوے وہ مثل دم کے ہے یعنی صرف بوجھ ہے ۹۳ مثل اژدہا کے لوگون نے ہزارون موتھ کھولے مگر یون ہی رہ گئے

प्रभु अनुशासन मानै जोई	योग्य यज्ञ कर योगी होई
पौरुष पाइ प्रकाशहि ताही	राक्षस होइ जो निदरै वाही
धन्यबाद धन धान्य बढ़ावै	निधन होइ धनपतिहि भुलावै
निद्रा ग्रसित शिथिल जब होई	मृत्यु समान विवस नर सोई
तदपि विचार करिय मन माही	रहिये जहां शीतल बट छाहीं
त्वरित सुतरु तन ताप निवारै	(वृक्ष) छाया देय फूल फल डारै
चोरन मांहि थकित चर सोयो	चौगल गमाइ अचिन्त है रोयो
जौन स्वामि की सैन (मुसाफ़िर) समारै	(बेवकूफ़) क्लीब होइ पुरुषारथ हारै
बुद्धि विहाय विकल भई बानी	पशु बिन पुच्छ बने ते प्रानी
कर कृत घ्नता धर्म नसावें	घोर नर्क की राह बनावें
कृति कर कठिन करिये संतोषा	प्रभु सप्रेम पाइये परितोषा

पुरुषार्थ

पुरुषारथ कर भक्त जब पहुंचे भगवत माहिं
भीरु भरोसे भाग्य के भीषण भय में जाहिं

मृग गण का संतोष ही मुख्य बताना

मृग गण पुनि कर घोर चिकारा	सिसकत सिंहहि करत पुकारा
करि करि कोटि यत्न पचिहारे	मनुजन मनगत काज सारे
जब से विधि यह सृष्टि उपाई	मेरे सब हि कर कर चतुराई

مکرها کردند دانا گروه — که ز بن برکنده شد زان مکر کوه

کرد مکر و حیله آن قوم خبیث — گر ز ما باور نداری این حدیث (کلام مجید)

جز که آن قسمت که رفت اندر ازل — روی ننمود از سگال (تدبیر) و از عمل

جمله افتادند از تدبیر و کار — ماند کار و حکمهای کردگار

کسب جز نامی مدان ای هوشیار — جهد جز وهمی مپندار ای عیار (عاقل)

حکایت بسبیل تمثیل

ساده مردی (بھولا آدمی) چاشتگاهی (صبح کے وقت) در رسید — در سرا عدل سلیمانی رسید

روش گشته زرد و هر دو لب کبود — پس سلیمان گفت ای خواجه چه بود

گفت عزرائیل (ملک الموت) در من اینچنین — یک نظر انداخت پر از خشم و کین

گفت این اکنون چه میخواهی بخواه — گفت فرما باد را ای جان پناه

تا مرا زینجا بهندوستان برد — بو که بنده کان طرف شد جان برد

باد را فرمود تا او را شتاب — برد سوی خاک هندوستان بر آب

روز دیگر وقت دیوان (دربار عام) و لقا — پس سلیمان گفت عزرائیل را

کان مسلمان را بخشم از چه سبب — بنگریدی باز گو ای پیک رب

ای عجب این کرده باشی بهر آن — تا شود آواره او از خان و مان

گفت ای شاه جهان بی زوال — فهم کژ کرد و نمود او را خیال

من در او از خشم کی کردم نظر — از تعجب دیدمش در ره گذر

که مرا فرمود حق کامروز هان — جان او را تو بهندوستان ستان

دیدمش اینجا و بس حیران شدم — در تفکر رفته سر گردان شدم

از عجب گفتم مر او را صد پر است (اگر اسکے سو پر ہوں الگ جا سکیں) — زو بهندوستان شدن دور اندر است

प्रबल पराक्रम पाश पसारे । भेदित किय बहु भूधर भारे
जाल पर्वत
दंभ दर्प दानव दल हारे । मिटे न विधि जो अंक समारे
चालाकी में निपुण
पश्चिम में यदि उगे दिनेशू । सर्प भोज्य यदि होइ खगेशू गरुड़
गगन माहि वरु मेरु उड़ावे । ईश निदेश न जीव हटावे
पुरुषार्थ आज्ञा
नाममात्र कृत कहिये गुसाईं । शब्द मात्र पौरुष चतुराई

दृष्टांत

भीरु विप्र इक पहुंचो तहंवा । उमा सहित शिव तप करें जहंवा
सजल नयन कंपत सब गाता । पद गहि बोलो हे जग त्राता
दंड पाश कर दशन कराला । क्रुद्ध कृतांत दीख जिमि ज्वाला
दांत जमराज
प्राणनाथ प्रणवों कर जोरी । बाल विनय सम विनती मोरी
अर्ध चन्द्र धर अर्णव पारा । करिय तो होइ प्राण निस्तारा
शिवजी समुद्र
गरुण ईश आज्ञा अस दयऊ । जलनिधि पार ताहि ले गयऊ
इक दिन जहां श्री शंभु विराजा । दर्शन हित आयेउ यमराजा
पूछो बोलि ताहि वृषकेतू । क्रोध विप्र पर किय किहि हेतू
गृह सुत बंधु बिन धन दारा । त्याग विप्र गयो जलनिधि पारा
बोलो यम प्रभु कालहि घेरी । भई बुधि बिरुध विप्र कर केरी[1]
नहिं अमर्ष कर देखेउ ताही । चकित रहेउ लखि प्रभु प्रभुताई
क्रोध
आज्ञा दे हरि मोहि सिधारा । हनेउ ताहि तुम जलनिधि पारा
विप्र यहां लखि चकित रहेउ । असमंजस मोरे मन भयेउ
नहिं सुपर्ण सो यह उड़ आवे । किहि विधि समुद्र पार यह पावे
पक्षी

१. कालकी प्रेरणासे ब्राह्मणकी बुद्धि उलटी होगई थी

چون بامر حق بهندوستان شدم — دیدمش آنجا و جانش بستدم

تو همه کار جهان را همچنین — کن قیاس و چشم بگشا و ببین

از که بگریزیم از خود ای محال — از که برتابیم از حق ای وبال

تنگ زدرویشی گریزانند خلق — لقمهٔ حرص و امل زانند خلق

(سیر یعنی … سے جو درویشان کا خاصہ ہے) (یہ مشکل ہے اپنے نفس سے بھاگنا)

ترس درویشی مثال آن هراس — حرص و کوشش را تو هندوستان شناس

باز ترجیح نهادن شیر جهد را بر توکل

شیر گفت آری ولیکن هم ببین — جهدهای انبیا و مرسلین

شعبۂ ابرو جهادِ مومنان — تا بدین ساعت ز آغاز جهان

حق تعالی جهدشان را راست کرد — آنچه دیدند از جفا و گرم و سرد

(بندہ پاک)

حیله هاشان جمله حال آمد لطیف — کل شیء من ظریف هو ظریف

دامهاشان مرغ گردونی گرفت — نقصهاشان جمله افزونی گرفت

(اچھا جو کام کرتا ہے وہ اچھا ہی ہوگا)

جهد میکن تا توانی ای کیا — در طریق انبیا و اولیا

با قضا پنجه زدن نبود جهاد — زانکه این را هم قضا بر ما نهاد

کافرم من گر زیان کردست کس — در رهِ ایمان و طاعت یک نفس

سر شکسته نیست این سر را مبند — یک دو روزک جهد کن باقی بخند

بد محالی جست کو دنیا بجست — نیک حالی جست کو عقبی بجست

فکرها در کسب دنیا بارد است — فکرها در ترک دنیا وارد است

فکر آن باشد که زندان حفره کرد — آنکه حفره بست آن فکریست سرد

देखेउ जाइ समुद्र के पारा । हनेउ तासु प्राणन बरियारा
माया माहि विश्व सब मोही । प्रभु अद्भुत गति लखत न ओही
अंतरयामिहि किहि विधि त्यागें । व्यापक तज कहु किहि दिश भाजें
बौरे नर संतोषहि त्यागे । तृष्णा बंधन फसत अभागे

जैसेहि माया तम ग्रस्यो पुरुष तोष के त्रास
तन तप तज धावत तकरा तृष्णा अञ्चल मवास

सिंह उवाच

बोल्यो सिंह कहेउ तुम नीके । पुरुषारथ ऋषि मुनि प्रिय जीके
आदि सृष्टि ते अब लग जेते । ब्रह्मादिक सनकादि समेते
पुरुषारथी प्रगल्भ प्रतापी । थाप्यो धर्म हने बहु पापी
निर्मल ज्ञान शुभ युक्ति रचावे । अमिय निकट विष कबहु कि आवे
इन्द्रादिक तप बल बश कीने । पुरुषारथ पथ तदपि न बीने
किम मुनिन्द्र महिमा भजि मरिये । प्रबल पराक्रम में पग धरिये
यह न कर्म सों युद्ध कहावे । कर्महिं पुरुषारथहि बनावे
सत्य कहूं करि ईश दुहाई । किनहु धर्म करि हानि न पाई
रे मानी मति मंद अभागी । करहु प्रयत्न नित्य सुख लागी
मूढ़ अर्थहि न यत्न कराही । बुध जन रमे अमर पद माही
भीरु भोग में उद्यम करही । भ्रम तजि भीम योग चित धरही
जग कारा गृह भेद न कीजे । रक्षरा हित काहे चित दीजे

این جهان زندان و ما زندانیان / حفره کن زندان و خود را وارهان

چیست دنیا از خدا غافل بدن / نی قماش و نقره و فرزند و زن
(سوداگر — اسباب)

مال را کز بهر دین باشی حمول / نعم مال صالح خواندش رسول
(نیک آدمیوں کو مال اچھی چیز ہے)

آب در کشتی هلاک کشتی است / آب اندر زیر کشتی پشتی است
(کشتی کو نیچے پانی کی حمایت کرتا ہے)

چونکه مال و ملک را از دل براند / زان سلیمان خویش جز مسکین نخواند

کوزهٔ سر بسته اندر آب رفت / از دل پر باد فوق آب رفت

باد درویشی چو در باطن بود / بر سر آب جهان ساکن بود
(بحر دنیا — غرق نہ ہوگا)

آب نتواند مر او را غوطه داد / کش دل از نفخهٔ الهی گشت شاد

گرچه جمله این جهان ملک وی است / ملک در چشم دل او لاشی است
(سوائے — کوئی چیز نہیں)

پس دهان دل ببند و مهر کن / پر کنش از باد کبر من لدن
(باد کبر وہ کبر کہ جو ہوا کو واسطے بنائی ہو)

کسب کن جهدی نما سعی بکن / تا بدانی سر علم من لدن
(از نزد حق)

جهد حق است و دوا حق است و درد
منکر اندر نفی جهدش جهد کرد
گرچه این جمله جهان پر جهد شد
جهد کے در کام جاہل شهد شد

زین نمط بسیار برهان گفت شیر / کز جواب آن جبریان گشتند سیر

روبه و آهو و خرگوش و شغال / جبر را بگذاشتند و قیل و قال

عهد با کردند با شیر ژیان / کاندرین بیعت نیفتد در زیان

قسم هر روزه بیاید بی ضرر / حاجتش نبود تقاضای دگر

हम बंदी कारागृह लोकू। छिन्न भिन्न करि राहिय विशोकू (कैदी, जल)
कहा जग ईश जो देइ भुलाई। नहिं धन वित्त स्वजन समुदाई
न्याय जोरि धन धर्म लगावे। जग यश लेय अंत गति पावे
बिन जल कबहुं कि नाव चलाई। भीतर भरे तो देइ डुबाई
कविजन कहहिं यों ऋषि कहि गावा। नहिं हिरण्य ह्रादक हि लावा (रागजनकको, सुवर्ण)
घटहिं मूढ़ सुख वारिद डारे। अंतर मरुत सो ताहि उडारे (पवन)
विरति मरुत जो मनहि बसावे। सो जलनिधि जग माहिं निरावे (वैराग)
भव वारिधि नहिं सकहि डुबाई। ज्ञान समीर राम नहि बसाई (समुद्र, पवन)
त्रिभुवन यदपि वश्य करि आने। तृण के तुल्य तुच्छ तिहि जाने
मन मुख मूढ़ मौन व्रत धारे। वायु विराग हृदय संचारे
अबल पराक्रम करहिं मलीना। ईश्वर प्रेम सरित जिम मीना

(रोग, औषधि)
व्यथा हीन भेषज नहीं पुरुषार्थ बिन सोइ
पौरुष की निंदा करहुं तिहि बिन वाद न होइ
(सूर्य, चन्द्र, पवन, तारा, समुद्र)
तरणि निशाकर यम अनिल उडगन अनल न दीश
पुरुषारथ मानि क्षरा पगो निन्दहि अज्ञ अनीश

उत्तर प्रत्युत्तर बहु धारे। भये निदान मृगगण हियहारे (नास्तिक)
मेंढक शशि गोमायु कुरंगा। सबही कीन तर्क कर भंगा (मेंढ़ोंके भेद)
सबन कीनी ति प्रतिज्ञा आनी। इह में कबहु होइ नाहिं हानी
झपट अहार अहर्ह आनहि। यांचा रहित यूथ मिल ठानहिं (बिन मांगे)

عهد چون بستند و رفتند از زیان ‌ ‌ ‌ ‌ سوی مرعی امین از شیر ژیان

جمع بنشستند یکجا ان وحوش ‌ ‌ ‌ ‌ اوفتاده درمیان جمله جوش

هر کسی تدبیر و رای میزدند ‌ ‌ ‌ ‌ هر یکی در خون هر یک میشدند

عاقبت شد اتفاق جمله شان ‌ ‌ ‌ ‌ تا بیاید قرعه اندر میان

قرعه بر هر که افتد او طعمه است ‌ ‌ ‌ ‌ بی سخن شیر ژیان را لقمه است

هم برین کردند ان جمله قرار ‌ ‌ ‌ ‌ قرعه آمد سر ببر را اختیار

قرعه بر هر کو فتادی روز روز ‌ ‌ ‌ ‌ سوی ان شیر او دویدی همچو یوز

چون بخرگوش آمد این ساغر بدور ‌ ‌ ‌ ‌ بانگ زد خرگوش کاخر چند جور

قوم گفتندش که چندین گاه ما ‌ ‌ ‌ ‌ جان فنا کردیم در عهد و وفا

تو مجو بدنامی ما ای عنود ‌ ‌ ‌ ‌ تا نرنجد شیر رو تو زود زود

گفت ای یاران مرا مهلت دهید ‌ ‌ ‌ ‌ تا بمکرم از بلا بیرون جهید

تا امان یابد بمکرم جان تان ‌ ‌ ‌ ‌ ماند این میراث فرزندان تان

هر پیمبر امتان را در جهان ‌ ‌ ‌ ‌ همچنین تا مخلصی میخواندشان

مردمش چون مردمک دیدند خورد ‌ ‌ ‌ ‌ در بزرگی مردمک کس ره نبرد

قوم گفتندش که ای خر گوش دار ‌ ‌ ‌ ‌ خویش را اندازهٔ خرگوش دار

هین چه لافست اینکه از تو مهتران ‌ ‌ ‌ ‌ در نیاوردند اندر خاطر آن

معجبی یا خود قضامان در پی است ‌ ‌ ‌ ‌ ورنه این دم لایق چون تو کی است

گفت ای یاران حقم الهام داد ‌ ‌ ‌ ‌ مر ضعیفی را قوی رائی فتاد

शपथ कराइ प्रतीति बढाई । नित्य निशंक चरहिं बन जाई ॥
बलि हित बैठ बिलाप मचाई । दारुण द्वंद देन दरसाई ॥
निज निज नीति निपुणता आनें । एक एक के बलि की ठानें ॥
आनि मम न सब ने यह ठानी । चिठ्ठी डार होव नहिं हानी ॥
विधि बश जिह कर आवै नामा । ध्रुव सोई जाइ सिंह के धामा ॥
दृढ ब्रत होइ अस मिलु डारहिं । तिहकर नियत निदेशन टारहिं ॥
तज प्रपंच प्रारब्ध अधारा । सोइ मृगेन्द्र कर होइ अहारा ॥
गरजो शश सुनतेहि निज नामा । अंतहु अस अनर्थ किह कामा ॥
यूथ कही बिलखित सुनि भीते । इतने दिवस देत बलि बीते ॥
शठ अपयश भाजन जिन होहू । जाउ त्याग निज तन कर मोहू ॥
बोलो शश दीजे अवकाशा । रचि माया काटहुं तुम पाशा ॥
करि प्रपंच प्रिय प्राण बचाई । हरौं सकल तुमरी कठिनाई ॥

ब्रह्मनिष्ठ नेता सकल निगम नियम मन धार ।
भव बारिद बोहित भये कीने बहु जन पार ॥

प्राणिन लघु तन रूप निहारा । गर्विन गौर न नहिं चित धारा ॥
बोले यूथ खर्व खल मानी । बोलसि छोटे मुख बड़ि बानी ॥
तोते पुरुष प्रशस्त पुराने । कोउ कुमंत्र न अस जिय जाने ॥
हमरो काल कि धौं नियरावा । जो गुरु बन अस गाल बजावा ॥
शश कहि मोहि मूर्ख न भानी । प्रभु मोरेत प्रबोध मन जानी ॥

آنچه حق آموخت مر زنبور را / آن نباشد شیر را و گور را

خانها پر سازد از حلوای تر / حق برو آن علم را بگشاد در

آنچه حق آموخت کرم پیله را / هیچ پیلی داند آن گون حیله را

آدم خاکی ز حق آموخت علم / تا بهفتم آسمان افروخت علم

نام و ناموس ملک را در شکست / کوری آن کس که با حق درشک است

علمهای اهل حس شد پوزبند / تا نگیرد شیر از آن علم بلند

تا نتاند شیر علم دین کشید / تا نگردد گرد آن قصر مشید

قطرهٔ دل را یکی گوهر فتاد / کان بدریاها و گردونها نداد

چند صورت آخر ای صورت پرست / جان بی معنیت از صورت نرست

نقش بر دیوار مثل آدم است / بنگر اندر صورت او چه کم است

جان کم است آن صورت با تاب را
رو بجو آن گوهر نایاب را

شد سر شیران عالم جمله پست / چون سگ اصحاب را دادند دست

چه زیانستش از آن نقش نفور / چونکه جانش غرق شد در بحر نور

وصف صورت نیست اندر خامها / عالم و عادل بود در نامها

عالم و عادل همه معنیست و بس / کش نیابی در مکان پیش و پس

می زند بر تن ز سوی لامکان / می نگنجد در فلک خورشید جان

خاتم ملک سلیمانست علم / جمله عالم صورت و جانست علم

آدمی را زین هنر بیچاره گشت / خلق دریاها و خلق کوه و دشت

जो गुण भ्रमर मांहि हरि दीने । सो नहिं परत सिंह में चीने

(शहत की मक्खी)
मधुप मधुर मधु देत बनाई । तहां प्रगट प्रभु की प्रभुताई

पाट पवित्रहि कीट बनावे । दन्तिन मांहि सो गुण न समावे

(रेशम) (बढ़ाई) (हाथी)
नाहिं ईश अस दीन बढ़ाई । लोकान्तर की गति जिन पाई

अमर अमर्ष करत जिह देखी । कोक हि सक प्रभु शक्ति विशेखी

(अचंभा)
विद्या बल जिहं जानहिं लोका । वत्स मनुज मुख दीन मुछीका

(बछड़ा)
उदर परायण इत उत धावे । धेनु उपनिषद् दुध न पावे

मनहिं मंजु गति जो प्रभु दीनी । सो समुद्र में परत न चीनी

बिन भल्याई आतम के चीने । बहिर बाहु बल परत न फीने

(आकार)
नर अनुहार पतीक बनावे । भूषण बसन मुक्त मणि लावें

(भांति) (मूरत)
प्राण प्रयोग न होइ तहं प्रेम भक्ति जिन होइ
रत्न अमोलिक रहित हैं खोजो बुध जन सोइ

रमा प्राप्त कर अंगीकारा । शुक रहे अष्ट शरीर मंझारा

सो तनु हानि न तिह पहुंचाई । हरि के ध्यान सो मगन रहाई

(इन्द्रिय निग्रह) (चेतन)
शम दम श्रद्धा शुभ गुण जेते । तनु न रहे आतम कर तेते

सब गुण पुरुषहि मांहि रहावें । अड अधार में तेन समावें

(शरीर)
देश काल निर्गत सो होई । वहु ब्रह्माण्ड सगावकि सोई

ज्ञान पाइ ऋषि पुंगव होंही । तनु संसार ज्ञान जनु देही

ज्ञान पाइ नर कोविद सयाने । जल चर थल चर सब भय माने

زو پلنگ و شیر ترسان همچو موش — زو شده پنهان بدشت و که وحوش

زو پری و دیو ساحلها گرفت — هر یکی در جای پنهان جا گرفت

آدمی را دشمن پنهان بسی است — آدمی با حذر عاقل کسی است

خلق خوب و زشت هست از ما نهان — میزند بر دل بهردم کوبشان

بهر غسل ار در روی در جویبار — بر تو آسیبی زند در آب خار

گرچه پنهان خار در آب است پست — چونکه در تو میخلد دانی که هست

خار خار حسها و وسوسه — از هزاران کس بود نی یک کسه (شیاطین)

باش تا حسهای تو مبدل شود
تا ببینی (مشاهده ذات سے) شان و مشکل حل شود

تا سخنهای کیان رد کرده
تا کیان را سرور خود کرده

بعد از آن گفتند کای خرگوش چیست — در میان آر آنچه در ادراک تست

ایک تو با شیر در پیچیده (چالاک) — باز گو رایی که اندیشیده

مشورت ادراک و هوشیاری دهد — عقلها مر عقل را یاری دهد

گفت پیغمبر بکن ای رای زن — مشورت کالمستشار موتمن (اوس مشوره کرنیوالا امین ہو)

قول پیغمبر بجان باید شنود — باز گو تا چیست مقصود تو زود

گفت سر را نباید باز گفت — جفت طاق آید گهی گه طاق جفت

از صفا گر دم زنی با آینه — تیره گردد زود با ما آینه

در بیان این سه کم جنبان لبت — از ذهاب و از ذهب و ز مذهبت (سفر، روپیہ، مذہب)

[illegible]

सिंह व्याघ्र हय गज वश जाके
घोड़ा
यक्ष कुबेर नाग गंधर्वा
नर के शत्रु बहुत घट माहीं
काम क्रोध मद लोभ अपारा
अज्ञान हेतु धस्यो सरि माही
दृष्टान्त
यदपि दृष्टि गन सो नहिं आना
विविधि विषय विहङ्ग ले बांके

हृदय हेरि जिन हरि पद लाके
आयसु शिर धर सेवहिं सर्वा
विरले जन तिनके समुझाहीं
साधनी करते हैं
घट में घरा रोप अविचारा
कंटक कठिन लगो पद माही
जानो मन्द दारुण दुख पावा
मानस सरित गुप्त जिम नाके

ज्ञान चारु चक्षुः खुलें चित्त चपलता जाइ
पवित्र
दुरित दीर्घ दुख दलन कर दृढ़ दरिद्र नसाइ
विविधि वासना जीव के हिय बन माहि रहाहि
परखो किन तुम वश करे को तुम्हरे वश माहि

कहु भाषा शूर शिरोमणि भाई
कहुं संग्राम सिंह सन कैसे
अनुमति करिय गूढ़ हित भाई
सलाह
गूढ़ मंत्र जिह मनहि उचारे
भाषा अर्थ विन केरा चित धरिये
भाषा कह गुप्त न चाहिय दिखावा
गूढ़ मंत्री काहि क्यों कर भीजे
निज मुख कबहु कहिय नहिं गाई

अभिमत युक्ति जो हृदय उपाई
विभ्रम विगत होंहि हम जैसे
भ्रमरहित
मेधा बुद्धिहि देत बढ़ाई
बुद्धि
अनुमन्ता निज धर्म विचारे
सलाहदेनेवाला
अभिमत अर्थ प्रकट पुनि करिये
जिह कर होइ फेर पछितावा
१
पर मन मुकुर मलिन क्यों कीजे
सुकृत स्वच्छ निज भेद भलाई

१— भेदके करनेही लोगोंके मनमें भेद पड़जाता है—

کاین سبب را بسیار خصم ست و عدد — در کمینت ایستند چون دانند داد (گھات)

دو بگو سی با یکی گو الوداع — کل سر جاوز الاثنین شاع (جو بھید دو لبوں سے گذر گیا اشاعت پا گیا)

گر دو سه پرنده را بندی بهم — بر زمین مانند محبوس از الم

مشورت دارند سرپوشیده خوب — در کنایت با غلط افگن مشوب

مشورت کردی پیمبر بسته سر — گفته ایشانش جواب و بی خبر

در مثالی بسته گفتی رای را — تا نداند خصم از سر پای را

او جواب خویش بگرفتی ازو
وز سوالش می نبردی غیر بو

(اپنا جواب اوس سے پالیتے اور اوسکے سوالکا غیر کچھ بھید نہ پاتا)

حاصل آن خرگوش رای خود نگفت — مکر اندیشید با خود طاق و جفت

با وحوش از نیک و بد نگشاد راز — تیز رو و جان خود میراند باز

ساعتی تاخیر کرد اندر شدن — بعد از آن شد پیش شیر پنجه زن

زان سبب کاندر شدن او ماند دیر — خاک را میکند و می غرید شیر

گفت من گفتم که عهد آن خسان (کمینہ) — خام باشد خام سست و نارسان

دمدمه ایشان مرا از خر فگند (فریب دیا) — چند بفریبد مرا این دهر چند

سخت در ماند امیر سست ریش — چون نه پس بیند نه پیش از احمقیش

راه هموار ست و زیرش دامها (پیچ) — قحط معنی در میان نامها (عمارضی پیدا)

لفظها و نامها چون دامهاست — لفظ شیرین ریگ آب عمر ماست (چکنی چپڑی باتیں)

عمر چون آبست و وقت او چو جو — خلق باطن ریگ جوی عمر تو

آن یکی ریگی که جوشد آب ازو — سخت کمیاب ست رو او را بجو

हंस हंस हरहि हर्ष हिय हेरी । करहि सुपक्ष घात इन केरी
भर्म गमाइ होइ चित भंगा । धारिये अधर पुट माहि अभंगा
वांधत नू रूह रखिय विहंगू । दुर्गति धारि रहे जिम पंगू
पक्ष खुलत पुनि पास न आवे । रूहत ही भेद भवन भरि जावे
अलंकार सह प्रश्न बखाने । उत्तर देइ नहिं मर्महि जाने
कहि दृष्टांत प्रसंग पसारे । जिह न अभीष्ट अमित निहारे

अभिमत आशय उतरते अनुभव करिय अघाइ
पर प्रस्ताव न पावही प्रगट अतर्क बढ़ाइ

रचि निदान स्व प्रपंच विचारी । शशा निज मति मुख तें न उचारी
नहिं परि बाद पशुन मति कीनों । निज मंतव्य माहि रंग भीनो
रह्यो चपल कछु काल विताई । पहुंच्यो जहां रह्यो बन राई
तिनि में बहुत बिलंब विचारी । पंचानन पृथिवी खनि डारी
मोर प्रताप न पशु गण जाने । न निज प्रतिज्ञा पर चित आने
धूर्त धर्म तजि धोखा देहीं । करें कुकर्म कुशल किम चहहीं
सो नृप निपट न्यून ता धारे । जो निज भल अनभल न विचारे
बरगावे षन्मुखि जीव भुलाने । सत्त्व स्वभाव सहज नहिं जाने
पाखब बचन वर बुद्धि भुलाई । सलिलहि मृत जिम देत सुखाई
सरिता समय आयु जिम वारी । शोष ग्रीष्म इन विषय बयारी
निहारि मे अमिय यूष बढ़ावे । दुर्लभ ताहि खोज सुख पावे ।

هست آن ریگ اے پسر مردِ خدا
که بحق پیوست و از خود شد جدا
(اوصاف بشریت سے جدا ہوکر خدا میں ملگیا)

آب عذب (شیرین) دین همی جوشد ازو
طالبان را زو حیات ست و نمو (نشو و نما)

غیر مرد حق چو ریگ خشک دان
که آب عمرت را خورد او هر زمان

طالب حکمت شو از مرد حکیم
تا ازو گردی تو بینا و علیم

منبع حکمت شود حکمت طلب
فارغ آید او ز تحصیل و سبب (علوم ظاہری)

لوح حافظ لوح محفوظے شود
عقل او از روح محفوظے شود

چون معلم بود عقلش ز ابتدا
بعد ازان شد عقل شاگردی ورا

عقل چون جبریل گوید احمدا
گر یکے گامے نهم سوزد مرا

تو مرا بگذار زین پس پیش ران
حد من این بود اے سلطان جان

هر که ماند از کاهلی بے شکر و صبر
او همی داند که گیرد پاے جبر

هر که جبر آورد خود رنجور کرد
تا همان رنجوریش در گور کرد

گفت پیغمبر که رنجوری بلاغ
رنج آرد تا بمیرد چون چراغ

جبر چه بود بستن (جوڑنا) اشکسته را
یا بپیوستن رگ بگسسته را

چون درین رہ پاے خود نشکسته
بر که میخندی چه پا را بسته

وانکه پایش در ره کوشش شکست
در رسید او را براق و بر نشست

حامل دین بود او محمول شد
قابل فرمان بد او مقبول شد

تا کنون فرمان پذیرفتی ز شاه
بعد ازین فرمان رساند بر سپاه

تا کنون اختر اثر کردے درو
بعد ازان باشد امیر اختر او

ऋषि सोइ अचल सुमेरु समाना तन सुख तजि निज सुख जिन जाना (आत्म)
जहां ते झरै अमृत दिन राती जनजिह्न पाइ जुड़ावहि छाती

हंस हंस हय (घोड़ा) हाटक (सोना) हरहिं हेरहि प्रिय अनुहार
हृदय हलाहल (विष) मुख अमिय तजहु तिनै हठधार

शरण संत सतगुरु की लीजे होइ प्रकाश मोह तम छीजे
पाइ प्रकाश पूज्यतम होई अपरा विद्या (भौतिकविद्या) गनि सब खोई
होइ मुमुक्षु मुक्त हो जावे आनंदघन (परमात्मा) में मगन रहावे
प्रथम रह्यो बुधि (बुद्धि) के अनुयाई बुद्धि चेरि गति सेवहि ताही
इक पग बुद्धि निकट तहां ठाड़ी तासु तेज नहिं बढ़त अगाड़ी
शक्ति शेमुषी (बुद्धि) की जहां नाहीं शब्द श्येन (शब्दके बाज़) नहिं तहां उड़ाही
तजि पुरुषार्थ प्रमाद (गफलत) बढ़ायो ज्ञान न संतोषहि उर आयो
नहिं संतोष व्यथा (रोग) तिह लागी रौरव (नर्क) में ते जाइ अभागी
ऋषि आरण्यक वनहि भिखारी (पुरुषार्थ) जीयत प्रेत (मरे) सम ते व्यभिचारी
कृच्छ्र व्रत पर कृपा करीजै क्लेशित लखन कष्ट हर लीजै
आर्त त्राण (दुखका रूप) कर दुख न उठायो वृथा जन्म ले जगत हंसायो
धर्म हेत जो सीस गमावें योगारूढ़ यती कहलावें
भक्तहि धर्म भार के भागी (मूढ़) त्रिभुवन भूषण भट (शूर) भय त्यागी

ईश्वर आज्ञा में अचल अनृत अक्षा नाहि टार
तासु अनुग्रह (कृपा) अछत तनु (इसी शरीरमें) लहत अमित (असीम) अधिकार

मन के वश अब लग सो रहायो अब मन पर अधिकार जमायो

تازہ کن ایمان نہ از گفت زبان … اے ہوا را تازہ کردہ در نہان
تا ہوا تازہ ست ایمان تازہ نیست … کین ہوا جز قفل آن دروازہ نیست
کردۂ تاویل لفظ بکر را … خویش را تاویل کن نے ذکر را
پیغمبرا محفوظ یعنی قرآن
مکر تو تاویل کردہ ذکر را … ذکر را مان و مگردان فکر را
بر ہوا تاویل قرآن میکنی … پست و کژ شد از تو معنی سنی
ماند احوالت بدان طرفہ مگس … کو ہمے پنداشت خود را ہست کس
از خودی سرمست گشتہ بے شراب … ذرہ خود را بدیدہ آفتاب
وصف بازان را شنیدہ در بیان … گفت من عنقاے وقتم بے گمان
گفت من دریا و کشتی خواندہ ام … مدتے در فکر آن مے ماندہ ام
آن مگس بر برگ کاہ و بول خر … ہمچو کشتیبان ہمے افراخت سر
اینک این دریا و این کشتی و من … مرد کشتیبان و اہل راے و فن
بر سر دریا ہمے راند او عمد … مے نمودش آن قدر بیرون ز حد
یا قصدا خود کار کردن
بود بے حد آن چمین نسبت بدو … آن نظر کو بیند آن را راست کو
عالمش چندان بود کش بینش است … چشم چندین بحر ہم چندینش است

صاحب تاویل باطل چون مگس
وہم او بول خر و تصویر خس

گر مگس تاویل بگذارد براے … آن مگس را بخت گرداند ہماے
آن مگس نبود کش این عبرت بود … روح او نے در خور صورت بود
ہمچو آن خرگوش کو بر شیر زد … روح او کے بود اندر خورد قد

रसना धर्म धर्म रट लागी । चित में चिंता चाह अभागी
(जिव्हा)
विषयन अच्छत धर्म कहं भाई । पुण्य मार्ग पर देन लगाई
धर्महि मत निज ओर चलाओ । मनहि धर्म की ओर घुमाओ
संचित धर्म संकुलहि लागी । संशय संकुल धर्महि त्यागी
(बुद्धि) (विरोध) (युक्त)
विषयन फस श्रुति अर्थ घुमाये । अथ विपरीत भाव दरसाये
होइ तुमार दशा पुनि ऐसी । रही मक्षिका की गति जैसी
विन मद मत्त मोह बश मानी । मंगल मूरत आपहि जानी
हंस चकोर मयूर बिहंगा । कुक्कुभ मद गुमान कर भंगा
(पक्षियों के भेद)
सिंधु सरित संगम सुनि पावा । नौका निरखन ध्यान लगावा
(धान का भुस)
परेउ पलाल मूत्र खर माहीं । बैठी करणधार बन ताही
(मल्लाह)
नौका सिंधु अवर नहिं कोई । नाविक नीति निपुण हम सोई
सुनत रहे अब नैनन देखा । पोत सरित कर कहा परेखा
(अगाधा)
तासु दृष्टि खर मूत्र अगाधा । भयो न कछु तिह कर अपराधा
जेती बुधि विदेह गति तेती । उतनी दृश्य दृष्टि है जेती
(पालन करता)

जिनकी मति माया फसी ते मक्षिका समान
रासभ मूत्र पलाल इव वारिद पोत बखान
(गधा) (समुद्र) (नाव)

तुच्छहु जो निज पक्षहि त्यागे । मंगल मूल महत पद पागे
(पक्षपात)
तुच्छ न होइ जो पक्ष नसावे । तन तुष तरि आतन नट धावे
(वकल)
शशकि होइ सुठ सिंह समाना । सकृत सत्व वल हनेउ निदाना
(एकदम) (अंतःकरण)

شیر بگفت از سر تیزی و خشم — کز رہ گوشم عدو بربست چشم

مکرہاے جبریانم بستہ کرد — تیغ چوبین شان تنم را خستہ کرد

زین سپس من نشنوم آن دمدمہ — بانگ دیوانست و غولان آن ہمہ

بر دران ای دل تو ایشان را ایست — پوست شان برکن کہ غیر پوست نیست

پوست چہ بود گفتہاے رنگ رنگ — چون زرہ بر آب کش نبود درنگ

این سخن چون پوست معنی مغز دان — این سخن چون نقش معنی ہمچو جان

پوست باشد مغز بد را عیب پوش — مغز نیکو را ز غیرت غیب پوش

چون ز بادست قلم و دفتر ز آب — ہر چہ بنویسی فنا گردد شتاب

نقش آبست ار وفا جوئے از آن — باز گردی دستہاے خود گزان

باد در مردم ہوا و آرزوست — چون ہوا بگذاشتی پیغام ہوست

خوش بود پیغامہاے کردگار — کو ز سر تا پاے باشد پایدار

یعنی بادشاہوں کا خطبہ ...

خطبہ شاہان بگردد وان کیا — جز کیا و خطبہاے انبیا

در شدن خرگوش بس تاخیر کرد — مکر را با خویشتن تقریر کرد

در رہ آمد بعد تاخیر دراز — تا بگوش شیر گوید یک دو راز

تا چہ عالمہاست در سوداے عقل — تا چہ پہناست این دریاے عقل

بحر بی پایان بود عقل بشر — بحر را غواص باید اے پسر

صورت ما اندرین بحر عذاب — میدود چون کاسہا بر روے آب

تا نشد پر بر سر دریا چو طشت — چونکہ پر شد طشت در وے غرق گشت

केहरि क्रुद्ध भयो जिमि काला । तुच्छ मृगन हम बांधे जाला ॥
तिनके प्रबल प्रपंच प्रसादा । हम अफुल्लन कीन प्रमादा ॥
माया — अप्रफुल्लित
अब हम शपथ हु सांच न आने । सहसा कर पाछे पछिताने ॥
जल्दी
सपदि सुखेन समूह विदारों । ख्याल खेंच खल खर्बन मारों ॥
जल्द — नीच
होइ प्रपंच सुबचन विलासू । वारि बीच कर कहाँ विश्वासू ॥
जल — लहर
शब्द — शब्द त्यागि निज अर्थ विचारे । जिय बिनु देह न कारज सारे ॥
बंचक कहि मृदु बचन रिझावहिं । सुनि सन बचन साधु गति पावहिं ॥
ठग — बचन
जल पर जो कोइ चित्र बनावे । विनशे वेग न वह ठहरावे ॥
बचन देखि बंचक बश होही । ल्केश पाइ कर भीजहि सोही ॥
[illegible] तजि तांडव कर गावे । प्रभु गुण कर परिचय सोइ पावे ॥
नृत्य — फल
प्रभु प्रेरित मति जिन चित धारी । अमल अटल अद्भुत अघहारी ॥

नृपति निदेश न नित्य होइ निधन होइ मिट जाइ ।
नशे — परमात्मा — मरते ही
[illegible] निदेश परमेश युत जब लग सृष्टि रहाइ ॥

मग में कछु विलंब विस्तारी । गूढ़ मंत्र निज मनहि विचारी ॥
पंचानन समीप सोइ आवा । मंत्र मन गढ़त चहिय सुनावा ॥
सिंह
बुद्धि विमल वारिध अवगाहा । अगम असीम अगाध अथाहा ॥
समुद्र — गहरा
को मनुष्य मति की गति पावे । जो न सहस्त्र समुद्र समावे ॥
बुद्धि
तिहि सागर हमरी गति कैसी । तुंबी तिरै तोयनिधि जैसी ॥
समुद्र
बिनु जल सीप समुद्र निरावे । स्वाति बुंद लहि सिंधु समावे ॥

१ सतपुरुषों के अटल बचन सुन कर भी उनकी गति नहीं जानते ॥

عقل پنهانست و ظاهر عالمی　　صورت ما موج یا از وی نمی

هر چه صورت می وسیلت سازدش　　زان وسیلت بحر دور اندازدش

تا نه بیند دل دهنده راز را　　تا نه بیند تیر دور انداز را

اسپ خود را یاوه داند وز ستیز　　میدواند اسپ خود را تیز تیز

اسپ خود را یاوه داند آن جواد　　و اسپ خود او را کشان کرده چو باد

در فغان و جستجو آن خیره سر　　هر طرف پرسان و جویان در بدر

کانکه دزدید اسپ ما را کو و کیست　　اینکه زیر ران تست ای خواجه چیست

وصف ها را مستمع گوید براز　　تا شناسد مرد اسپ خویش باز

[illegible]

[illegible]

جان ز پیدایی و نزدیکی ست گم　　چون شکم پر آب و لب خشکی چو خم

در درون خود بیفزا درد را　　تا به بینی سبز و سرخ و زرد را

کے به بینی سرخ و سبز و فور را　　تا نه بینی پیش از ان سه نور را

لیک چون در رنگ گم شد هوش تو　　شد ز نور آن رنگها روپوش تو

چونکه شب آن رنگها مستور بود　　پس بدیدی دید رنگ از نور بود

نیست دید رنگ بی نور برون　　همچنین رنگ خیال اندرون

این برون از آفتاب و از سهاست　　وان درون در عکس انوار علاست

نور نور چشم خود نور دل است　　نور چشم از نور دلها حاصل است

باز نور نور دل نور خدا است　　کو ز نور عقل و حس پاک و جدا است

شب نبد نور و ندیدی رنگ را　　پس بضد نور پیدا شد ترا

شب ندیدی رنگ کان بی نور بود　　رنگ چه بود مهره کور و کبود

[illegible]

आतम गुप्त प्रगट संसारा । अथवा वीचि सो वारि मंझारा
(लहर) (जल)
दृश्य हि जिन निज इष्ट बनायो । सत्य स्वरूप न तिह दरसायो
रहैं दृष्टि गोचर शर नाना । सो न दीख जिह शर संधाना
खोयो अपनो अश्व बतावे । ढूंढन ताहि बहुत दौड़ावे
अश्वासीन न जानत ताही । विभ्रम विवश विषम गति जाही
(घोड़े पर सवार) (टेढ़ा)
कम्पित रुदन करत अति भारी । खोजत गिर बन गहन मंझारी
कहां तस्कर जिह लीन तुरंगा । किह पर चढ़े भई मति भंगा
(चोर)
सुनत हु मूढ़ विपश्चित बानी । नहिं निज बाजि परत जिह जानी
(बुद्धिमान) (घोड़ा)

जो अति सूक्ष्म[1] अति बड़ो[2] अति समीप[3] अति दूर[4]
अति व्यापक[5] दीखत नहीं मरे बहिर मुख कूर

तप बल दिव्य दृष्टि जब पावे । आत्म अनात्म प्रकट दिखावे
हरित अरुण सित बरण अनेकू । बिन प्रकाश भासत नहिं एकू
(हरा लाल सफ़ेद)
बरण मान भई बुद्धि तुमारी । बरणन ढांक लीन उजियारी
निश तम निबिड़ बरण नहि भासे । जानि सत वहि प्रदीप उजासे
बहि प्रकाश जिम बरण दिखावे । अंतः द्युति संवित नहि लखावे
(बाहर) (रंग) (आत्म प्रकाश बुद्धि)
रवि शशि बहिर प्रकाशन हारौ । आत्म प्रभा अंतः उजियारो
लोचन चक्षु न स्वयं प्रकाशे । अन्तर्गत द्युति तिह मग भासे
आत्म प्रकाशक अंतः केरो । बुधि इन्द्रिय परात जासु उजेरो
तम कर नात न वस्तु दिखावे । पाप प्रकाश पुरुष तिह पावे
धर्म विरोधी करत विवेकू । हिम आतप जिम कहि यन एकू

१ सूक्ष्म में जैसे परमाणु २ ब्रह्माण्ड ३ सरमा अंतर में ४ आकाश में पक्षी

دیدن نورست انگه دید رنگ | وین بضد نور دانی بی درنگ
رنج و غم را حق پی ان آفرید | تا بدین ضد خوشدلی آید پدید
پس نهانیها بضد پیدا شود | چونکه حق را نیست ضد پنهان بود
که نظر بر نور بود انگه برنگ | ضد بضد پیدا شود چون روم و زنگ
دیدن نورست انگه دید رنگ | این بضد نور دانی بی درنگ
پس بضد نور دانستی تو نور | ضد ضد را می نماید در صدور
نور حق را نیست ضدی در وجود | تا بضد او را توان پیدا نمود

لاجرم ابصارنا لاتدرکه | وهو یدرک بین تو از موسی و که

یہ نگاہیں ادراک اسکو نہیں کر سکتیں
اور وہ نگاہونکو ادراک کرتی ہین

صورت از معنی چو شیر از بیشه دان | یا چو آواز و سخن ز اندیشه دان
این سخن و آواز از اندیشه خاست | تو ندانی بحر اندیشه کجاست
لیک چون موج سخن دیدی لطیف | بحر ان دانی که باشد هم شریف
چون ز دانش موج اندیشه بتاخت | از سخن و آواز او صورت بساخت
از سخن صورت بزاد و باز مرد | موج خود را باز اندر بحر برد
صورت از بی صورتی آمد برون | باز شد کانا الیه راجعون
پس ترا هر لحظه مرگ و رجعتیست | مصطفی فرمود دنیا ساعتیست
فکر ما تیریست از هو در هوا | در هوا کی پاید آید تا خدا
هر نفس نو میشود دنیا و ما | بی خبر از نو شدن اندر بقا
عمر همچون جوی نو نو میرسد | مستمری می نماید در جسد

[illegible]

یعنی بوجہ اتصال جریان تماثل اجزا [illegible]

देखि प्रकाश वरण पुनि देखिय	धर्म विरोध बिना किमि पेखिय
दुख विन सुख विन वैर सनेहू	दिवस रात्र विनु जान न केहू
बिनु विरोध नहि गुण दिखावे	ईश विरोध न सो किमि पावे
भेदहि वस्तु मात्र विलगावे	(परमात्मा) श्वेत श्याम विनु जान न पावे
(अलग करता है) लखि प्रकाश पुनि वर्ण लखावे	बिनु वे धर्म न तिह विलगावे
तम कर तरणि तेज तुम जानो	बिन विरोध नहि परत पिछानो
(सूरज) जासु प्रकाश विरोध न होई	अनुपम नाहि लखे किमि होई

(अशब्द) (अजन्मा उपमारहित) (ज्ञानरूप)

अमल अरूप अशब्द अज अकृतुः कावि: ज्ञानज्ञ
अंतर्यामी अखिल प्रभु अच्युत अभय सर्वज्ञ

(अमल) (परमात्मा)

प्रत्यक्षहि परोक्ष दरसावे	आपण अंतर्गतहि जनावे
वाणी मानस माहि रहाई	मन किह आज्ञा रहत सदाई
वचन वारि जव निर्मल होई	हृदय समुद्र स्वच्छ पुनि सोई
वारिद बुद्धि सो वीचि विचारा	शब्द रूप हुइ जगत पसारा
(समुद्र) (लहर) होइ थूल पुनि शब्द बिलाई	उर्मी जिमि निज उदधि समाई
(स्थूल) सूक्ष्म होइ स्थूल वपु पावे	(लहर) (समुद्र) कारज कारण माहि समावे
छिन छिन जन्म मृत्यु हम पावहिं	तिह छिन मात्र विप्र ऋषि गावहिं
शर समान संकल्प हमारे	प्रभु प्रेरित तिह निकट पधारहिं
(तीर) प्रति छिन हम नव जीवन पावहिं	थिर जानत तिह ध्यान न लावहिं
अभिन्न कछु आयु सरित जिमि वारी	मिलत प्रवाह न जात निहारी

ان ز تیزی مستمر شکل اندر است ۔ چون شرر کش تیز جنبانی بدست (جنگاری)

شاخ آتش را بجنبانی بساز ۔ در نظر آتش نماید بس دراز

(انتظام) این درازی مدت از تیزی صنع ۔ می نماید سرعت انگیزی صنع

طالب این سر اگر علامہ ایست ۔ نک حسام الدین کہ سامی نامہ ایست (عارفانہ ۔ کتاب الاسرار)

وصف او از شرح مستغنی بود
رو حکایت کن کہ بیگہ مے شود (بے وقت)

شیر را افزود خشم و شد نفور ۔ دیدگان خرگوش مے آید ز دور

مے دود بے دہشت و گستاخ او ۔ خشمگین و تند و تیز و ترشرو

کز شکستہ آمدن تہمت بود ۔ وز دلیری دفع ہر ریبت بود

چون رسید او بیشتر نزدیک صف ۔ بانگ بر زد شیر ہان اے ناخلف

من کہ پیلان را ز ہم بدریدہ ام ۔ من کہ گوش شیر نر مالیدہ ام

نیم خرگوشے کہ باشد اینچنین ۔ امر ما را افگند او بر زمین

(تکمینا) گفت خرگوش الامان عذریم ہست ۔ گر دہد عفو خداوندیت دست

باز گویم گر تو دستوری دہی ۔ تو خداوندی و شاہی من رہی

گفت چہ عذر اے قصور ابلہان ۔ این زمان آیند در پیش شہان

(کمتر از ابہان) عذر احمق بدتر از جرمش بود ۔ عذر نادان زہر ہر دانش بود (عقل کی بربادی کا باعث)

عذرت اے خرگوش از دانش تہی ۔ من نہ خرگوشم کہ در گوشم نہی

گفت اے شہ ناکسے را کس شمار ۔ عذر استم دیدۂ را گوش دار

(نالائق سمجھ یا بچہ) خاص از بہر زکاۃ جاہ خود ۔ گمرہے را تو مران از راہ خود

वेगविवश्रानहिं निगलखावे । ज्यौं लूका लै नाहिं घुमावै
परत न तुला कारि दिखाई । यदपि अग्नि तहां अल्प रहाई
दीर्घ काल छिन छिन मिल होई । प्रभु अद्भुत गति लखत न कोई
जिह ऋषि गूढ़ मर्म यह जानों । विद्या वारिधि तिह अनुमानों

सद् गुरु संत समान चित सुद्ध सर्वज्ञ सुजान
तिनकी महिमा के कहन शारद शेष लजान

शशा आवत दूरहीं ते देखी । पंचानन (सिंह) भा क्रुद्ध विशेषी
निपट निशंक निरंकुश मानी । आवत चपल अचिंत गुमानी
भय सदैव अवनति कर हेतू । साहस संयुत दुख कर सेतू
सिंह समीप जबहि शश आवा । काल समान निनाद (शब्द) सुनावा
भालु (रीछ) बराह (सुअर) बाघ वृक (भेड़िया) नागा (हाथी) । नित्य विनीति देहिं सब भागा
तुच्छ शशा कि ढीठ अस होई । आज्ञा भंग करहिं किम कोई
शश कहि पाहि पाहि मृगराई (सिंह) । कृपा देखि कछु कर बडिठाई
स्वामि जान बिनवौं कर जोरी । क्षमिये नाथ चूक बड़ मोरी
कह खल नीच अधम अभिमानी । यारथ युक्ति मन में जिह ठानी
हइ उन्मत्त कौन अपराधू । करन प्रबोध नीच जिम साधू
युक्ति शून्य वादक सठ मानत । किधौं अबुध हमहू को जानत
कह शश बुद्धि हीन मैं स्वामी । आर्त्तत्राता (उबरता) दुखहर नामी
प्रभु निज प्रभुता ओर निहारी । मम दुख दूसह (कठिन) देहु सब टारी

بحر کو آبی بهر جوئی دهد | هر خسی را بر سر و رو می نهد
کم نخواهد گشت دریا زین کرم | از کرم دریا نه گردد بیش و کم

مقوله شیر

گفت دارم من کرم بر جای او
جامه هر کس برم بالای او

جواب خرگوش

گفت بشنو گر نباشد جای لطف | سر نهادم پیش اژدرهای عنف
من بوقت چاشت در راه آمدم | با رفیق خود سوی شاه آمدم
با من از بهر تو خرگوشی دگر | جفت و همره کرده بودند آن نفر
شیری اندر راه قصد بنده کرد | قصد هر دو همره آینده کرد
گفتمش ما بنده شاهنشهیم | خواجه تاشان که آن درگهیم
گفت شاهنشه که باشد شرم دار | پیش من تو یاد هر ناکس میار
هم ترا و هم شهت را بر درم | گر تو با یارت بگردی از درم
گفتمش بگذار تا بار دگر | روی شه بینم برم از تو خبر
گفت همره را گرو نه پیش من | ورنه قربانی تو اندر کیش من
لابه کردیمش بسی سودی نکرد | یار من بستد مرا بگذاشت فرد
ماند آن همره گرو در پیش او | خون روان شد از دلم بی خویش او
یار ما از زفتی سه چندان بد که من | هم بلطف و هم بخوبی هم به تن
بعد ازین زان شیر این ره بسته شد | حال ما این بود با تو گفته شد

[illegible]

सिंधु सरित सर पोखन हारा — तुच्छ मनराहि निज शिखन धारा
तासु अमित महिमा न घटाई — प्रगट प्रकाशित तेहि प्रभुताई
असीम

सिंहोवाच

बोलो हम अरि दर्प दलि देन दीन दुख खोइ
करहिं कृपा जन जानि हम जो जिहि लायक होइ
गये

शशाउवाच

जान दया भाजन हम होहीं — कठिन दण्ड पावहि हम सोहीं
पात्र
प्रभु प्रताप लखि प्रात पयाना — अनुज सहित चित मे हम ठाना
उभय अनुप उपहार उपाई — प्रभु की ओर चले दोउ भाई
हमरी मग मृगेन्द्र इक घेरी — कीन प्रशंसा हित घात घनेरी
भेंट
सिंह
पद गहि विनय कीन तिहि पाहीं — पुन्य पुंज प्रभु पर हम जाहीं
बोलो हमहि हो हिय नराजा — को प्रभु आन कहत नहिं लाजा
तोहि सहित तव नृपतहि मारौं — उतर देत मुख जीभ निकारौं
कहेउ जो प्रभु आज्ञा हम पावें — प्रभु दर्शन करि हम फिर आवें
छोड़ो छाक छलो जिन मोहीं — छिपै कहां बोल्यो नृप द्रोही
आपका बैरी
कीन प्रशंसा हम बहु भांती — तजेउ मोहि रखि लीन संगाती
सो असहाय रहेउ तिहि पासा — परबश मोर फिरन कर आशा
रह्यो सो पीन पुष्ट प्रभु लायक — मैं कृशा जान तजेउ बन नायक
देनिक दान दीन उन रोकी — प्रभु के अछत किरहे विशोकी
नित्य — प्रभु के होते

از وظیفه بعد ازین امید بُر — حق همی گویم ترا الحق هُژیر

گر وظیفه بایدت ره پاک کن
هین بیا و دفع آن بی باک کن

رفتن شیر با خرگوش

گفت بسم الله بیا تا او کجاست — پیش رو شو گر همی گوئی تو راست
تا سزای او و صد چون او دهم — ور دروغ است این سزای تو دهم
اندر آمد چون قلاووزی به پیش — تا برد او را به سوی دام خویش
سوی چاهی کو نشانش کرده بود — چاه مغ را دام جانش کرده بود
می‌شدند این هر دو تا نزدیک چاه — اینت خرگوشی چو آبی زیر کاه
آب کاهی را به هامون می‌برد — آب کوهی را عجب چون می‌برد
دام مکر او کمند شیر بود — طرفه خرگوشی که شیری را ربود
حال او کو قول دشمن را شنود — چون جزای آنکه شد یار حسود
دشمن ار چه دوستانه گویدت — دام دان گر چه ز دانه گویدت
گر ترا قندی دهد آن زهر دان — گر بتن لطفی کند آن قهر دان
چون قضا آید نبینی غیر پوست — دشمنان را باز نشناسی ز دوست
چون چنین شد ابتهال آغاز کن — ناله و تسبیح و روزه ساز کن
ناله میکن کای تو علام الغیوب — زیر سنگ مکر بد ما را مکوب

[illegible]

استعاذه از نفس اماره [illegible]
یا کریم از نفس ستار العیب [illegible]

भावित भसन अब फिर आवहि | कटु भेषज सन सबहि न भावहि (औषधि)

भूप जो चाहो भाग निज तो भी धरा भयदार
राज करिय रिपु रहित न तु राहिये सदा मन मार

सिंह का खरहा के साथ जाना

कहां सुपत्न चलि देहु दिखाई | अस कहि चलो संग बनराई
(वैरी अथवा दूसरा सिंह)
दुष्टहि दण्ड देहु नहिं देखन | दुर्ग न तोर अनूप जो पेखन
आगे शश मृगेन्द्र पुनि पाछे | जालिम जात नाल में आछे
(सिंह) (अन्याई)
सिंह दुसान इह निज मानो | पामर मारा हस्र नहित ठानो
(कुआ)
दोउ धर दृष्टि कूप दिश जाहीं | जिम कृशा सरित उदधि के माहीं
गिर से सदा बारि उपजावे | अहो अम्बु किम मेरु बहावे
(जल) (परबत)
शश प्रपंच पंचास्य फसावा | मशक फूंक जिम मेरु उड़ावा
(सिंह) (मच्छर)
शत्रु सिखावन जिन शिर धारी | परे सिंह सम कूप मंझारी
अहित कहे औ हित की बानी | लजिय अमृत हू विषवत जानी
(वैरी)
मधु मद जानि जिय अरि केरो | छीर माहिं बिष होइ घनेरो
(शहद शराब)
काल कराल लेन अरि ढांको | नहिं अरि मित्र परत न झांको
त्याग बुद्धि बल हरि बल लहिये | कुसमय जानि धर्म पथ गहिये
हे अखंड अज अंतर्यामी | बार बार पद कमल नमामी

मोह विवश मैं मन्द मति मानस मलिन अधीर
भूतनाथ प्रभु भव जनित हरहु भयंकर भीर
(संसार)

انچه در کونست اشیا هر چه هست / وانما جان را بهر صورت که هست

گر سگی کردیم ای شیر آفرین / شیر را مگمار بر ما زین کمین

آب خوش را صورت آتش مده / اندر آتش صورت آبی منه

از شراب قهر چون مستی دهی / نیستها را صورت هستی دهی

چیست مستی بند چشم از دید چشم / تا نماید سنگ گوهر پشم یشم

چیست مستی حسها مبدل شدن / چوب گز اندر نظر صندل شدن

این قضا ابری بود خورشید پوش / شیر و اژدرها شود زو همچو موش

ای خنک آنکو نکوکاری گرفت / زور را بگذاشت او زاری گرفت

هم قضا پوشد سیه همچون شبت / هم قضا دستت بگیرد عاقبت

این قضا صد بار گر راهت زند / بر فراز چرخ خرگاهت زند

از کرم دان اینکه می‌ترساندت
تا بملک ایمنی بنشاندت

پا واپس کشیدن خرگوش از شیر چون نزدیک چاه رسید

شیر با خرگوش چون همراه شد / پر غضب پر کینه و بدخواه شد

بود پیشاپیش خرگوش دلیر / ناگهان پا واکشید از پیش شیر

چونکه نزد چاه آمد شیر دید / کز ره آن خرگوش ماند و پا کشید

گفت پا واپس کشیدی تو چرا / پای را واپس مکش پیش اندرا

گفت کو پایم که دست و پای رفت / جان من لرزید و دل از جای رفت

رنگ رویم را نمی‌بینی چو زر / ز اندرون خود میدهد رنگم خبر

मैं नब माया माहि भुलाया । ज्ञान दान दीजै करि दाया
यदपि कृपण हम क्रूर कुचाली । तदपि करिय निज प्रण प्रतिपाली
शुभहि अशुभ अशुभहि शुभ जाने । अमृत भाव करि विषहि लुभाने
जबहि हृदय (ग़ाफ़िलोंत) उन्माद बढ़ावे । हमें असत्य सत्य दरसावे
व्याहृ (आदि) चक्षु नहिं चेत रहाई । चूर्ण होइ चित की चतुराई
भेद मोह मन भ्रम पड़ जावे । नेत्र रोग जिमि पीत दिखावे
कठिन कृतांत (काल) केर कुटिलाई । तरणि (सूर्य) धरा (पृथ्वी) भूधरि (पर्वत) धरि खाई
धन्य जगत में ते तन धारी । जिन तजि दम्भ दीनता धारी
विधि बश घोर (मैरावन) घटा घिर आवे । दारुण दुसह दुःख दरसावे
सोई सकृत सुख सदन सुहावन । छावे वर्ष मुनिन (कल्याण) मन भावन

नैसर्गिक (मुक्ति) गुण नहिं तजे दीजै (उत्पन्नकर्ता) तिहि सुख सार (अल्लाह)
धन्य सो दुख संशय दमन जिहि दरसे दीदार

कृष्ण के पास पहुंचते ही शश का खड़ा हो जाना

शश और सिंह चले संग जाहीं । द्वेष अमर्ष (क्रोध) ताप मन माहीं
भयउ सो गाढ़ सकृत (एकदम) तिह आगे । जनु शावक (हिरनका बच्चा) केहर भय लागे
कूप निकट भी पराभय लहेऊ । शिथिल शरीर मनहु शश भयेऊ
कोहे न बढ़त कहहु शश आगे । धमक धरहु पग भ्रम भय त्यागे
शश कह मम कर पद थिर नाहीं । कम्प शरीर शंक मन माहीं
मुख द्युति छीन गई अरुणाई । अंतर गति मुख देत बताई

حق چو سیما را معرف خوانده است چشم عارف سوی سیما مانده است

رنگ و بو غماز آمد چون جرس از فرس آگه کند بانگ فرس

رنگ روی سرخ دارد بانگ شکر رنگ روی زرد دارد صبر و نکر

در من آمد آنکه دست و پا برد رنگ روی و قوت و سیما برد

آنکه در هر چشمه آید بشکند هر درخت از بیخ و از بن برکند

در من آمد آنکه از وی گشت مات آدمی و جانور جامد نبات

این خود اجزااند کلیات از او زرد کرده رنگ و فاسد کرده بو

تا جهان گه صابر است و گه شکور بوستان گه حله پوشد گاه عور

آفتابی کو برآید نارگون ساعتی دیگر شود او سرنگون

اختران تافته بر چار طاق لحظه لحظه مبتلای احتراق

ماه کو افزود ز اختر در جمال شد ز رنج دق او همچون هلال

این زمین با سکون با ادب اندر آرد زلزله‌اش در لرز و تب

ای بسا کُه زین بلای ناگهان گشته است اندر جهان چون ریگسان

این هوا با روح آمد مقترن چون قضا آید وبا گشت و عفن

آب خوش کو روح را همشیره شد در غدیری زرد و تلخ و تیره شد

آتشی کو باد دارد در بروت هم یکی بادی برو خواند یموت

خاک کو شد مایهٔ گل در بهار ناگهان با وی برآید زرد و زار

حال دریا ز اضطراب جوش او فهم کن تبدیلهای هوش او

چرخ سرگردان که اندر جستجوست حال او چون حال فرزندان اوست

आप सभ्य सुर साधु सयाने । ऋषि मुख लखि अंतर गति जाने
चेष्टा चीन चतुर सब जाने । शब्द सुनत शकुनहि पहिचाने
मुख प्रसन्न सुख की सरसाई । दुख दरिद्र सुख की पियराई
हरी कृशांग कलेवर कांती । गाढा शोक गई शुभ शांती
चिन्तहि काल हाथ कर जोहा । व्यसन विवेक बसातु किनेही
जिहु बश विकल सुनहु बनराना । जीव जन्तु जड़ चेतन नाना

विद्याधर किन्नर अमर निर्जर देव पिशाच
चतुरानन मघवा अनल शशि रबि जिह इ नाच

सब जग उत्पति लय के माही । विकसे बन पुनि कबहु सुखाही
त्यों हि प्रभात प्रभा प्रगटाई । संध्या समय सहज कुकलाई
उडुगन गगन गहन बन चारी । चंद्र समीप प्रभा तिन टारी
कबहु कलानिधि कांति धनेरी । कबहु क्षीणा भाति परत न हेरी
कबहु धरा निज थिर दरसावे । पुनि भीषण भूकंप भ्रमावे
शैल विशाल शिखर शुचि शोभित । रज समान मलयानल क्षोभित
प्रगट प्रभंजन प्राण अधारा । काल प्रभाव करै संहारा
सलिल सदा प्राणिन सुखदाई । नीच कीच मिल प्राण सुखाई
जातवेद जग ज्योति पसारी । कारण पवन तासु लय कारी
भेषज भूरि भूमि उपजावे । नाहि सफल समीर सुखावे
उदधि रत्न उपजे जिह माही । व्याधि विषमता प्रगट दिखाही
गगन सबनि मिल विस्तार रहावे । घटमठ आदि अनेक कहावे

گه حضیض و گه میانه گاه اوج | اندرو از سعد و نحسی فوج فوج

گه شرف گاهی صعود و گه فرح
گه وبال و گه هبوط و گه ترح

از خواص جزو کی کلها مختلط | فهم می‌کن حالت هر منبسط
چون نصیب کهتران درد و رنج | کهتران را کی تواند بود گنج
چون کلیات را رنج است و درد | جزو ایشان چون نباشد روی زرد
خاصه جزوی کو ز اضداد است جمع | ز آب و خاک و آتش و باد است جمع
این عجب نبود که میش از گرگ جست | این عجب کین میش دل در گرگ بست
صلح دشمن وار باشد عاریت | دل بسوی جنگ تازد عاقبت
زندگانی آشتی ضدهاست | مرگ آنکه در میانشان جنگ خاست
صلح اضداد است عمر این جهان | جنگ اضداد است عمر جاودان
روزکی چند از برای مصلحت | با هم اند اندر وفا و مرحمت
عاقبت هر یک بجوهر باز گشت | هر یکی با جنس خود انباز گشت
لطف باری این پلنگ و ونبک را | الفتی داد و ببرد از ایشان جنگ را
لطف حق این شیر را و گور را | الف داده‌ست این دو ضد دور را
چون جهان رنجور و زندانی بود | چه عجب رنجور گر فانی بود
خواند بر شیر او ازین رو پندها | گفت من پس مانده‌ام زین بندها
شیر گفتش تو ز اسباب مرض | این بگو که خاص این استم غرض
پاسے را او بس شهیدی تو مرا | میدهی بازیچه است و واهی مرا

[illegible]

گفت ان شیر اندرین چه سالک است
اندرین قلعه ز آفات ایمن است

یار من اسپند ز من در چاه برد | بر گرفتش از ره وهمے راه برد
قعر چه بگزید هر کو عاقل است | زانکه در خلوت صفاهای دل است

ऊंच नीच मध्यम गति होई ॥ भल अनभल जानें किमि कोई ॥

तम प्रकाश गुण दोष मय कबहुं सुवस्तु कुवस्तु ॥
तुंग खर्व नहिं जब कहं होइ कबहुं उदय पुनि अस्त ॥

भूत स्वयं जब थिर न रहाहीं ॥ कुशल पकाय किहि लेखे माहीं ॥
महत माहि मुद प्रकट न काई ॥ अल्प अमर्ष अयन किन होई ॥
कारण माहि कुशल जहां नाहीं ॥ कारज तासु होइ परछाहीं ॥
विपुल विरोध सो भूत रहाहीं ॥ तिहि कर रचित शरीर निकाई ॥
अति आश्चर्य रहैं मिलि सोई ॥ सत्य सिंधु महिमा नहिं गोई ॥
शत्रु संधि नैमित्तिक जानो ॥ निज २ कारण करन पयानो ॥
जीवन तिन कर मेल उपावे ॥ तिनकी कलह सो मृत्यु कहावे ॥
भूतन प्रेम आयु निज जानहु ॥ विग्रह तासु मृत्यु पहिचानो ॥
कछुक दिवस मिलि रहें परस्पर ॥ वैर विरोध विसारि भूत वर ॥
पुनि प्रधान प्रभु पालि सजाई ॥ निज निज कारण माहि समाई ॥
महिमा अमित जगत पति केरी ॥ छाग बाघ रहें बैर निवेरी ॥
शश शार्दूल रहै इक संगा ॥ प्रगट तासु प्रभु प्रेम अभंगा ॥
मृग शृगाल जंतु जब आये ॥ जीवित रहत सदा किहि भाये ॥
शश शिक्षा शुचि कही घनेरी ॥ परतन पाव मृत्यु निज हेरी ॥
कहु निज व्यथा सिंह अस कहेऊ ॥ किहि कारण कोपित तुम भयेऊ ॥
जिहि कर मूढ रहेउ अरगाई ॥ कारण तासु कहहु समुझाई ॥

शश कहि कोप न कीजिय प्रभु याहि कूप कर वास ॥
मत्त महीप मृगेन्द्र जहं लीनि स्वच्छ मवास ॥

सौनि छोन प्राण मन येही ॥ लि सो गये उद पान हि तेही ॥
देखि निज छवि निपट भ्रम आवैं ॥ निज स्वरूप निर्मल विवेक चढ़ावैं ॥

ظلمت چه به که ظلمت‌های خلق — سر نبرد آنکه گیرد پای خلق

گفت پیش آ زخمم او را قاهرست — تو ببین کان شیر در چه حاضرست

گفت من سوزیده‌ام زان آتشی — تو مگر اندر بر خویشم کشی

تا به پشت تو من ای کان کرم — چشم بگشایم به چه در بنگرم

چونکه شیر اندر بر خویشش کشید — در پناه شیر تا چه می‌دوید

چونکه در چه بنگریدند اندر آب — اندر آب از شیر و او در تافت تاب

شیر عکس خویش دید از آب تفت — شکل شیری در برش خرگوش زفت

چونکه خصم خویش را در آب دید — مر ورا بگذاشت و اندر چه جهید

در فتاد اندر چهی کو کنده بود — زانکه ظلمش در سرش آینده بود

چاه مظلم گشت ظلم ظالمان — این چنین گفتند جمله عالمان

هر که ظالم‌تر چهش با هول‌تر — عدل فرمودست بدتر را بتر

ای که تو از ظلم چاهی می‌کنی — از برای خویش دامی می‌کنی

بر ضعیفان گر تو ظلمی می‌کنی — دان که اندر قعر چاهی می‌بنی

بر ضعیفان گر تو ظلمی می‌کنی — دان که اندر قعر چاهی می‌بنی

گرد خود چون کرم پیله بر متن — بهر خود چه می‌کنی اندازه کن

مر ضعیفان را تو بی‌خصمی مدان — از نبی اذا جاء نصر الله خوان

گر ضعیفی در زمین خواهد امان — غلغل افتد در سپاه آسمان

گر به دندانش گزی پرخون کنی — درد دندانت بگیرد چون کنی

شیر خود را دید در چه وز غلو — خویش را نشناخت آن دم از عدو

نفس خود را او عدوی خویش دید — لاجرم بر خویش شمشیری کشید

ای بسا ظلمی که بینی از کسان — خوی تو باشد در ایشان ای فلان

اندر ایشان تافته هستی تو — از نفاق و ظلم و بدمستی تو

परिय कूप नहिं करिय कुसंगू । संसारिन संग करि चित भंगू
कहि केहरि निशंक पग धरहू । सिंह अहै यहां कहि भ्रम हरहू
कह शश मोमें नाहिं मनुसाई (पराक्रम) । हां जो लेहु निज अंक लगाई (गोद)
नव बल पाइ लेहु तहां हेरी । चित चंचलता मिटै घनेरी
(बल) लीनि सिंह निज पीठ चढ़ाई । नहिं जानत शश की कुटिलाई
झांकन लाग कूप जल माहीं । शश सह सिंह देख निज छांही
(कालकाराजा सिंह) वारि बीच प्रति बिंब बिराजा । सम्भ्रम साज शशा वन राजा (भ्रमका बनाहुआ) (सिंह)
शूल शत्रु लखि अंध भुलाया । शश तजि कूद कूप में धावा
(दूसरेका) गिरै जो अवर न कूप खुदावै । बोइ बबूर दाख को खावै
(अन्याय) अघ भुजग भयंकर रक्षक । कहत कृपालु कवि: जग रक्षक
कुटिल कठोर कलह नित पावहिं । अयश पाइ पुनि नर्क सिधावहिं
(दूसरे) अवरन हेत जाल जिन ताना । फसन फसे निज माहि अयाना

दुर्दिन दीन दुखीन पर दीन अनीति दबाय (आग्नि)
निश्चय गहरे गर्त (गढ्ढा) में गिरै सो बेग गमार

करि अनीति दीनन पर नाना । करत रसातल मांहि पयाना (नीचदशा)
पाटकीट सूत्रहिं लपटाई (रेशमकाकीड़ा) । मरन हेत निज करत उपाई
(नेत) दीनन शक्तिहीन मत जानो । शम्भु शरण प्रशस्त तिन आनो
दुखियन हूक उठत मन्माहीं । धराधराधर कम्पित ताही (पृथ्वी) (परवत)
भुजबल भंज विकल नर करई । भुजन रहै तब भय नित भरही
(मारकर) क्रुद्ध क्रूर गा कूप मंझारी । निज रूपहि धरि पंथ निहारी
नहि अरि मीत क्रोध बश जानत । आत्म घात पर शर संधानेउ (वैरी)
लोकन मांहि जो द्वेष दिखावे । नन स्वभाव तिन में दरसावे
तुमरोहि द्वेष अनीति प्रमादा । तिन में प्रगट कूप जिम नादा (कुएंका शब्द)

آن توی دان زخم بر خود میزنی — بر خود این ساعت تو لعنت میکنی
در خود آن بد را نمی بینی عیان — ورنه دشمن بوده خود را بجان
حمله بر خود میکنی ای ساده مرد — همچو آن شیری که بر خود حمله کرد
چون بقعر خوی خود اندر رسی — پس بدانی کز تو بود آن ناکسی
شیر را در قعر پیدا شد که بود — نقش او آن کش دگر کس می نمود

هر که دندان ضعیفی میکند
کار آن شیر غلط بین میکند

ای بدیده خال بد بر روی عم — عکس خال تست آن از عم مرم
مومنان آئینه یکدیگر اند — این خبر را از پیمبر آورند

المؤمن مرآة المؤمن

پیش چشمت داشتی شیشه کبود — زان سبب عالم کبودت می نمود
گر نه کوری این کبودی دان ز خویش — خویش را بد گو مگو کس را تو بیش
مومن ار ینظر بنور الله نبود — غیب مومن را برهنه چون نمود
چونکه تو ینظر بنار الله بدی — در بدی از نیکوی غافل شدی
اندک اندک آب بر آتش بزن — تا شود نار تو نور ای بوالحزن
تو بزن یا ربنا آب طهور — تا شود این نار عالم جمله نور
آب دریا جمله در فرمان تست — آب و آتش ای خداوند آن تست
بی طلب تو این طلب مان داده — گنج احسان بر همه بگشاده
بی شمار و حد عطاها داده — باب رحمت بر همه بگشاده
بی طلب هم میدهی گنج نهان — رایگان بخشیده جان و جهان
جان و نان وادی و عمر جاودان — سایر نعمت که ناید در بیان
این طلب در ما هم ایجاد تست — رستن از بیداد یارب داد تست

با طلب چون ندهی ای حی ودود
کز تو آمد جملگی جود و وجود

कठिन कुठार हनन निज चरणा । लज्जित कर कुपथ आचरणा ॥
निज दुष्कृत नहिं मोहि दिखाई । अंध अहित अपनो अन्याई ॥
निज तनु बेधत कठिन कृपाणा । हरि जिमि हर्ष हने निज प्राणा ॥
करिय विचार बैठ मन माहीं । आपने दोष अंत कहु नाहीं ॥
निज प्रतिबिंब कूप में देखी । सिंह कल्प हन क्रोध विशेषी ॥

दीन दुखिन कर दुष्ट नर जिह भय कुधर डुलाहि ।
सिंह समान सहज सो नर तिह सुख सकल सिराहि ॥

तुम्हरेहि द्वेष तात प्रगटाई । लोक मंजु मन परत दिखाई ॥
जन मन मुकुर परस्पर धारहि । उज्ज्वल तज संशय सकल निवारहि ॥
आरसिला दर्श भासिगत जासू । नील निकाय निरीक्षति तासू ॥
अंध अन्य कर अशुभ विचारहिं । सज्जन सतत स्वदोष निहारहिं ॥
सत्य सत्य सज्जन सब अहहीं । तिमिर ज्ञाणाहित जन त्रुटि कहहीं ॥
होइ द्वेष युत दृष्टि तुम्हारी । सद गुण रहित अमंगलकारी ॥
द्वेष दहन शुचि वारि बुझाओ । तजि संशय सद्गुनि जिह पाओ ॥
विश्वम्भर बर वारि विचारू । देहु दलहु द्रुत द्वेष दवारू ॥
लीन्ह वारि धर भूधर भारे । सिंधु शक्र यम वपुष तुम्हारे ॥
बिनु अभिलाष काज सब सारा । कृपा अमित को बरणो पारा ॥
बिबिध दान प्रति पादन कीने । बहुल बुद्धि बल परत न चीने ॥
तजि प्रपंच पोखे बिधि नाना । तुम अकाम कामद भगवाना ॥
भूरि भक्ति पद प्रभु प्रभाव फल । कलिल कल्मष दहहि तुम्हरे बल ॥
अमित अनुग्रह आप उपाये । आशु अभीष्ट अर्थ मन भाये ॥

अंतर्यामी अमर अज सबहि कृपा हित दीन ।
ललित लाल सा पर सो प्रभु करले कि आशाहीन ॥
प्रार्थना ।

مژده بردن خرگوش سوی نخچیران که شیر در چاه افتاد

چونکه خرگوش از رهائی شاد گشت
سوی نخچیران دوان شد تا بدشت

شیر را چون دید محبوس ظالم خویش
سوی قوم خود دوید او پیش پیش

شیر را چون دید کشته ظالم خود
می‌دوید او شادمان و یار شد

شیر را چون دید در چه کشته زار
چرخ میزد شادمان تا مرغزار

دست میزد چون رهید از دست مرگ
سبز و رقصان در هوا چون شاخ و برگ

شاخ و برگ از حبس خاک آزاد شد
سر بر آورد و حریف باد شد

برگها چون شاخ را بشکافتند
تا ببالای درخت اشتافتند

با زبان شطأه شکر خدا
می‌سراید هر بر و برگی جدا

بی زبان هر بار در آب و گیاها
می‌ستاید شکر و تسبیح خدا

جانهای بسته اندر آب و گل
چون رهند از آب و گلها شاد دل

در هوای عشق حق رقصان شوند
همچو قرص بدر بی نقصان شوند

جسمشان در رقص و جانها خود مپرس
وانکه گرد جان از آنها خود مپرس

شیر را خرگوش در زندان نشاند
ننگ شیری کو ز خرگوشی بماند

در چنان ننگی و آنگاه این عجب
فخر دین خواهی که گویندت لقب

ای تو شیری در تک این چاه دهر
نفس چون خرگوش چون کشتت بقهر

نفس خرگوشت به صحرا در چرا
تو بقعر این چه چون و چرا

سوی نخچیران دوید آن شیرگیر
کابشروا یا قوم اذ جاء البشیر

مژده مژده کان عدوی جانها
کند قهر خالقش دندانها

مژده مژده ای گروه عیش‌ساز
کان سگ دوزخ بدوزخ رفت باز

آنکه از پنجه بسی سرها بکوفت
همچو خس جاروب مرگش هم بروفت

सिंह के मारे जाने की बधाई ले जाना खरहा का मृगराज के पास ॥

प्रमुदित शशा न हिं मन दुचिताई	मृगराज माहि चलो बन जाई
घोर व्यथा वश बाघहि देखी	चला मनहि धरि हर्ष विशेखी
हनि के रिपुहि हर्ष मन माही	मुख प्रसन्न निरखत परछाहीं
केहर लिङ कूप में जानी	निर्त्तत निड रचला अभिमानी
पेलि कृतान्त हि कीन पयाना	करत कुतूहल कलरव गाना
भूमि भेद अंकुर जिमि निकसे	पल्लव नव दल सहनर विकसे
लता परा संकुल बन माहीं	कुसुमित विटप सघन जिह छाहीं
पत्र पत्र प्रति रसन बनाई	प्रभु महिमा गावत सुखदाई
जिव्हाहीन पत्र दल नाना	गरणपति गूढ़ गुणान करमाना
फसौ प्रकृति में पुरुष पुरातन	निकस पाइ सुकृति बल सज्जन
प्रेम प्रकाश प्रफुल्लित होई	पूर्णचन्द्र सम प्रगटे सोई
अति आनंद जासु तन माहीं	आत्म दशा लखि कवि सकुचाहीं
आत्म सिंह सम समरथ सोई	धृक जो मन शश के वश होई
मति आच्छ कूप नात्म फसावा	ऋषि पंडित मुनि नाम धरावा

सिंह समान स्वतंत्र तू सोम कूप संसार
समर माहि मन शश सह शत सहस्त्र कीन संहार

मन स्वतंत्र विषयन बन माही	बंधन कूप जीव बिललाही
मृगराज माहि मुदित मन धावा	शुभ सूचक शुचि शब्द सुनावा
हनेउ विपुक्ष विपुल बल धारी	ईश्वर कोप कूप में डारी
रहहु निशंक शोक सब गयेऊ	नारक रौरव नायक भयेऊ
जंगल जीव जंतु बहु जानी	हने सो आज हतेउ उत्पानी

انکه چه ظلمش دگر کارے نبود — آه مظلومش گرفت و سوخت زود

گردنش بگرفت و مغزش بر درید — جان ما از قید محنت وارهید

جمع گشته انزمان جمله وحوش — شاد و خندان از طرب در ذوق و جوش

حلقه کردند او چو شمعے درمیان — سجده کردندش همه صحرائیان

تو فرشته آسمانی یا پری — بلکه عزرائیل شیران نری

هرچه هستی جان ما قربان تست — دست بردی دست و بازویت درست

راند حق این آب را در جوے تو — آفرین بر دست و بر بازوے تو [دعا]

بازگو تا قصه درمانها شود — بازگو تا مرهم جانها شود

بازگو ان قصه کو شادی فزاست — روح ما را قوت و دل را جان فزاست

گفت تائید خدا بود اے مهان — ورنه خرگوشے چه باشد درجهان

قوتم بخشید و دل را نور داد
نور دل مر دست و پا را زور داد

پند دادن خرگوش نخچیران که از مردن خصم شاد مشوید

از بر حق مے رسد تفضیل ها [فضیلت] — باز هم از حق رسد تبدیل ها

جمله فضل اوست و باید اینچنین — سجده اش از جان و دل آید همین [نصیحت]

حق بدور و نوبت این تائید را — مے نماید اهل ظن و دید را

چون بنوبت مید هند این دولت — از چه شد بد باد آخر سلطنت

هین بملک نوبتی شادی مکن — اے تو بسته نوبت آزادی مکن [گھمنڈ کرنا]

انکه ملکش برتر از نوبت تند [باری باری سے] — برتر از هفت انجمش نوبت زنند [جو فانی ہیں]

राज अनीति कछु काज न जाही । दुखित पुकार पजारेउ ताही
ग्रीवा गहि तिहि काल गिरावा । दीनन दुख दलि दैव बचावा
जम्बुक शश मृग गवय शृगाला (पशुभेद) । सबहि निमान सनेह विशाला
प्रेम प्रफुल्लित गई उदासी । करत प्रणाम सबहि बनबासी
तन धर देव कि धौं पग धारेउ । रुचिर रूप धरि कष्ट निवारेउ
अहो अहहिं हम आज्ञाकारी । बंदै सदा बल शक्ति तुम्हारी
तुमरे हि हाथ खेत विधि राखा । धन्य सो जीवन फल जिन चाखा
जिहि विध हनेउ दुष्ट दुखदाई । कहहु सुमंत्र अवगा सुखदाई
कहहु कृपालु कथा सुखकारी । हृदय हर्ष दायक भय हारी
शशा कहहु नाथ (ईश्वर) कृपा अधिकाई । शशा शशक सिंह हि गर्द मिलाही

प्रकृति पार प्रभु दीन मम आशा प्रकाश बढ़ाइ
पाइ पराक्रम प्रचुर (बहुत) बल पुष्ट प्रगल्भ (निडर) हि ढाइ

खरहा का मृगगणों को सिखलाना कि बैरी को मार आनन्द मनहो

राजहि मेरु कर कृपानिधाना । सबहि मेरु कर धूर समाना
अहो अमित (असीम) महिमा प्रभु केरी । तन मन आर्त दारिद घनेरी (दुःखी)
चपल चक्र (चंचल बुद्धिवाले) लखि चिंता लावें । मुनि जन विमल विरति (ज्ञान) उपजावें
चक्र विवश (ईश्वरप्रेरित) सब जगत घुमाई । जिह बलय ह्व अहमिति (अहंकार) अधिकाई
लोल (चलायमान) जगत पर कहा इतरावें । दृश्य पदारथ थिर न रहावें
आत्मानंद अचल अनुरागी । असल अमर पद के तिहि भागी

برتر از نوبت ملوک باقی اند ‌ ‌ ‌ دور دائم روح با ساقی اند

ترک این شرب ار بگوی یکدو روز ‌ ‌ ‌ درکنی اندر شراب خلد پوز

(گردش ملک — عارفت الٰہی)

یکدو روزے چہ کہ دنیا ساعتیست ‌ ‌ ‌ ہرکہ ترکش کرد اندر راحت است

(لذت جسمانی)

معنے الترک راحت گوش کن ‌ ‌ ‌ بعد ازان جام بقا را نوش کن

بر سگان بگذار این مردار را ‌ ‌ ‌ خرد بشکن شیشہ پندار را

اے شہان کشتیم ما خصم برون ‌ ‌ ‌ ماند زو خصمے بتر در اندرون

(لذت ایذا دنیوی)

کشتن این کار عقل و ہوش نیست ‌ ‌ ‌ شیر باطن سخرۂ خرگوش نیست

(یہاں خرگوش کا قابو نہیں)

دوزخ ست این نفس و دوزخ اژدہاست ‌ ‌ ‌ گو بدریاہا نگردد کم و کاست

ہفت دریا را در آشامد ہنوز ‌ ‌ ‌ گم نگردد سوزش این خلق سوز

سنگہا و کافران سنگ دل ‌ ‌ ‌ اندر آیند اندرو خوار و خجل

ہم نگردد ساکن از چندین غذا ‌ ‌ ‌ تا ز حق آید مرا و را این ندا

سیر گشتی سیر گوید نے ہنوز ‌ ‌ ‌ اینت آتش اینت تابش اینت سوز

عالمے را لقمہ کرد و در کشید ‌ ‌ ‌ معدہ اش نعرہ زنان ہل من مزید

چونکہ جزو دوزخ ست این نفس ما ‌ ‌ ‌ طبع کل دارد ہمیشہ جزوہا

حق قدم بر وے نہد از لامکان ‌ ‌ ‌ آنگہ او ساکن شود از کن فکان

این قدم حق را بود کو را کشد ‌ ‌ ‌ غیر حق خود کہ کمان او کشد

(برکت قدوم حق)

در کمان ننہند الا تیر راست ‌ ‌ ‌ این کمان را باژگون کژ تیرہاست

(انفعال ناقدمہ — تیر راستی تیر)

راست شو چون تیر و وا رہ از کمان ‌ ‌ ‌ کز کمان ہر راست بجہد بیگمان

प्रेम पियूष (अमृत) जे मग्न रहाहीं । धन्य सो नर ध्रुव धाम सिधाहीं (निश्चलगति)
मोह मलिन मद जो विस राखो । आत्मानंद अमिय तब पाओ
क्षणिक सुखद संसृत सुख सोई । तृण सम त्याग तृप्त नर होई
त्यागहि अमृतत्व अरु तिन गावे (मोक्षपद) । निश्रेयस (मोक्ष) पद त्याग दिवावे
जगत कुणप (मुरदा) कुक्कर संसारी । नाहि त्यागि पुनि होव सुखारी
हंत (हा!) हने उ जिह अर्ह तनाहि राहीं । शत्रु शिरोमणि अंतर माहीं
रहत बहिर्मुख बुद्धि सयानी । सो करि सकहि न निह कर हानी
कामहि रौरव नर्क कहावे । ज्ञानुज्वलन (कभी अग्नि) जड़ जाहि न पावे

शोषे अर्णव (समुद्र) अगम शत अभिमानी अघ गण
अमित लोक भक्षण करै न दीपन काम विनाश

मदन महीधर कोट पजारे । दुर्जन अगणित खात न हारे
तबहु क्षुधित नित नर्क रहाई । धृष्ट बुभुक्षित (भूखा) रहत सदाई
तड़ित (बिजली) कोट सम अनल प्रचंडा । छिन में भषे अमित ब्रह्मंडा
गिरन ग्रास कर बहु विधि गर्जे । तीक्ष्ण क्षुधा तपन (अग्नि) इव तरजे
कामहि होइ नर्क कर भ्राता । भषि त्रैलोकहि जो न अघाता
सम संतोष सो ताहि सिरावे । सरस सुधा सम ताहि बुझावे
काम धनुष आतम शर जासू । विन ईश्वर खैंचे को तासू
अगुण (सीधा) बाण सु सरासन प्रेरे । कुटिल वक्र (टेढ़ा) शर इह धनु केरे
ह्वे अवक्र (सीधा) शर इव धनु माहीं । सरल होत छोड़े धनु नाहीं

چونکه واگشتم ز پیکار برون ‌‌ روے آوردم به پیکار درون

قد رجعنا من جهاد الاصغریم ‌‌ با نبی اندر جهاد اکبریم

قوّتے خواہم ز حق دریا شگاف ‌‌ تا بسوزن برکنم این کوه قاف

سهل شیرے دان که صفها بشکند

شیر آنست آنکه خود را بشکند

در بیان پستی و شکستگی بزرگان

بر عمر آمد ز قیصر یک رسول ‌‌ در مدینه از بیابان نغول

گفت کو قصر خلیفه اے حشم ‌‌ تا من اسپ و رخت را آنجا کشم

قوم گفتندش که او را قصر نیست ‌‌ مر عمر را قصر جان روشنی است

گرچه از میری ورا آوازه ایست ‌‌ همچو درویشان مر او را کازه ایست

اے برادر چون ببینی قصر او ‌‌ چونکه در چشم دلت رست است مو

چشم دل از موے و علت پاک آر ‌‌ وانگهان دیدار قصرش چشم دار

هر که هست از هوسها جان پاک ‌‌ زود بیند حضرت و ایوان پاک

چون محمد پاک شد زین نار و دود ‌‌ هر کجا رو کرد وجه الله بود

چون رفیقی وسوسهٔ بدخواه را ‌‌ کے بدانی ثم وجه الله را

حق پدید است از میان دیگران ‌‌ همچو مه اندر میان اختران

هر کرا باشد ز سینه فتح باب ‌‌ او ز هر ذره ببیند آفتاب

دو سر انگشت بر دو چشم نه ‌‌ هیچ بینی در جهان انصاف ده

گر نبینی این جهان معدوم نیست ‌‌ عیب جز انگشت نفس شوم نیست

समरसपत्न सहज हम जीते	अंतर अहित रहे विपरीते
(बैरी)	(बैरी) (उलटे)
बीर न होइ जो जगत लरई	शूर वही जो मन बश करई
हे प्रभु बिन तब कृपा अघाई	पाप पहाड़ सके को ढाई

समर सहस दल रिपु हने सो नहिं सिंह कहाइ
सोम सोई नरसिंह है जिह कर अहम नसाइ
(हेमुन)
महात्मा लोगों का दीनता ही कर्तव्य था

श्री गुरु उमर आत्मवित पाहीं	गा मुमुक्ष खिन्न असार साहीं
	(असार) (दोषों से दुखित)
कहां प्रासाद नृपति कर भाई	बाजि बांध ठहरे नहां जाई
(महल)	(घोड़ा)
लोकन कहेउ कोट नहि तासू	आत्मिक सुख आयतन जासू
(किला)	(स्थान)
श्रीमत तिह लोकन कर गाथा	पर्णशालि ऋषि सरस बनाथा
	(फूस की कुटी)
तिह कर रुचिर जनाश्रय भाई	नेत्र दोष नहि पर न लखाई
(शोभित) (मंडप)	
विगत दोष लोचन जब होई	मन्दिर तासु बिलोकन सोई
जिह मन विगत मान मद मोहा	सहज पाव सोइ सुख संदोहा
	(समूह)
हरि यश विशद जे मगन रहाहीं	जहां मन जाइ समाधि तहाहीं
मन संकल्प सहस कि खानी	भटकत अंध अधम अभिमानी
प्रभु प्रकाश पूरित सब ठाहीं	उदय इन्दु जिम उडगन माहीं
	(चंद्रमा)
हृदय जासु हिंसा हठ हीना	रुचिर राम रूप हि तिन चीना
अंगुलि दोउ लोचन पर आने	कछु न दीखत तिह जीव जहाने
(उंगली से आंखि बून्द कर ले)	
तदपि अभाव न जग कर होई	अंगुलि दोष जान सब कोई

نور چشم انگشت را بر دار هین
وانگهانی هرچه میخواهی به بین

روی و سر را جامها پیچیده اند ۔ لاجرم با دیده و نادیده اند

آدمی دیدست باقی پوست است ۔ دید آنست آنکه دید دوست است

چونکه دید دوست نبود کور به ۔ دوست باقی کو نباشد دور به

چون رسول روم این الفاظ تر ۔ در سماع آورد شد مشتاق تر

رخت را و اسپ را ضایع گذاشت ۔ دیده را بر جستن عمر گداشت

بر طرف اندر پی آن مرد کار ۔ میشدی پرسان او دیوانه وار

کاین چنین مردی بود اندر جهان ۔ وز جهان مانند جان باشد نهان

جست او را تاش چون بنده شود ۔ لاجرم جوینده یابنده شود

دید اعرابی زنی او را دخیل ۔ گفت عمر نک بزیر آن نخیل

زیر خرما بن ز خلقان او جدا ۔ زیر سایه خفته بین سایه خدا

آمد او آنجا و از دور ایستاد ۔ مر عمر را دید و در لرزه فتاد

هیبتی زان خفته آمد بر رسول ۔ حالتی خوش کرد بر جانش نزول

مهر و هیبت هست ضد همدگر ۔ این دو ضد را جمع دید اندر جگر

گفت با خود من شهان را دیده ام ۔ پیش سلطانان مه بگزیده ام

از شهانم هیبت و ترسی نبود ۔ هیبت این مرد هوشم را ربود

بی سلاح این مرد خفته بر زمین ۔ من بهفت اندام لرزان چیست این

هیبت حقست این از خلق نیست ۔ هیبت این مرد صاحب دلق نیست

هر که ترسید از حق و تقوی گزید ۔ ترسد از وی جن و انس و هر که دید

आँखि के तारा मने

पंकज आंखि मानतु मन भय अंगुलि लेहु हटाइ

हे पुत्र

जड़ जंगम जग में जितने सब ही परंतद साइ

लिपटे नैन आवरण पट माही	लोचन सहित अंध है जाही
नर न होइ जो दृष्टि न धारे	दृष्टि वही जो अभीष्ट निहारे
जो चख हीन जो प्रिय नहि देखे जो आत्मा को न देखे वह अंधा है	नित्य न होइ तौ प्रिय किहि लेखे जो सदैव न रहे तो वह आत्मा नही
सुनि मुमुक्षु अस अमृत बानी	हृदय लालसा अति अधिकानी
बाजि बांधि वन बसु बिहाई	दर्शन प्रीति न हृदय समाई
चहुं दिशि प्रेम विवश सो धावा	और भजन तनु बोध भुलावा
पावन पुरुष प्रगट परिधाना	दृष्टि न आवत प्राण समाना
कर्म वचन मन तिह के नेरो	पावत जिह पर नेह घनेरो
युवति रूप कीतिहुं दिश निहारी स्त्री	बोली वचन सुहृद अनुहारी तिथि की समान
उमर अमन जन सकल बिहाई नाम महात्मा	सोवत नर जिमि जहां अमराई
इमि दिश देखि हूं भयो ठाढ़ा	पुलक रोम हरषा तनु बाढ़ा शरीर पाषाण रोमांच लहे
नारि के नैन नासा तन माही उसके नेत्र को देख	आगे विश्राम सुख मन न समाही
आसा भास दोउ बिन ना सुभाऊ	मन में प्रगट दृष्टि ना आऊ
करि विचार सो हृदय विशेषी	[illegible]
कहहु नाम नाहि मम उर आसा	इह देख न किमि वेग प्रकाशा
अब शब्द इह हि बिप न कोई	किह नौ चि कस्य नाय महोई
अर्क को भय न होइ मन मेरे	ईश्वर भय मम आमान मेरे
ईश्वर भय जिन के मन माहीं	दूजो देव नर नाहि डराहीं

اندرین فکرت بسجدت دست بست ... بعد یک ساعت عمر از خواب جست
کرد خدمت مر عمر را و سلام ... گفت پیغمبر سلام انگهه کلام
هر که ترسد مر ورا ایمن کنند ... مر دل ترسنده را ساکن کنند

اندل از جا رفته را دلشاد کرد
خاطر ویرانش را آباد کرد

بعد ازان گفتش سخنهای دقیق ... در صفات پاک حق نعم الرفیق
(سخن ہائے)
حال چون جلوه ست زان زیبا عروس ... وین مقام ان خلوت آمد با عروس
جلوه بیند شاه و غیر شاه نیز ... وقت خلوت نیست جز شاه عزیز
جلوه کرده عام و خاصان را عروس ... خلوت اندر شاه باشد با عروس
هست بسیار اهل حال از عارفان ... نادرست اهل مقام اندر میان
از منازلهای جانش یاد داد ... وز سفرهای روانش یاد داد
وز زمانی کز زمان خالی بدست ... وز مقام قدس اجلالی بدست
(روحانی حالت)
وز هوایی کاندرو سیمرغ روح ... پیش ازین دیدست پرواز و فتوح
(جیسکہ حصار بن اڑ کر)
هر یکی پروازش از آفاق بیش ... وز امید و نهمت مشتاق بیش
چون عمر اغیار رو را یار یافت ... جان او را طالب اسرار یافت
(یعنی ظاہر عمر تھا)
شیخ کامل بود و طالب مشتهی ... مرد چابک بود و مرکب درگهی
(اسپ تیار معہ زین)

دیدان مرشد که او ارشاد داشت
(مادہ قبولیت موجود تھا)
تخم پاک اندر زمین پاک کاشت

[illegible]

संशय

असमंजसबश मन अनुरागा । इक मुहूर्त पाछे मुनि जागा

गिरेउ अवनि तल करत प्रणामू । आशिष दे पूछेउ मुनि नामू

पृथ्वी

देखि सभीत अभय तिह कीन्हा । लोचन सजल लाय उर लीना।

संसृत सागर मोह जल तृष्णा तरंग अपार
बोहित ज्ञान चढ़ाइ किय सदगुरु नाविक पार

नाव — मल्लाह

कहि विराग पुन ज्ञान कहानी । वर विज्ञान भक्ति रससानी

वरणहिं कांता केर निकाई । दम्पति मिलन मोद न दिखाई

स्त्री — स्त्रीपुरुष — आनंद

ललन स्वरूपहि जग न निहारहिं । सकल विलोक विविक्त विहारहिं

स्त्री — एकान्त

जगन दृष्टिगत तासु स्वरूपा । विजन रहस्य जानि तिहि भूपा

एकांत

जग में बहु साधु गुन खानी । कोइ कोइ ऋषि मुनिवर विज्ञानी

ज्ञान भूमिका सकल सुनाई । आत्म अवस्था अमल दिखाई

आत्मा अमर अनादि बतायो । शाश्वत शुद्ध सनातन गायो

नि[illegible]रवर्तमान

अमित शक्ति तिह माहि रहाई । दृश्यित अनातमन्हि न कसाई

इक इक शक्ति सहज सुखदाई । [illegible] विजन मति गति कहत न जाई

एक भी शक्ती आत्मा की सुखदाई है और उसमें अनेक शक्ति है

उमर आनिथि अधिकारी जानेउ । सहमत सुधी जानि सनमानेउ

बुद्धिमान

शिष्यहिं मुनि सुठि सरल निहारा । चपल तुरंग चतुर असवारा

निरखि मुमुक्षः मंजु मति विगत मोह मद मान
मंगल [illegible] गुदेन मन दीनेउ मंत्र महान

سوال کردن رسول از امیر المومنین عمر رضی الله عنه

مرد گفتش کای امیر المومنین | جان ز بالا چون در آمد بر زمین
مرغ بی اندازه چون شد در قفص | گفت حق بر جان فسون خواند و قصص
بر عدمها کان ندارد چشم و گوش | چون فسون خواند همی آید بجوش
از فسون او عدمها زود زود | خوش معلق میزند سوی وجود
باز بر موجود افسونی چو خواند | زود او را در عدم دو اسپه راند
گفت در گوش گل و خندانش کرد | گفت با سنگ و عقیق کانش کرد
گفت با جسم آیتی تا جان شد او | گفت با خورشید تا رخشان شد او
باز در گوشش دمد نکته مخوف | در رخ خورشید افتد صد کسوف
گفت با نی تا که شکر گشت او | گفت با بی و گوهر گشت او
تا بگوش ابر آن گویا چه خواند | کو چو مشک از دیده خود اشک راند
تا بگوش خاک حق چه خوانده است | کو مراقب گشت و خامش مانده است
در تردد هر که او آشفته است | حق بگوش او معما گفته است
تا کند محبوسش اندر دو گمان | آن کنم کان گفت یا خود ضد آن
هم ز حق ترجیح یابد یک طرف | زان دو یک را برگزیند زان کنف

گر نخواهی در تردد هوش جان
کم فشار این پنبه اندر گوش جان

تا کنی فهم آن معماهاش را | تا کنی ادراک رمز و فاش را
پس محل وحی گردد گوش جان | وحی چه بود گفتن از حس نهان

ग्रन्थकर्ता मुमुक्षु का महात्मा से

परमसंत जिनकोंपुनि तोही — कृपाकटाक्ष बतावहु मोही

अमर जीव किम बंध पसावा — तब मुनीश मृदु वचन सुनावा

प्रभु व्यापक सचराचर राई — इच्छामात्र सृष्टि उपजाई

ऊर्णनाभि जिमि तंतु पसारे — तिम प्रभु यह सब जग विस्तारे

(मकड़ी)

पुनि प्रभु जवलय चाहिय कीना — कल्प कल्प प्रति करत नवीना

अरुण प्रसून हरित तरु लाये — पाहन मांहि रतन उपजाये

(लाल) (फूल)

प्राण विभूषित करत जड़ काया — सहसकिरण सम आपु उपाया

(सूर्य)

निज प्रकाश कर करत गुमाना[१] — ऐस रहु तिह दीन समाना

तिह प्रसाद पुनि मधुर रसाला — वारि शुक्ति गत मौक्तिक माला

(ईख-गन्ना-आम) (सीपी)

तिंह प्रसाद वारिद जल दाता — उपजें शुद्धि जोंक जल ज्ञाता

(बादल) (कमल)

प्रभु प्रसाद वसुधा गुण खानी — सरसिज प्राणि समता उपजानी

(पृथ्वी)

चिंता चक्र चित जिन केरे — कर्म अनुसार फसे प्रभु प्रेरे

दारुण द्वंद दशा के मांही — दहुदिशि दुविधा थिर न रहाही

हार गहे एकहि तिन हेतू — ईश्वर बिनु को होइ न चित चेतू

(अंतमें)

आम संतोष आश्रय यानकरु नहुं देवानुमनाद

शिशुकर श्रद्धा श्रवण सों का हो तुल प्रमाद

(पुत्र) (गांठ) (गफलत)

गूढ रहस्य अनूप लखावे — मिट ग्रंथि भ्रमजाल नशावे

निगम निचोर सुनें सब प्रानी — आत्मकल्याण प्रमोद बोधानी

(वेद)

१ [illegible]

گوش جان و چشم جان جز این حس است | گوش عقل و گوش حس زین مفلس است

لفظ جبرم عشق را بے صبر کرد
وانکه عاشق نیست حبس جبر کرد

این معیّت با حق است و جبر نیست | این تجلی مه است و ابر نیست
ور بود این جبر جبر عامه نیست | جبر ان امّاره خودکامه نیست
جسمین بالکل مجبوری
جبر را ایشان شناسند اے پسر | که خدا بگشادشان در دل نظر
غیب و اینده بر ایشان گشت فاش | ذکر ماضی پیش ایشان گشت لاش
اختیار و جبر ایشان دیگر است | قطرها اندر صدفها گوهر است
هست بیرون قطره خورد و بزرگ | در صدف آن درهاے خورد و سترگ
طبع ناف اهوست ان قوم را | از برون خون و زدرون شان مشکها
تو مگو کاین نافه بیرون خون بود | خود بود و در ناف مشکین چون بود
تو مگو کاین مس برون شد محتقر | در دل اکسیر چون گشت است زر
اختیار و جبر در تو بد خیال | چون در ایشان رفت شد نور جلال

له جیسا خود بخود ہوتا ہے ویسا ہی بموقع ہوتا ہے ایسے ہی عارفوں کو اور اوروں کو نظر نہیں آ

نان چو در سفره است ان باشد جماد
در تن مردم شود او روح شاد
قوت جانست این اے راست خوان
تا چه باشد قوت ان جان جان

...ست قوت تن ولیکن در نگر | تا که قوت جان چه باشد اے پسر
...وشت پاره آدمی از زور جان | ے شگافد کوه را با بحر و کان

आत्मदृष्टि उद्बोध कराई (ज्ञान)	इन नयनन नहिं परत लखाई

आपहि परवश जानि प्रेमी विरति बढ़ावहीं (ज्ञाने)
कामी काम भुलानि विवश आप को जान कर

आत्मसमर्पण विवश न कराई	करै प्रकाश न आवृत धरई (पादा)
ईश बशात अहं पद जाई	काम बशात बढ़ै कुटिलाई
ईश अधार रहै नर सोई	देव दृष्टि जिनकी दृढ़ होई
ते त्रिकालदर्शी हैं जाहीं	सब जग जिमि कैरव कर माहीं (कमल)
बल निरबलता की परछाहीं	होइ असाधारण तिन माहीं (स्त्रीयों में)
न्यून अधिक जल बिंद समाना	शुक्ति माहि मुकाहल नाना
कृष्णसार मृग नाभि समोई (कस्तूरी का मृग)	मलिन रुधिर मृगमद सम होई
तिहि पुनि शोणित कहत न आवे (रुधिर)	मृगनाभी कछु दिवस रहावे
लोह कालिमा काहि सक कोई	पारस परस कनक जब होई (सोना)
स्ववश विवश सब तुमरेहि भाये	मंगलमय मुनि मानस पाये

जगत माहि प्रभु जड़ रचे भोग अन्न और तोय
जंगम जठरानल सो मिल जीवन दाता सोय (चैतन्य जठराग्नि)
पुरुष शक्ति करि पिंड मिल जो होइ प्राणसमान
प्रबल पराक्रम को कहै जो प्राणन कर प्रान

जीव अल्पज्ञ के संसर्ग
से जड़ अग्नि शक्ति को
पाता है फिर परमात्मा
के मिलने की शक्ति
कौन कहै

शारीरिक बल अन्न बढ़ावै	सद्गुण आत्मिक शक्ति लावै
बुधिबल विपुल गुरुजन धारी	नारि बायु गिरि बश कर डारी

گر گشاید دل سر انبان راز
جان بسوی عرش سازد ترکتاز

ور زبان گوید ز اسرار نهان
آتش افروزد بسوزد این جهان

کرد حق و کرد ما هر دو ببین
کرد ما را هست دان پیداست این

گر نباشد فعل حق اندر میان
پس مگو کس را چرا کردی چنان

خلق حق افعال ما را موجد است
فعل ما آثار خلق ایزد است

لیک هست آن فعل ما مختار ما
زو جزا گه نور ما گه نار ما

ناطقی یا حرف بیند یا غرض
کی شود یکدم محیط دو عرض

گر بمعنی رفت شد غافل ز حرف
پیش و پس یکدم نبیند هیچ طرف

آن زمان که پیش بینی آن زمان
تو پس خود کی ببینی این بدان

چون محیط حرف و معنی نیست جان
چون بود جان خالق این هر دوان

حق محیط جمله آمد ای پسر
وا ندارد کارش از کار دگر
(یعنی اسکو ایک کام دوسرے سے روک نہیں سکتا)

گفت ایزد جان ما راست کرد
چون ندا آید انکه را خود دست کرد

[illegible]

جس نے پیدا کیا وہ اسکو نہیں جانتا

طیبات از بهر که للطیبین
یار را خوش کن برنجان و ببین

[illegible]

دست کو لرزان بود از ارتعاش (مثال، رعشه)
وانکه دستی را تو لرزانی ز جاش

هر دو جنبش آفریده حق شناس
لیک نتوان کرد این با آن قیاس

زان پشیمانی که لرزانیدیش
چون پشیمان نیست مرد مرتعش

مرتعش را کی پشیمان دیده
بر چنین جبری چه بر پیچیده

بحث عقلست این چه عقل آن حیله گر
تا ضعیفی ره برد آنجا مگر

عقل حق الیقین کے سمجھنے قاصر ہے

अमल अशल्य भरो उचित लावे । लोकांतर लख माहि लखावे
गूढ़ रहस्य रसन यदि भावे । जगत जाल ज्वर जनकर नाशे
जिह्वा । अलदृष्टि जादू
अभ मताप सु प्रगट जग माहीं । हम हु स्वच्छंद दाक्षिण्यो कछु नाही
करनल माहि दरस यदि नाहीं । वृथा दोष किम दीजिय ताही
कुष्ठेन
कर पद नयन बुद्धि हर दीने । सुख साधन दे समरथ कीने
हम स्वतंत्र मद सद के माही । नर्क स्वर्ग जिह बश हम जाही
सत असत
शब्द सुने वा अर्थ बिचारे । युगपत ज्ञान न मन बिस्तारे
एकसाथ
अर्थ माहि गा शब्द भुलाना । सकृद उभय दिश होउ न ज्ञाना
एकदम । दोनों
पुरुष अनोखा पूर्व दिश पेखे । पृष्ठ माहि सो किह विधि देखे
अल्प ज्ञान बश जीव बिचारा । कर न सकै संभव संहारा
उत्पत्ति । प्रलय
सर्वाधार सर्व गत स्वामी । शुचि सर्वज्ञ अशोक अकामी
कहा छिपै अनुपम करतारै । जो जग सृज पाले संहारै

शम्भु शक्ति मत शुद्धि शुचि शमन शोक संताप
शोकनाशक
शुभ गति अधिकारी सोई जो निर्मद निष्पाप
निरभिमान

कंपे कंपवायु कर इकतर । एक कंपावे जानि बूझकर
हृदय धड़कने की बीमारी । हाल
कंपन दशा दुहुन सम होई । भूरि भेद भाखे सब कोई
व्रीडा बहुत एक मन माहीं । एक रोग बश लज्जा नाहीं
लज्जा
रोगी अब मानित नहि होई । दीन हि दोष देय नहि कोई
लज्जित
तहां कौतुकी कुतूहल कारी । कुंठित [illegible] बुद्धि बिचारी

بحث عقلی گر در و مرجان شوند ۔ ان دگر باشد که بحث جان بود

بحث جان اندر مقامی دیگرست ۔ بادهٔ جان را قوامی دیگرست

بحث عقل و حس اثر دان یا سبب ۔ بحث جانی یا عجب یا بوالعجب

ضوء جان آمد نماند ای مستضی ۔ لازم و ملزوم و نافی مقتضی

زانکه بینایی که نورش بازغ است ۔ از عصا و از عصاکش فارغ است

گه کهیل ایم ان زندان اوست ۔ ور لعب علم ایم ان ایوان اوست

گه بخواب ایم مستان وییم ۔ ور به بیداری به دستان وییم

ور بگرییم ابر پر زرق وییم ۔ ور بخندیم ان زمان برق وییم

ور بخشم و جنگ عکس قهر اوست ۔ ور بصلح و عذر عکس مهر اوست

ما کییم اندر جهان پیچ پیچ
چون الف او خود چه دارد هیچ هیچ

چون الف گر تو مجرد می شوی ۔ اندرین ره مرد مفرد می شوی

جهد کن تا ترک غیر حق کنی ۔ دل ازین دنیای فانی بر کنی

از عمر چون ان رسول این را شنید ۔ روشنی در ویش آمد پدید

محو شد پیشش سوال و هم جواب ۔ گشت فارغ از خطا و از صواب

اصل را دریافت بگذشت از فروع ۔ بهر حکمت کرد در پرسش رجوع

گفت ان چه حکمت بود و سر ۔ حبس ان صافی درین جای کدر

اب صافی در گلی پنهان شده ۔ جان باقی بستهٔ ابدان شده

گفت تو بحثی شگرفی میکنی ۔ معنیی را بند حرفی میکنی

विपुल बुद्धि बल करत उपाधी	आत्मदशा निर्भय निरुपाधी
मद में रहै मन्द मति सोई	प्रेम पियूष कि जानहि सोई
[1]बुद्धि विवेक साधन श्रुति गाई	(अछत) आत्मानंद माहि अरगाई
जब पुर माहि प्रकाश बढाई	साधन रहैं न अनुभव पाई
(हृदय) जो सचेतु जिहं सहज प्रकाशा	ते कि करहि दूसर जन आशा
जब जड़ताउहि जाल फसाये	जबहि बोध सुख सदन सिधाये
(अज्ञान) स्वप्न समाधि स्वरूपहि लागे	(ज्ञान) (परमात्मा) जाग्रत जप जोगहि अनुरागे
तासु अभ्र जब रोदन ठाने	तासु तडित जब हांसी आने
विग्रह तासु क्रोध की छाया	(बिजली) तासु दया जब बिसरै माया

सखा सत्य हम शून्य सम संसृत सागर माहि
शिव शरणागत तोयनिधि तहां तजन तर्क निराहि (समुद्र)

शून्य समान शक्ति निज खोई	अद्वितीय हरिजन नर होई
होइ अनन्य ईश्वर आराधे	भव ते मन संयम कर साधे
सुनि मुमुक्ष अस अद्भुत बानी	भा प्रकाश मन तापसि रानी
भयेउ मगन सुख सागर माहीं	पुण्य पाप दुख सुख जहं नाहीं
यद्यपि मूल मंत्र सोइ पावा	दृढ निश्चय हित तर्क बढावा
कृपासिंधु मोहि कहौ बुझाई	जिह अज अमर अमल श्रुति गाई
किहि विधि भव बंधन सोई आवा	निज स्वरूप मिल मोह भुलावा
बोले मुनि पावन मति तोरी (पवित्र बुद्धि)	(अपने स्वरूप को मोह से मिलकर भुलाय) पूछेउ प्रश्न प्रेम रस बोरी

१ – बुद्धि विवेक ... [illegible]

تو که حیزی دی کار تو با فایده است　　پس چرا در کار کاهل اری تو بست

شکر بیهدان طوق بر گردن بود　　نی جدال و نیز شر و گردن بود

سرکه را گر راه یابد در جگر　　گو برو سرکنگبین شو از شکر

معنی اندر شعر جز با خبط نیست　　چون فلاسنگ است و اندر ضبط نیست

آن رسول از خود بشد زین یک دو جام　　نی رسالت یاد ماندش نی پیام

والِه اندر قدرت الله شد
آن رسول اینجا رسید و شاد شد

سیل چون آمد به دریا بحر گشت　　دانه چون آمد بمزرع کشت گشت

موم و هیزم چون فدای نار شد　　ذات ظلمانی او انوار گشت

سنگ سرمه چونکه شد در دیدگان　　گشت بینایی شد آنجا دیدبان

ای خنک آن مرده کز خود رسته شد　　با وجود زنده پیوسته شد

وای آن زنده که با مرده نشست　　مرده گشت و زندگی از وی بجست

چون تو در قرآن حق بگریختی　　با روان انبیا آمیختی

هست قرآن حالهای انبیا　　ماهیان بحر پاک کبریا

ور بخوانی و نه قرآن پذیر　　انبیا و اولیا را دیده گیر

ور پذیرایی چو بر خوانی قصص　　مرغ جانت تنگ آید در قفص

مرغ کو اندر قفص زندانی است　　می نجوید رستن از نادانی است

روحهایی کز قفصها رسته اند　　انبیا و رهبر شایسته اند

از برون آوازشان آید ز دین　　که ره رستن ترا اینست این

मंदहु (अज्ञानी) करत लाभ चित धारे । किम सर्वज्ञ (ईश्वर) करे अविचारे
तासु भक्ति हित होइ हमारे । तर्क त्याग तिह शरण पधारे
बिपुल बाद बल ब्रह्म न जाने । मायिन (मायापति) मिल माया मति आने
ललित रहस्य लेख नहि आवे । नहि समुद्र घट माहि समावे
सुनि मुमुक्षु सुध अपन भुलावा । प्राण अपान गता हि बिसरावा

भानि मगन निज सुख (आत्मसुख) निपट निर्मद अरु निर्वाद
नर्तन फल लहि निमिष जनु नरपति (राजा) भयेउ निषाद (नीचजन)

सरित सिंधु मिल सागर होई । धान्य (बीज) भूमि गत द्रुम (वृक्ष) गति सोई
पावक (अग्नि) परसत काष्ठ प्रकासे । तजि तम रूप ज्वलन (अग्नि) हुइ भासे
पाइ सुमं । सबहि सुखदाई । जिम अंजन दृग दोष नसाई
धन्य सो नर जग में बड़ भागी । जिन ऋषि मुनि मिल इच्छा त्यागी
धृक जो सकामिन संगत भायो । जीवन बाद हुइ जन्म बिगोयो
सुलभ न सत संगति जग माहीं । स्मरण करिय सद्ग्रंथन पाही
सदाचार जहां विदित ऋषिन के । भीन मनोहर मोक्ष सरित के
जो न धारना में मन राता । दर्शन मात्र तासु फल भ्राता
अरु जो मनन माहीं मन लागा । तन ममता तजि होइ बिरागा
फसि मलीन तन जिह न गलानी । चहे न मुक्ति इह सम कहा हानी
भूरि भाग भव बंधन छोरी । भये संत संभ्रम घट फोरी
कहत सुकृत सज्जन सत भाऊ । इह सम होइ न आन उपाऊ

ما بدین رستیم زین تنگین قفص
جز که چاره نیست این ره زین قفص

خویش را رنجور سازد زار زار
تا ترا بیرون کنند از اشتهار

کاشتهار خلق بند محکم است
در ره این از بند آهن کے کم است

حکایت بر سبیل تمثیل

بود بازرگان مر او را طوطئے
در قفص محبوس زیبا طوطئے

چونکه بازرگان سفر را ساز کرد
سوئے هندوستان شدن آغاز کرد

هر غلام و هر کنیزک را ز جود
گفت بهر تو چه آرم گوے زود

هر یکے از وے مرادے خواست کرد
جمله را وعده بداد آن نیک مرد

گفت طوطی را چه خواهی ارمغان
کارمت از خطهٔ هندوستان

گفتش آن طوطی که آنجا طوطیان
چون ببینی کن ز حال من بیان

کان فلان طوطی که مشتاق شماست
از قضاے آسمان در حبس ماست

بر شما کرد او سلام و داد خواست
از شما چاره و ره ارشاد خواست

گفت میشاید که من در اشتیاق
جان دهم اینجا بمیرم از فراق

این روا باشد که من در بند سخت
گه شما بر سبزه گاهے بر درخت

این چنین باشد وفاے دوستان
من درین حبس و شما در بوستان

یاد آرید اے مهان زین مرغزار
یک صبوحے در میان مرغزار

یاد آرید از محبت هاے ما
حق مجلس هاے صحبت هاے ما

یاد یاران یار را میمون بود
خاصه کان لیلے و این مجنون بود

इहविधि हम बंधन से छूटे | अन्य विषम भव भीर न टूटे
दुर्गति दीन दुखी बन जाओ | मान प्रतिष्ठा महत मिटाओ

बिबिधि बड़ाई विश्व की इह सम बंधन आन
विष सम परिहरहु जो चाहो पद निर्बान
बिना मरे संसार से छूटन नहीं सकता

रह्यो वैश्य इक बहु धन धारी | पाल्यो कीर एक सुखकारी
सुदिन सकल सजि साज सयाना | व्यापार हित जब कीन पयाना
कहेउ कलत्र (स्त्री) भृत्य (नौकर) सुत पाहीं | कहो जो बस्तु जाहि जो चाही
सबन कहा ओ जिह मन माना | सब कहं परितोषेउ (ढाढस दिया) विधि नाना
शुक सन कहा कहौ कहा चहहू | मति अनुरूप तुम हु कछु कहहू
शुक कह नहीं बहु मम सहचारी | तिनसों बरणेउ व्यथा हमारी
जिम चकोर शशि तुम तन चाही | विधि बश फसेउ सो पिंजर माही
अभिवादन (प्रणाम) कहि विविधि सराही | मुक्ति उपाइ (छूटने का) बतावहु ताही
तुम चरनन चित चाह घनेरी | विरह बियोग विपत्तिहि घेरी
कहेउ कि हम इह बंध फसाये | स्वच्छन्द स्वतंत्र सो तुम मन भाये
प्रीति प्रतीति परेखा भारी | हम पिंजर तुम विपिन बिहारी
कबहु कृपा किंकर (दास) पर करहू | निश्चय निज जन नाम सुमिरहू
पुर बहु पूरण प्रीति पुरानी | जिन बिसरावहु निज जन जानी
मेरे मन इह मुख्य अस टेकू | विस्मृत (भूलो नहीं) होहु न तुम छिन एकू

ای حریفان بابت موزون خود
من قدح ها می خورم پر خون خود

یک قدح می نوش کن بر یاد من — گر همی خواهی که میدهی داد من

یا بیاد این فتاده خاک بیز — چونکه خوردی جرعه بر خاک ریز

ای عجب آن عهد و آن سوگند کو — وعدهای آن لب چون قند کو

انتقال قصه بجانب حقیقی

گر فراق بنده از بدبندگی ست — چون تو با بد بد کنی پس فرق چیست

این بدی که تو کنی در وقت جنگ — با طرب تر از سماع بانگ چنگ

ای جفای تو ز دولت خوب تر — و انتقام تو ز جان محبوب تر

از تو این نار ست نورت چون بود — ماتم این خود تا که سورت چون بود

از حلاوت ها که دارد جور تو — وز لطافت کس نیابد غور تو

فی المثل جورت اگر عریان شود — عالم ار گریان شود خندان شود

نالم و ترسم که او باور کند — وز ترحم جور را کمتر کند

عاشقم بر قهر و بر لطفش بجد — ای عجب من عاشق این هر دو ضد

عشق من بر مقصد این هر دو شد — چون نباشد عشق کز وی هست بد

والله ار زین خار در بستان شوم — همچو بلبل زین سبب نالان شوم

این عجب بلبل که بگشاید دهان — تا خورد او خار را با گلستان

این چه بلبل این نهنگ آتش است — جمله ناخوشها ز عشق او را خوش است

عاشق کل است و خود کل است او

दुहू पाइ तम मुदित मन मगन स्वजन समुदाय
हम बिबेक ब्याकुल बिरह बंधु बर्ग बिसराय

निरदय नाहिं तुमहि सुहाही । प्रीति रीति फिर चहिय निबाही
पिय न प्रेम भर तुम लहि काही । हमरेहि नाम कौंटि छिन नाही
अगाय सहित कहां अरगम कोरे । कहां गूढ़ ब्रत गोप्य घनेरे
जो बियोग बिकल दुख घेरे । फांद यालु काहि कर तोहि हेरे
दुःख बिषाद बिकल ता माही । सुख समाज गानिंद न ओही
दुख सुख सम भय मंगल दाता । मरण भलो जीवन से भ्राता
प्रभु मेरे तम चंड पवि परहीं । मुद मय सुख बर्णन को करहीं
मधुर अलौकिक दुख जंजाला । प्रेमी बिनु को निहगति पावा
दुःख बिना को भक्ति बढ़ावे । जानि यथारथ जन सुख पावे
तन कर सुख मन भजन भुलावे । प्रेम जाल दुख हमहि सुहावे
कहत महुर दुख सरल द्विन रक्ता । हम आसक्त दुहुन तजि तरका
[illegible] । जिहि बिनु छिनहु जीवन नाहीं
दुःख दीनता हमहि सुहाई । निहि बिनु होहि मन बिकलाई
दुख में हम सुहृद सुख सब मानें । प्रेमी धन्य जो दोउ सम जानें
भई है बको र अजिन अशि मानी । अशुभाहु मेसहाहि शुभ खानी

रिहु ह्रित निता मत्कार हा प्रभु हरि सो परहि हाइ

عاشق خویش است و عشق خویش جو

قصه طوطی جان زین سان بود ‌ ‌ کو کسی کو محرم مرغان بود

کو یکی مرغی ضعیفی بی گناه ‌ ‌ و اندرون او سلیمان با سپاه

چون بنالد زار بی شکر و گله ‌ ‌ افتد اندر هفت گردون غلغله

هر دمش صد نامه صد پیک از خدا ‌ ‌ یا ربی زو شصت لبیک از خدا

زلت او به ز طاعتهای خلق ‌ ‌ پیش کفرش جمله ایمانهای خلق

هر دمی او را یکی معراج خاص ‌ ‌ بر سر فرقش نهد صد تاج خاص

صورتش بر خاک و جان بر لامکان ‌ ‌ لامکانی فوق وهم سالکان

لامکانی نی که در فهم آیدت ‌ ‌ هر دمی در وی خیالی زایدت

مرد بازرگان پذیرفت این پیام ‌ ‌ کو رساند سوی جنس او سلام

چونکه در اقصای هندستان رسید ‌ ‌ در بیابان طوطیی چندی بدید

مرکب استانید پس آواز داد ‌ ‌ آن سلام و آن امانت باز داد

طوطیی زان طوطیان لرزید پس ‌ ‌ اوفتاد و مرد و بگسستش نفس

شد پشیمان خواجه از گفت خبر ‌ ‌ گفت رفتم در هلاک جانور

این مگر خویش است با آن طوطیک ‌ ‌ این مگر دو جسم بود و روح یک

این چرا کردم چرا دادم پیام ‌ ‌ سوختم بیچاره را زین گفت خام

این زبان چون سنگ و هم آهن وش است ‌ ‌ وانچه بجهد از زبان چون آتش است

سنگ و آهن را مزن بر هم گزاف ‌ ‌ گه ز روی نقل و گه از روی لاف

आपन अपने प्रेम में आप रहा लपटाइ

आत्मरूप शुक कर यह गाथा । कहा आत मलिन सहज सनाथा
बंध बिवश व्याकुल बल हीना । कहां शुभ शांति शरीर आसीना

(बद्ध से मुक्ति को क्या निसबत है)

निस्पृह न हन न हर्ष अरु शोका । नाद करत कंपति त्रिय लोका
(बेपरवा)
तिह तन शत करुणा कर हेरे । एकहु बार राम कहि टेरे
प्रेम निमग्न निदान अथाना । तिह कि पाव पढि वेद पुराना
छिन छिन माहि प्रकाश अनेका । अचल तासु हित शत अभिषेका
धरणी देह मन ध्वनि ध्रुव माही । मन बुधि चित्त तासु गति नाही
(प्रभु)
सकृत न सज्जन मन नहां जाही । मन संवेग सो सहज सिराही
(एकदम)
शुक संदेश कर अंगीकारा । क्रय विक्रय हित चलेउ बजारा
(बरोद फ़ौरन)
पहुंच प्रदेश सहर्ष विशेषी । शोभित शुक अगणी बन देखी
कर हुंकार प्रेम रंग भीनी । तिन कहं धनिक धरोहर दीनी
(वैश्य संदेश)
सुनत मरण सजेउ बिरहागी । धरणी परेउ इक आशा न त्यागी
कहि पच्छि नाम सुपरण प्राणामू । हनेउ हाय हम मारा निकामू
(पक्षी अर्थात तोता की)
शुक सगो अपसगुन मन माही । प्रेम गंभीर गिरा गम नाही
(सगा)

कीर कहावत कठिन कहि करत कराल कलाप
कंठ ग्रसेउ करुणा रसहि कु शल्य बिसारेउ आप

रसन उपल मुख लोह समाना । शब्द अनल निकसें नहं नाना
(पत्थर) (अग्नि)
पाहन लोहन भोरेहु मारो । चुहल दस हित हू मन कारो

زانکه تاریک است و هر سو چنبه زار / در میان پنبه چون باشد شرار
ظالم آن قومی که چشمان دوختند / زان سخنها عالمی را سوختند
عالمی را یک سخن ویران کند / روبهان مرده را شیران کند
جانها در اصل خود عیسی دم اند / یکزمان زخم اند و دیگر مرهم اند
گر حجاب از جانها برداشتی / گفت هر جانی مسیح آساستی
گر سخن خواهی که گوئی چون شکر / صبر کن از حرص وان حلوا مخور
صبر باشد مشتهای زیرکان / هست حلوا از روی کودکان
هر که صبر آورد بر گردون رود / هر که حلوا خورد واپس تر رود
صاحب دل را ندارد آن زیان / گر خورد او زهر قاتل را عیان
زانکه صحت یافت و ز پرهیز رست / طالب مسکین میان تب درست
گفت پیغمبر که ای طالب جری / هان مکن با هیچ مطلوبی مری
گفت احمد گر که خواهی از ازل / هین مکن با هیچ مطلوبی جدل
در تو نمرودی است در آتش مرو / رفت خواهی اول ابراهیم شو

[illegible]

چون نه سباح و نه دریائی / در میفکن خویش از خودرائی

[illegible]

کاملی گر خاک گیرد زر شود / ناقص ار زر برد خاکستر شود
دست ناقص دست شیطانست و دیو / زانکه اندر دام تلبیس ست و ریو
چون قبول حق بود آن مرد راست / دست او در کارها دست خداست
جهل آید پیش او دانش شود / جهل شد علمی که در ناقص شود

१

तीक्ष्ण तिमिर पुनि तूल पसारू। तूल माहिं किम राखिये अंगारू॥

(अविद्या) (रूई)

नींचन नेत्र मूंद कर भाई। निधन कीन बहु नर समुदाई॥

शब्दहि गद्द गिर ग्रामहि ढावे। शब्दहि धाम को सिंह बनावे॥

अमृत गरल बसत इक ठांई। अग भेषज दोउ जिह्वा माही॥

(घाव) (औषधि)

उवत अविद्या पटल पुराना। स्वयं सबहि नर सिद्ध समाना॥

(पड़दा)

तुम्हरे उबचन होहि हितकारी। इन्द्रिन विषय जो देहु बिसारी॥

कठिन तितिक्षा दु भजन आनहि। बाल बुद्धि विषयन सुख मानहि॥

(दुंदसहन)

संयम साध सिद्ध नर सोई। विषय उपभोग ते मारग होई॥

(मनकोरोककर)

सिद्ध सरल चित होहि अदंडा। चन्द्र मौल जिम गरल अखंडा॥

(महादेव) (जहर)

भोग विहज बहु यत्न हि ढावे। सहज शरीरहि सहज न सावे॥

(नन्दुकन्न)

आनमु भुसुन कहत पुकारी। शिम अशिन कर रौरव कारी॥

(धर्मात्मा) (ऐर्थी) (देखादेखी) (नरक)

गुरुजन मोंनहि करिय डिठाई। अन्य विचार अहा बिन पाही॥

पावक नाहि प्रहलाद पजारो। पृथक भक्ति तिहु असो चित धारो॥

जब विवेक बोहित नहीं बहे न बोध बयार।

(नाव) (ज्ञान)

भव निधि गुरु नाविक बिना किहि विध उतरे पार॥

(मल्लाह)

भोगहु निष्क्रिय जनहि भार। धर्महु पुरुष सकाम न नारे॥

(निष्कामी)

सदा रहत संकल्प सकामी। संशय सुदन सदा अनुगामी॥

(ध्यान) (दुःखरूप)

निष्कामी निरसंग निरागी। मुक्ति निवृत्ति निरूपक सुख रासी॥

अज्ञानहु संतहि सिखलावे। ज्ञानहु शठहि मान सिखलावे॥

(प्रसादनाहि)

هر چه گیرد علتی علت شود — کفر گیرد کاملی ملت شود

ای مری کرده پیاده با سوار — سر نخواهی برد اکنون پای دار

تو چه گوشی او زبان نی جنس تو — گوشها را حق بفرمود انصتوا

کودک اول چون بزاید شیر نوش — مدتی خامش بود او جمله گوش

مدتی میبایدش لب دوختن — از سخن تا او سخن آموختن

ور نباشد گوش تی تی میکند — خویشتن را گنگ گیتی میکند

تا نیاموزد نگوید صد یکی — ور بگوید حشو گوید بی شکی

کر اصلی کش نبود آغاز گوش — لال باشد کی کند در نطق جوش

زانکه اول سمع باید نطق را — سوی منطق از ره سمع اندرا

ادخلوا الابیات من ابوابها — واطلبوا الارزاق من اسبابها

نطق کان موقوف راه سمع نیست — جز که نطق خالق بی طمع نیست

مبدع ست و تابع استاد نه — مسند جمله ورا اسناد نه

باقیان هم در حرف هم در مقال — تابع استاد و محتاج مثال

زین سخن گر نیستی بیگانه‌ای — دلق و اشکی گیر در ویرانه‌ای

زانکه آدم زان عتاب از اشک رست — اشک تر باشد دم توبه پرست

بهر گریه آدم آمد بر زمین — تا بود گریان و نالان و حزین

گر ز پشت آدمی وز صلب او — در طلب میباش هم در طلب او

زآتش دل وآب دیده نقل ساز — بوستان از ابر و خورشید است باز

अंधमित सहित नयहु दुखदाई । भोगहु निर्मम कहं सुखदाई

हयारूढ़ पैदल किमि संगा । मशक नहिं करि कहा रण संगा

घोड़े का सवार

नूं श्रुति सम कहु रसन समाना । श्रुति कर विषय शब्द कर ज्ञाना

नाक जिव्हा बच्चा

जन्मत हैं अवाच्य कछु काला । शिशु श्रुत रूप सो होइ विशाला

मूक कान

कछु दिन रसन दमन सुत कीजे । शिशु सम श्रोत्र श्रवण मूल पीजे

जिव्हा

श्रवण रहित अर्भक यदि होई । आज्ञा करत मूक कहैं सोई

बच्चा

विनु शिक्षा शिशु शुद्ध न भाखे । अर्थ रहित यद्यपि रुचि राखे

श्रवण शक्ति जिह्व में न रहाई । मूकहि को सक मुखर बनाई

वाचाल

मुख्य श्रवण शक्ति हि शिव कीना । भाषण भद्र तासु आधीना।

परमात्मा शुभ

द्वार बिना को सदन सिधारे । कारण रहित कार्य को सारे

घर

जासु गिरा नहि श्रुति आधीना । सो सर्वज्ञ समर्थ प्रवीणा

परमात्मा

सर्व जनक जनिता रहित ज्येष्ठ जनन करतार

पिता कारण पुरातन

निराधार निरुपम निखिल नायक सर्वाधार

तज ईश्वर सब हीन बुधारी । शब्द रु शिक्षा के अधिकारी

समझ गये उर्यादि वचन विलासू । ब्रति बपु करि यों विजन बन बासू

मुनि एकान्त

निज अब गुण लखि नेत्र जुड़ावे । ईश्वर को पहित्वोरिल सिरावे

नर तन कर फल यह जग माहीं । दीन मलिन तन रहियं सदाहीं

जन्म पाइ जो मनुज कहावहु । प्रियतम प्रभु पद प्रेम बढ़ावहु

प्रेम सूर्य दृग जल जहां नाहीं । मन आराम तहां कुम्हलाहीं

बगीचा

تو چه دانی ذوق آب ای شیشه دل — زانکه چون خر شدی تو بانگ

تو چه دانی ذوق آب دیدگان — عاشق نانی تو چون نادیدگان

گر تو این انبان ز نان خالی کنی — پر ز گوهرهای اجلالی کنی

طفل جان از شیر شیطان باز کن — بعد از آنش با ملک انباز کن

تا تو تاریک و ملول و تیره‌ای — دان که با دیو لعین همشیره‌ای

لقمه‌ای کو نور افزود و کمال — آن بود آورده از کسب حلال

روغنی کاید چراغ ما کشد — آب خوانش چون چراغی را کشد

علم و حکمت زاید از لقمهٔ حلال — عشق و رقت آید از لقمهٔ حلال

چون ز لقمه تو حسد بینی و دام — جهل و غفلت زاید آن را دان حرام

لقمه تخم است و برش اندیشه‌ها — لقمه بحر و گوهرش اندیشه‌ها

زاید از لقمهٔ حلال اندر دهان — میل خدمت عزم رفتن آن جهان

زاید از لقمهٔ حلال ای پر حضور
در دل پاک نور و در دیده نور

چونکه بازرگان تجارت را تمام — باز آمد سوی منزل شادکام

هر غلامی را بیاورد ارمغان — هر کنیزک را ببخشید او نشان

گفت طوطی ارمغان بنده کو — آنچه گفتی و آنچه دیدی باز گو

گفت نه من خود پشیمانم از آن — دست خود خایان و انگشتان گزان

من چرا پیغام خامی از گزاف — بردم از بی‌دانشی و از نشاف

گفت ای خواجه پشیمانی ز چیست — چیست آن کین خشم و غم را مقتضیست

कहा जानहु तुम प्रेम प्रभावा
कहा जानो दृग नीर बहाई
तप करि तीक्षण तृषा त्यागहु
विषय मसान आत्म शिशु घेरो (बालक)
जबलग मनन प्रकाश बढ़ाई
आनहु अन्न परिग्रह त्यागी
आत्म दीप जो देत बुझाई
उदर परिग्रह बिनु जो भरई
जो अपवित्र परिग्रह जाया
(अन्न) अन्न बीज फल ब्रह्म विचारू
पाइ पराक्रम अमिय अहारहि (यज्ञशिष्ट)

खर सम दलदल मांहि फसावा
नहिं विराग रहै विषय फसाई
जगतपाल प्रेम महि अनुरागहु
निहतज पाव प्रकाश घनेरो
जानेहु विषय भूतल पटाई (मसान)
जानेउ जीव ज्योति जब जागी
होइ न तेल होइ जल भाई
मनहिं प्रेम द्रवता हद करई (कोमलता)
बाढ़ै काम क्रोध मद माया
अन्न उदधि मोति विद्रुम चारू (मूंगा मणि)
भक्त लगे परलोक सुधारहि

दास भाव इन्द्रिय दमन होइ अशन शुचि पाय (भोजन)
हृदय दीप्त मुख द्युति विमल दिव्य दृष्टि ह्वै जाय (कांति)

जबहि बणिक वाणिज्य विहाई (व्यापार)
दीन बुलाइ वस्तु मन भाई
शुक कह कहो हमें कहा लाये
लज्जा भ्रत विप्र तिह समझावै (धनिक)
कहेउ संदेश कुटिल न कीन्हो
कहु शुक तात कथा पछिताहू

गमनेउ ग्रह लै द्रव्य अघाई (नौकर)
पुत्र मित्र अनुजीवन पाई (टहलुवा)
विहंस कहहु बोलि वचन सुनाये
कठिन काल गति कहत न आवै
मतिभ्रम भयेउ बुद्धि भई झीनी
विधिवश होहि हानि अरु लाहू

گفت گفتم من شکایتهای تو — با گروه طوطیان همتای تو
آن یکی طوطی ز دردت بوی برد — زهره‌اش بدرید و لرزید و بمرد
من پشیمان گشتم این گفتن چه بود — لیک چون گفتم پشیمانی چه سود
نکته‌ای کان جست ناگه از زبان — همچو تیری دان که جست او از کمان
وا نگردد از ره آن تیر ای پسر — بند باید کرد سیلی را ز سر
چون گذشت از سر جهانی را گرفت — گر جهان ویران کند نبود شگفت
فعل را در غیب اثرها زادنیست — وان موالیدش بحکم خلق نیست
بی شریک جمله مخلوق خداست — آن موالید ارچه نسبتشان بماست
زید پرانید تیری سوی عمرو — عمرو را بگرفت تیرش همچو نمر
مدتی سالی همی زایید درد — دردها را آفریند حق نه مرد

زید رامی آندم ار مرد از وجل — دردها می‌زاید آنجا تا اجل

زان موالید وجع چون مرد او — زید را ز اول سبب قتال گو
آن وجعها را بدو منسوب دار — گرچه هست آن جمله صنع کردگار
اولیا را هست قدرت از اله — تیر جسته باز گردانند ز راه
صاحب ده پادشاه جسمهاست — صاحب دل شاه دلهای شماست
بسته درهای موالید از سبب — چون پشیمان شد ولی از دست رب
فرع دید آمد عمل بی هیچ شک — پس نباشد مردم الا مردمک
مردمش چون مردمک دیدند خرد — در بزرگی مردمک کس ره نبرد

कहा कहेउ हम तोर कलेशा । शुक समूह प्रति सकल संदेशा
करुणाकर इक कीर किशोरा । तजेउ प्राण सुनि तोर निहोरा
निज मुख कहि कहाँ लाभल जाय । करि कुतर्क पुनि कहा पछिताय
मुख से बाहिर शब्द जब भयेऊ । धनु ते मनहु शिलीमुख गयेऊ
प्रविशे किम निखंग शर आई । रोकहु सरित स्रोत नट जाई
बढ़त प्रवाह भयंकर भारी । बोरहि बन जन गज बलधारी
रचि परोक्ष पुष्कल परिवारा । पुरुषन केर न तहाँ अधिकारा
कारुणीक कौतुक सब करहीं । यदपि लोक हमरे शिर धरहीं
मोहन छाँडेउ विशिख कराला । मोहन ग्रसेउ जाइ जिम व्याला
तिहि कर चिर सोइ रहेउ अधीरा । ईश्वर रचत न जन तिहि पीरा

विधिवश घातुक घाल सर सपद गयेउ यमलोक ।
याबन मरण व्याधि न रहेउ मोहन चिर तिहि शोक ॥

तापहि तीर लगत तिहि तनु त्यागा । घातुक घोर अयश तिहि लागा
करत न यदपि कीन करतारा । जानि निमित्त कलंक सो धारा
भगवत भक्त भक्ति बल भाई । काढ़त कर्मन की करु आई
अवनिप नर शासक शरीर के । शमन शोक मोषे प्राण भीरु के
भीषण भेषज भुवन ताप के । शंभु शरण निमि विशिष चाप के
तत्व दर्शी तारका रतन से । हरण त्रास त्रिय तुहिन तरणि से
नैन तारका सम लघु ज्ञानी । तम्बीत तु पदन तिहि पहिचानी

من تمام این را نیارم گفت ازان — منع مے آید ز صاحب مرکزان

چون فراموشی خلق و یادشان — با وے ست او رسد فریادشان

صد هزاران نیک و بد را آن بهی — میکند هر شب ز دلها شان تهی

روزها دلها ازان پر میکند — ان صدفها را پر از در میکند

ان همه اندیشه پیشینها — مے شناسد از هدایت جانها

پیشه فرهنگ تو آید به تو — تا در اسباب بگشاید به تو

پیشه زرگر با آهنگر نشد — خوے این خوشخو بآن منکر نشد

پیشه‌ها و خلقها همچون جهیز — سوے خصم اید روز رستخیز

پیشه‌ها و خلقها از بعد خواب — واپس اید هم بخصم خود شتاب

صد ورسے کان بر شقاوت غالب — هم بران تصویر حشرت واجب است

جس برے حالت پر مرو گے اوسیپر اٹھایا جائیگا

هر چه بینی سوے اصل خود رود
جزو سوے کل خود راجع شود

چون شنید ان مرغ کان طوطی چه کرد — هم بلرزید و فتاد و گشت سرد

خواجه چون دیدش فتاده همچنین — برجهید و زد کله را بر زمین

چون بدین رنگ و بدین حالش بدید — خواجه برجست و گریبان بر درید

گفت اے طوطی خوب خوش حنین — اے چه بودت این چرا گشتی چنین

اے دریغا مرغ خوش آواز من — اے دریغا همدم و همراز من

اے دریغا مرغ کارزان یافتم — زود رو از روے ان بر تافتم

اے زبان تو بس زیانی مرمرا — چون توی گویا چه گویم من ترا

[illegible]

तिह प्रताप जो प्रगट जनावा (उनके प्रताप को जो कोई कहना चाहे) । मनहु वारि पर भीत बनावा ॥
अशुभ टारि शुभ गुण प्रगटावें । जन दुख हरन जनक (पिता) सम धावें ॥
निज जन मन जड़ताई नासहि । घोर अविद्या रजनि (रात्रि) बिनासहि ॥
जन मन शुक्तिहि (सीपी) प्रेरि विभूती । गुण मुक्ता (मोती) कर करहिं प्रसूती (जननी) ॥
बल बुधि प्रज्ञा विचार बढ़ावहि । प्रबल भाग्य बल जिन उर आवहि ॥
दुष्कृत (कुकर्म) न सुकृत (सुकर्म) न जो मनुज कमावे । सुख दुख विवश ना सु फल पावे ॥
नहिं मदार (लकड़ी का नाम) अब फल लागे । दुष्ट स्वभाव न साधुहि लागे ॥
पावहि पाप पुन्य ननु धारी । दायभाग (मीरास) जिम निज अधिकारी ॥
जो जिह काज करन नर सोवे । जागत जीव नाहि जग जोवे ॥
सन्त माहि जिह गुण अधिकाई । अन्तःकरण नाहि तिह गति लै जाई ॥

राम रसायन जिह रंगे तिह मन राम रमाय ।
राग रसहि जिह प्रसरे हैं रौर बनर्क सिधाय ॥

सुनत दशा सहचारिन केरी । अवनि (पृथ्वी) परेउ शुक मूर्छा घेरी ॥
धरनि (पृथ्वी) देखि धड़ परेउ निकामा । कह विश (वैश्य) आज भयेउ विधि वामा (उलटा) ॥
धुनत सीस मुख अवन वचना । शोकाकुल लखि अद्भुत रचना ॥
हा शुक कहा मम प्राण पिरीते । किह विध आज भये विपरीते ॥
विषम वियोग विवश अकुलाई । मनहु बणिक (वैश्य) निज मूर गमाई ॥
शुभ दिन जब अस शुक (तोता) हम पावा । सर्वस आज सो सहज गमावा ॥
अनरथ मूल रसन (जिव्हा) महारानी । किं कहैं तो बिनु बनत न बानी ॥

ای زبان هم آتش و هم خرمنی
چند این آتش درین خرمن زنی

در نهان جان از تو افغان میکند
گرچه هرچه گوئیش آن میکند

ای زبان هم گنج بی پایان توی
هم انیس وحشت هجران توی

هم خفیر و رهبر یاران توی
هم بلیس و ظلمت و کفران توی

چند امانم میدهی ای بی امان
ای تو زه کرده بکین من کمان

نک بپرانیده مرغ مرا
در چراگاه ستم کم کن چرا

یا جواب ما بده یا داد ده
یا مرا اسباب شادی یاد ده

[illegible]

اپنے قصور کا اعتراف کر

ای دریغا نور ظلمت سوز من
ای دریغا صبح روز افروز من

ای دریغا مرغ خوش رفتار من
ز انتها پریده تا آغاز من

از کبد فارغ شدم با روی تو
وز کبد صافی بدم در جوی تو

ای دریغاها خیال دیدن است
وز وجود نقد خود ببریدن است

غیرت حق بود و با حق چاره نیست
کو دلی کز حکم حق صد پاره نیست

غیرت آن باشد که او غیر همه است
آنکه افزون از بیان و دمدمه است

ای دریغا اشک من دریا بدی
تا نثار دلبر زیبا بدی

طوطی من مرغ زیرکسار من
ترجمان فکرت و اسرار من

هرچه روزی داد و ناداد آیدم
او ز اول گفته تا یاد آیدم

طوطئی کاید ز وحی آواز او
پیش از آغاز وجود آغاز او

اندرون تست آن طوطی نهان
عکس او را دیده تو برین و آن

[illegible]

क्रोध पालन नहिं जल वपु धारे	अग्नि होइ खलियान पजारे
यदपि भरत तव बश सहहानी	तदपि करत तेरी मन भानी
तोहि बल मनुज विपुल धन पावे	तोहि बल कहि कहि कुशल न साचे
कहुं गरु हुइ जीवन निस्तारे	कहुं वह कायन के मैं डारे
सब विधि करी नार पहुनाई	निधन कीन मोहि धरि निठुराई
काहि जु दमन दनव मोहि दीना	विकल कीन जिम जल बिनु मीना
अबहु दृग मन तजि हठ बेठो	सुमिर दयालु दुसह दुख मेटो

सुख सरोज सबही मुंदे अथये आतम भानु
दुख उलूक निधरक चरहु पाप तिमिर अधिकान

[illegible]	रूपट उ जाहि बाज जमराजू
तब दशा न दुख दोष नसाये	भेम सरित मल धोइ बहाये
पामर जन्म दृश्य हित हारें	निज स्वरूप सुख नाहिं सम्हारें
दृश्य अनत ईश्वर से घालहि	कोन ईश अनुशासन पालहिं
दृश्य क्षणिक नश्वर जड़ होई	ईश्वर अमर अजर अज सोई
विश अधीर हग भीग बहावे	पुनि रुमाया नाहि न चावे
हा शुक श्रुति शोभा की खानी	भुजर मनोहर मम गति जानी
जब हत बश क्रम भ्रम परि जाहीं	सूचक पाप पुण्य मग माहीं
निगम निचोर कहत न भवानी	नियम नीति परमारथ सानी
मोद मद मय मन मन्दिर माहीं	जड़ तनु भगर जासु पर छाहीं

می برد شادیت را تو شاد ازو
محبت مکن
می پذیری ظلم را چون داد ازو

ای که جان را بهر تن می‌سوختی
سوختی جان را و تن افروختی

سوخته چون قابل آتش بود
سوخته بستان که آتش‌کش بود

ای دریغا ای دریغا ای دریغ
کانچنان ماهی نهان شد زیر میغ

چون زنم دم کآتش دل تیز شد
شیر هجر آشفته و خون‌ریز شد

آنکه او هشیار خود تندست و مست
چون بود چون او قدح گیرد بدست

شیر مستی کز صفت بیرون بود
از بسیط مرغزار افزون بود

قافیه اندیشم و دلدار من
گویدم مندیش جز دیدار من

خوش نشین ای قافیه اندیش من
قافیه دولت توی در پیش من

حرف چه بود تا تو اندیشی ازان
صوت چه بود خار دیوار رزان

حرف و صوت و گفت را برهم زنم
تا که بی این هر سه با تو دم زنم

آن دمی کز آدمش کردم نهان
با تو گویم ای تو اسرار جهان

آن دمی کز وی مسیحا دم نزد
حق ز غیرت نیز بی ما هم نزد

ما چه باشد در لغت اثبات و نفی
من نه اثباتم منم بی ذات و نفی

من کسی در ناکسی دریافتم
پس کسی در ناکسی دربافتم

جمله شاهان بردهٔ برده خوداند
جمله خلقان مردهٔ مرده خوداند

جمله شاهان پست پست خویش را
جمله خلقان مست مست خویش را

دلبران بر بیدلان فتنه بجان
جمله معشوقان شکار عاشقان

हरलीनिस तन तुष तब साना । तिह पालन सुख पावत नाना ।
अरे मदांध मंद मति भीरू । आत्म घात किय पालि शरीरू ।
आत्म प्रकाश छोड़ जिन तनु जारी । तासु संग पुनि होव सुखारी ।
जो मृदु मंजु मान मद त्यागी । सोइ मन धन्य जहां विरहागी ।
हा विधु विमल जहां मल नाहीं । छिप्यो सोई तनु वारिद छाहीं ।

श्लोक ।

मन कानन में जब लगी बिरह दवारि प्रचंड ।
भगे सकल कामादि खग प्रगटी ज्योति अखंड ।

जे नर निखिल नेह हरननाकर । बंदे राम बिधु सुमिर गुणाकर ।
जे जन अस सुख पाइ अनंदे । नर पुंगव हु पाय तिन बन्दे ।
शब्द हेतु जब हम चित धारी । प्रभु कह तुम निज रूप निहारी ।
बैठ सुखेन शब्द कह अटको । निज स्वरूप तजि किह भ्रम भटको ।
शब्द शोक सागर का घाटी । शब्द हि ब्रह्म सेत्तु की टाटी ।
अक्षर शब्द बच्चन करि दूरी । हरि मूरति सोइ लखे हजूरी ।
मुनि मन अगम जहां नहिं जाई । सो रहस्य तोहि कहब बुझाई ।
शेष महेष ध्यान नहिं आवे । अहं त्याग बिनु सो कहां पावे ।
जो निज नाम निसान न सावे । अलख अरूप गत हि मो पावे ।
अमर भयेउ मर धर्म नसाई । अतः अपनपो दीन मिटाई ।
निज नीच हु नरनाह निवाजें । जग ज घृन्य जीवहि जिम साजें ।
मंत्रिन बश जिम होहि भुआला । पुत्तन पितर करहिं प्रतिपाला ।
प्रभु निज प्रेमिन कर प्रण पालहिं । पलक पूतरी पितु जिमि बालहिं ।

میشود صیاد مرغانرا شکار — تا کند ناگاه ایشانرا شکار
هر که عاشق دیدیش معشوق دان — کو به نسبت هست هم این و هم آن
تشنگان گر آب جویند از جهان — آب هم جوید بعالم تشنگان

چونکه عاشق اوست تو خاموش باش
او چو گوشت میکشد تو گوش باش

بند کن چون سیل سیلانی کند — ورنه رسوائی و ویرانی کند
من چه غم دارم که ویرانی کند — زیر ویران گنج سلطانی بود
غرق حق خواهد که باشد غرق تر — همچو موج بحر جان زیر و زبر
زیر دریا خوشتر آید یا زبر — تیر او دلکش‌تر آید یا سپر
پس زبون وسوسه باشی دلا — گر طرب را باز دانی از بلا
گر مراد تست را ذوق شکر است — بی‌مرادی نی مراد دلبر است
هر ستاره‌اش خونبهای صد هلال — خون عالم ریختن او را حلال
ما بها و خونبها را یافتیم — جانب جان باختن بشتافتیم
ای حیات عاشقان در مردگی — (حیات) — دل نیابی جز که در دل بردگی
منش جسته با نیاز و بی‌ملال — او بهانه کرده از ناز و دلال
گفتم آخر غرق تست این عقل و جان — (بلا فنای خود) گفت رو رو بر من افسون مخوان
من ندانم آنچه اندیشیده‌ای — ای دو دیده دوست را چون دیده‌ای
ای گران جان خوار دیدستی مرا — زانکه بس ارزان خریدستی مرا
هر که او ارزان خرد ارزان دهد — گوهری طفلی بقرص نان دهد

प्रथम व्याधि पक्षिन वश होई। पक्षिन वश्य करे पुनि सोई।
(शिकारी)
भक्त हरिहि हरि भक्तन चहहीं। दोउ अन्योन्य प्रेम वश अहहीं।
(परस्पर)
प्रेमी जिम बिनु संत दुखारी। तैसेहि संत चहन अधिकारी।

तरे तेई बूड़े जे नर प्रेम पयोध अपार। (प्रेम समुद्र में जो बूड़े सोई तरगये)
अवरा शब्द पर धरहु जिम सीप स्वांति के बार।

प्रभु परेश कर रूप बिशेखी। दिव्य चखु बिनु परे न देखी।
(प्रकृत का स्वामी)
पावक माहि पतंग न सोवे। पुन्य पुंज प्रियतम पुनि पावे।
जो नर प्रेम पयोध समाना। ऊर्मि सरिस अध ऊर्ध्व समाना।
(लहर की भांति चाहे ऊंचा हो या नीचा)
मगन प्रेम वारिद अवगाही। दुख सुख जन्म मृत्यु सम ताही।
(समुद्र)
दुख सुख भेद करहि जो प्रानी। नहिं ग्यानमवित वह अज्ञानी।
प्रभु प्रेरित दुख से खिसयाना। नर इच्छा कि होइ बलवाना।
जिह प्रकाश रबि शशि गत होई। उत्पति थिति लय में सम सोई।
(जिस परमात्मा का प्रकाश)
जन्म लहे कर फल हम पावा। मारा दान कर जिह हम पावा।
तन हि त्याग जीवनजन पावहिं। सुखी होहि जो मनहि नसावहिं।
(देहाध्यास)
खोजत ताहि प्रेम नहिं थोरा। निपट निठुर नहिं आन निहोरा।
कहेउ कि तोहि निमानन प्राना। बोल्यो तोर मंत्र हम जाना।
(तू शब्द अवतरन करता है कि अपना अस्तित्व भी रखता है)
अपनन होरि हरिहि अनुरागा। एकन्चित्त होउ ओम न लागा।
निज अनमोल प्राण प्रिय तोही। सोम्य सलामन जानिस मोही।
सहज मिलै सो सहजन सावे। जिम शिशु मधु कि लगन अभावे।
(भजो मिठाई लात)

(इस समुद्र से पार होना नहीं)

غرق عشقی شو که غرق است اندرین — عشقهای اولین و آخرین
مجملش گفتم نکردم زان بیان — ورنه هم افهام سوزد هم زبان

من چو لب گویم لب دریا بود
من چو لا گویم مراد الا بود

من ز شیرینی نشستم رو ترش — من ز بسیاری گفتارم خمش
تا که شیرینی ما از دو جهان — در حجاب رو ترش باشد نهان
تا که در هر گوش ناید این سخن — یک سخن گویم ز سر من لدن
او چو جانست و جهان چون کالبد — کالبد از جان پذیرد نیک و بد
هر که محراب نمازش گشت عین — سوی ایمان رفتنش میدان تو شین
هر که شد مر شاه را او جامه دار — هست خسران بهر شاهش اتجار
هر که با سلطان بود او هم نشین — بر درش بنشستن بود حیف و غبین
دست بوسش چون رسید از پادشاه — گر گزیند بوس پا باشد گناه
گرچه سر بر پا نهادن خدمت است — پیش آن خدمت خطا و زلت است
شاه را غیرت بود بر هر که او — بو گزیند بعد از آن که دید رو
ناله ام را ناله ها خوش آیدش — از دو عالم ناله و غم بایدش
چون نیم در حلقه مستان او — چون ننالم تلخ از دستان او
چون نباشم همچو شب بی روز او — بی وصال روی روز افروز او
ناخوش او خوش بود بر جان من — جان فدای یار دل رنجان من
عاشقم بر رنج خویش و درد خویش — بهر خشنودی شاه فرد خویش

योग्य यज्ञ जप तप अन्नदाना	सब मिल होहिं न प्रेम समाना
गूढ़ रहस्य न शब्द समावे	अनुभव गम्य कहत नहिं आवे

सुलभ न पावहिं सबहिं न कहत सैन समुझाइ
स्वर गाथा की ओट में अक्षर अमर रहाइ

मधुर हु स्वाद रहहु अस भारी	रहहु मूक लखि जन मति भारी
प्रेम कृपान मोद मन भरहीं	जे गुण दोषारोपण करहीं
सबहिं अवणपुट गत न सुहाई	कछुक समय सकोच्च वश गाई
जड़ तन सम यह जीव जहाना	प्रभु मेरिक प्राण न कर माना
जो स्वरूप सागर संचारी	तिनहिं न नीति शास्त्र सुखकारी
जिहु मरि शैल कनक अधिकारी	सो कि बरीक बन फिरहिं बजारी
नृप नगर जे नेक हनिवासी	और हु तिनहिं कि सोह स्ववासी
भेटनि नृपति जाहिं अति प्रीती	चरणपरत को कहि अस नीती
यदपि भक्त चरणन अनुरागा	सोहन सो सहचर सह भागा
प्रभुहिं लजावत अधम अभागा	तजि निज रूप विवादहि लागा
मेमहि कर प्रसन्न प्रभु होई	आप यता हि प्रिय अवर न कोई
लखि नाद रनिज छबिहि छिपावा	प्रेम दरस लाग लोचन लल चावा
कनक लिलापि विकल भई बानी	रूप ननु आहि जिस किय मरि हानी
सो दुख दर्द हमहि सुखकारी	तन मन प्राण तासु बलिहारी
सकल शोक क्षय करि मोही	स्वामि रजाय साज प्रिय सोई

خاک غم را سرمه سازم بهر چشم — تا ز گوهر پر شود دو بحر چشم

اشک کان از بهر او بارند خلق
گوهر است و اشک پندارند خلق

من ز جان جان شکایت میکنم — من نیم شاکی روایت میکنم
شکایت نارانگی سے ہوتی ہے

دل همی گوید کزو رنجیده‌ام — وز نفاق سست میخندیده‌ام

راستی کن ای تو فخر راستان — ای تو صدر و من درت را آستان

آستان و صدر در معنی کجاست — ما و من کو آن طرف کان یار ماست

مرد و زن چون یک شود آن یک توی — چونکه یک‌ها محو شد آنک توی

این من و ما بهر آن بر ساختی — تا تو با خود نرد خدمت باختی
تا باتیں پوشیدہ ہو کر

تا تو با ما و تو یک جوهر شوی — عاقبت مستغرق جانان دلبر شوی

این من و ما همه یک جان شوند — عاقبت مستغرق جانان شوند

این همه هست و بیا ای امر کن — ای منزه از بیان و از سخن

نیست ... دیدنت — در خیال آرد غم و خندیدنت

دل که او بسته غم و خندیدن است — تو مگو کو لایق آن دیدن است

آنکه او بسته غم و خنده بود — او بدین دو عاریت زنده بود

باغ سبز عشق کو بی منتهاست — جز غم و شادی درو بس میوه‌هاست

عاشقی زین هر دو حالت برتر است — بی بهار و بی خزان سبز و تر است

ده زکات روی خوب ای خوب‌رو — شرح جان شرحه شرحه باز گو

کز کرشمه غمزه غمازه
بر دلم بنهاده داغ تازه

अहह संतमम सरित्पति कोबल (समुद्र) । दोउ चषु शुक्ति सबहि मुक्ताहल (नेत्र)

जग मन अंबुद अम्बु जल वारिद लोचन चारु (समुद्र, आंसू, बादल)
प्रेम सीप मुक्ता भये दीने हरि पद डारु

प्राण नाथ जिन भई अकुलाये । नाहिं रिस बश हम कहत सुभाये
तुम हु हंस तक हु मन गत केही । सुख रिस हृदय हर्ष अति तेही
सत्य सैव्य तुम सकल सहायक । हम जननी चिं आप सब लायक
तुच्छ तुंग नहिं आतम माही (नीचा ऊंचा) । जहां अहम मम सकल विलाही
जाति वर्ण कुल जहां न लखावे (मनुष्यादि रक्तादि ब्रह्मणादि) । एक अनेकहु कहत न आवे
इह सब कल्पित माया माहीं । व्यवहारिक पर्मार्थिक नाहीं
भव मूलक अस भेद बिकारी । आतम एक अमल अविकारी
सब निज कारण करहि पयाना । सब कर शरण अंत भगवाना
हे शालक शिव शुचि सतरूपा (प्रचालक, पवित्र) । ओभन शुद्ध अपार अनूपा
चर्म चक्षु सोहि सकल न चाही । हर्ष शोक युत पावत नाहीं
हर्षा मर्ष दुःख सुख माहीं । ते जन व बहु नहारे समुहाहीं
विकल लोक कल्पित सुख पीरा । कबहु सहर्ष कबहु अधीरा
मेरा विपिन गत हर्ष विषादा । फल अनेक प्रभु पर्म प्रसादा
त्रिविधि बायु बहि मंगल मूला । सदा एक रस सकल सफूला
सोहि फल देहु बाहु बल प्यारे । विरहवंत जिहं होहिं सुखारे

शोभा निरखि अलौकिक मन बुधि चित्त लुभान
बिरह ज्वाला में प्रसेउ जिम झष बिनु जान अकुलान (मछली)

چون گریزانی ز ناله خاکیان (خاکساران) — غم چه ریزی در دل غمناکیان
ایکه هر صبحی که از مشرق بتافت — همچو چشمه مشرقت در جوش یافت (آفتاب)
چه بهانه میدهی شیدات را — ای بهانه شکرین بهات را (بها قیمت)
ای جهان کهنه را تو جان نو — از تن بیجان و دل افغان شنو
شرح گل بگذار از بهر خدا — شرح بلبل گو که شد از گل جدا
از غم و شادی نباشد جوش ما — با خیال و وهم نبود هوش ما
حالت دیگر بود کان نادر است — تو مشو منکر که حق بس قادر است
تو قیاس از حالت انسان مکن — منزل اندر جور و در احسان مکن
جور و احسان رنج و شادی حادث است (ثانی) — حادثان میرند و حقشان وارث است
عذر خواه عقل کل و جان توی — جان جان و تابش مرجان توی
تافت نور صبح ما از نور تو — در صبوحی (شراب نوشی صبح) با می منصور تو
داده حق چون چنین دارد مرا — باده که بود تا طرب آرد مرا
باده در جوشش گدای جوش ماست — چرخ در گردش اسیر هوش ماست

باده از ما مست شد نی ما ازو
قالب از ما هست شد نی ما ازو
ما چو زنبوریم و قالبها چو موم
خانه خانه کرده قالب را چو موم

...چه اندر آتش و دود چنین — صد پراگنده همی گفت این چنین
همچنانش گاه ناز و گه نیاز (عجز) — گاه سودای حقیقت گه مجاز

करुणा करिय कलह नहिं साईं । विरह वंत व्याकुल मन माहीं

उषा पूर्व दिशा ते पग धारे । दिनकर सरिस प्रकाश पसारे

(प्रातकाल की अरुणताई)

सदा सहज सब को सुखदाई । मंद हु विरह दुसह दुख आई

विपत बंधु तुम प्राणन प्यारे । एक विनय बल विपुल हमारे

अकथ अलौकिक अमल अबानी । प्रेमिन कर कछु कहां कहानी

दुख सुख सहित होंहि संसारी । आस अंजस गत उमंग हमारी

ऐ प्रेमिन दशा अलौकिक होई । जिन हरि कृपा कि जाने कोई

साधारण जन जिन जिय जानी । देखि शुभाशुभ कर हु गलानी

दुख सुख परोपकार अपकारा । सब चल एक अचल करतारा

हे सर्वज्ञ सर्व के स्वामी । सर्व प्राण सर्वांतर्या मी

तुमहि प्रकाशक मन बुधि जी के । तुमहि प्रदायक प्रेम अमी के

प्रेम प्रदा जिनकी हितकारी । सुगन तिहु कर सके सुखारी

(सूरज) तरणि कि होइ बिरह ते ताते । (मही) प्रदा कि पियहि प्रेम रंग राते

मुकुर न हमहि दिखावही हमहि मुकुर झलकाहि

(दर्पण)

हम प्रकाश तनु ध्यानमय तन प्रकाश हम माहि

अनुपम अज अद्वैत प्रभु पूर्ण घट घट मांहि

इमि मधुरता तेल तिल घृत पय जिमि न दिखांहि

(भूत) (दूना)

ऐश्वर्य अप्राप्ति मन थिर नाहीं । कोटि विकल्प गुनत मन माहीं

कबहुं अमित विकल हुजाई । कबहुं दीनता धारि पछिताई

مرد غرقه گشته جانی میکند — دست را در هر گیاهی میزند
تا کدامش دست گیرد در خطر — دست و پایی میزند از بیم سر
دوست دارد دوست این آشفتگی — کوشش بیهوده به از خفتگی
آنکه او شاه ست او بیکار نیست — ناله از وی طرفه کو بیمار نیست
بهر این فرمود رحمان ای پسر — کل یوم هو فی شان ای پسر
اندرین ره می تراش و می خراش — تا دم آخر دمی فارغ مباش
(بیکار مت رہ)
تا دم آخر دمی آخر شود — که عنایت با تو صاحب سر شود
(کوئی وقت ایسا ہوگا)
هر که او می کوشد ار مرد و زن است — گوش و چشم شاه جان بر روزن است

(حاشیہ: … ہر روز وہ نئی شان میں ہے)

افگندن خواجه طوطی مرده را

بعد از آنش از قفس بیرون فگند — طوطیک پرید تا شاخ بلند
طوطی مرده چنان پرواز کرد — کآفتاب از شرق ترکی تاز کرد
خواجه حیران گشت اندر کار مرغ — بی خبر ناگه بدید اسرار مرغ
(جس بھید سے ناواقف تھا مشاہدہ کیا)
روی بالا کرد و گفت ای عندلیب — از بیان حال خودمان ده نصیب
او چه کرد آنجا که تو آموختی — سوختی ما را و خود افروختی

گفت طوطی که بفعلم پند داد
که رها کن نطق و آواز و گشاد

زانکه آوازت ترا در بند کرد — خویشتن را مرده پی این پند کرد
یعنی ای مطرب شده با عام و خاص — مرده شو چون من که تا یابی خلاص
(خوش کنندہ ہر ایک)
دانه باشی مرغکانت بر چنند — غنچه باشی کودکانت بر کنند

मारग हेत हस्ती हु हियहारो । डूबत तृरा कर लेत सहारो
करुराा कर कोइ ताहि उबारे । हाथ पाँउ बर बश हुइ मारे
रहिय शोक बश कर मनुसाई । भल बेगार न भल ठलुआई
त्रिभुवन पति हु सानतप लागे । केवल कर्म कुतूहल पागे

ईश्वर यत्यज्ञानमयतपः तमाशा

पुरुषारथहि सिद्धि मुनि गावा । क्रांतिमय पुरुषहि वेद बतावा
पुरुषारथ से ऋषिन अघाहीं । जब लंग प्राण रहैं तन माहीं
पुरुषारथ प्राणान्त न हारहि । भनक परत प्रभु भय सब टारहिं
मन बच नारी नर जो धावहि । अंतर्यामिहि कवन जनावहिं

बचन

तोते को बाहिर फेंकना

शोकित बिश्रांतिह शुक शब जानी । फेंक दीन तिह सहित गलानी

बैश्य मुरदा

धरणी परत खग त्वरित उड़ावा । मनहु शरासन ते शर धावा

पृथ्वी धनुष तीर

लखत बैश्य अस अद्भुत रचना । चकित चितै बोल्यो इह बचना
शुक निज कथा कहहु समुझाई । जिह विधि मोर भेद भ्रम जाई
उह शुक तोहि कहा कहि समुझावा । जिह जीवित इह जाल छुड़ावा

कर कर तब करुरााय तन कीर मोहि समुझाव

दयालु

कलरव बं कामुक बचन तजि जो तोहि कुशल सुहाव

मीठा बोल मुरदा

कौन बद्ध यह कोकिल बयना । शब हुइ छूट कौन यह सयना
फसेउ सबहि मृदु बचन सुनाई । मोसम शब हुइ छूटहु भाई
पक्षी भषहिं जो धान्यहु होई । मुकुलित बाल बिदारहि तोही

कली

دانه پنهان کن بکلی دام شو	غنچه پنهان کن گیاه بام شو
هر که داد او حسن خود را در مزاد	صد قضای بد سوی او رو نهاد
چشمها و خشمها و اشکها	بر سرش ریزد چو آب از مشکها
دشمنان او را ز غیرت میدرند	دوستان هم روزگارش میبرند
آنکه غافل گشت از کشت بهار	او چه داند قیمت این روزگار
در پناه لطف حق باید گریخت	کو هزاران لطف بر ارواح ریخت
تا پناهی یابی آنگه چه پناه	آب و آتش مر ترا گردد سپاه
نوح و موسی را نه دریا یار شد	نی بر اعداشان بکین قهار شد
آتش ابراهیم را نی قلعه بود	تا برآورد از دل نمرود دود

وداع کردن طوطی خواجه را و پند دادن و پریدن

یک دو پندش داد طوطی بی نفاق	بعد از آن گفتش سلام الفراق
الوداع ای خواجه رفتم تا وطن	هم شوی آزاد روزی همچو من
خواجه گفتش فی امان الله برو	مر مرا اکنون نمودی راه نو

سوی هندوستان اصلی رو نهاد
بعد شدت از فرح دل گشت شاد
تن قفص شکلست و زان شد خار جان (خلش روح)
از فریب داخلان و خارجان

اینش گوید من شوم همراز تو	وانش گوید نی منم انباز تو

जीर्णजालहु इजीवन कीजे
दूबदेहु धरि दुखसह लीजे
घास
तपविद्या बैराग्य दिखाये
आवत दुःखनिकाय सुभाये
नेत्रन दोषरोष बिपरीते
आवत चहुंदिशते अनचीते
बैरी
ईर्षाबश अरि आरान लागू
हरहि समय प्रिय प्रति अनुरागू
लोहताव सरि वार समाना
खोवत समय अमोल अयाना
लोहेका ताव ठंडा होनेपर काम नहीं आता
ईश्वर शरण उदधि अवगाहा
तिहबिनु त्रिभुवनहू न निवाहा
अस प्रभुकर शरणागत पाई
हुतभुक उदधि करहि सिवकाई
अग्नि समुद्र
ऋषि अगस्त्य वारिधि अपारा
अंजुलि तीन ताहि करडारा
समुद्र
प्रल्हादहि लखि अनल जुड़ानी
तजि निज धर्म भई जिम पानी
ठंडी होगई

शुकका उड़जाना स्वामी को आशीर्वाद देकर

दै इक शुभ शिक्षा शुक कीनी
कर प्रणाम अतिप्रेम रंगभीनी
आशिष दे पुनि चलेउ पराई
तुमरेउ बंधु छुड़ावे सांई
धनिक सराहि सीख लेभारी
फिरेउ सदन सुखसदन संभारी
घर परमात्मा

शुक गमनेउ निज गृह मगन प्रभु गुणगण करगान
सुखी भयेउ अति पाय जिम बूड़त जन जलयान ॥
नाव
आतम हित तनमान्य ता कृषिहु शूल की बार
शरीराभिमान
समय हेतु अरि मित्र दोउ मनहि प्रबुद्ध अहार

सहमान होइ इक करत बड़ाई
सहचारी इक करि सिवकाई

اینش گوید نیست چون تو در وجود — در کمال و فضل و در احسان و جود

آنش گوید هر دو عالم آن تست — جمله جانها طفیل جان تست

اینش گوید گاه عیش و خرمی — آنش گوید گاه نوش و همدمی

او چو بیند خلق را سرمست خویش — از تکبر میرود از دست خویش

او نداند که هزاران را چو او — دیو افگندست اندر آب جو

لطف و سالوس جهان خوش لقمه ایست — کمترش خور کو پر آتش لقمه ایست

آتشش پنهان و ذوقش آشکار (چلغی چنبری باثن / ذو لیقه) — دود او ظاهر شود پایان کار

تو مگو آن مدح را من کی خورم — از طمع میگوید او من پی برم

مادحت گر هجو گوید بر ملا — روزها سوزد دلت زان سوزها

گرچه دانی کو ز حرمان گفت آن (محرومی) — کان طمع که داشت از تو شد زیان

آن اثر میماندت در اندرون — در مدیح این حالتست آزمون

ن اثر هم روزها باقی شود — مایهٔ کبر و خداع جان شود (خوشامد / نقصان)

نیک ننماید چو شیرینست مدح
بد نماید زانکه تلخ افتاد قدح

بچو مطبوخست و حب کان را خوری (جوشانده / گولی) — تا بدیری شورش و رنج اندری

خوری حلوا بود ذوقش دمی — این اثر چون آن نمی پاید همی

ن نمی پاید همی ماند نهان — هر ضدی را تو بضد آن بدان

ن شکر باشد نهان تاثیر او — بعد چندی دمبل آرد نیش جو

ب و مطبوخ خوردی ای ظریف (عقلمند) — اندرون شد پاک ز اخلاط کثیف (ماده خراب)

एक कहत तुम सम जग नाहीं
बुध विज्ञान विनय निपुणाई
इक कहि तुम दोउ लोक सुधारे
प्रभु मारग प्रतिपाल हमारे
तुमही सन संसार सुखारी
कहत एक तुमही हितकारी
जगत पूज्य आपहि पहिचानी
करि अभिमान करत हित हानी
नहिं जानत हम सम अनियारे
अगणित अंध कूप में डारे
(अभिमान ने)
जगत मान गौरव अधिकाई
कालकूट मय सरस मिठाई
(बडप्पन)
स्वाद प्रगट बिष रहै लुकाई
बाढ़त मद को सकहि छिपाई
कहब प्रशंसा मोहि न सुहाई
लालच वश उहि कहत बनाई
जो अवाक्य कहि निंदति द्रोही
लागत बचन बाण सम तोही
कहत सो स्वारथ हित कटुबानी
जानहु यदपि कीन्ह मम हानी
(यद्यपि तुमने उसकी हानी भी की है)
तदपि प्रभाव परत घट माहीं
कसन प्रशंसा सुनत सिहाहीं
मनहि मान कर मुंह मसि लावे
कलुषित कर कुल कान बचावे
(स्याही) (काला)

प्रचुर प्रशंसा के सुने बढ़त न प्रेम प्रमाद
निंदा कठिन कुठार सम सुनत कठिन कटुवाद

औषधि कटु सेवत नर जोई
तासु कटुकता चिर थिर होई
(बहुतदिन)
पाइ मधुर स्वादिष्ट अहारा
चिर न रहै मुख मधुर तुम्हारा
(बहुतदेर)
प्रीणक मुख लहि थिर उदर रहाई
सोइ श्लाघा की गति भाई
(खुशामद)
क्षीर विकृत थिर उदर रहावे
बिबिधि वमन आ व्याधि बढ़ावे
(मिठाई इत्यादि)
कटु भेषज यदि मुखहि न भावे
मल हर उदर विकार नसावे
(निःस्वाद)

نفس ازبس مدحها فرعون شد / کن ذلیل النفس هوناً لا تسد
تا توانی بنده شو سلطان مباش / زخم کش چون گوی شو چوگان مباش
ورنه چون لطفت نماند وین جمال / از تو آید آن حریفان را ملال
آن جماعت کت همی دادند ریو / چون ببینندت بگویندت که دیو
جمله گویندت چو بینندت بدر / مرده از گور خود بر کرده سر
تا تو بودی آدمی دیو از پیت / می دوید و می چشانید او میت
چون شدی در خوی دیوی استوار / می گریزد از تو دیو ای نابکار
آنکه اندر دامنت آویختند / چون چنین گشتی ز تو بگریختند
این همه گفتیم لیک اندر بسیچ / بی عنایات خدا هیچیم هیچ

بی عنایات حق و خاصان حق
گر ملک باشد سیاهستش ورق

ای خدای قادر بیچون و چند / از تو پیدا شد چنین قصر بلند
واقفی بر حال بیرون و درون / نی کم و نی بیش نی چندی و چون
ای خدا ای فضل تو حاجت روا / با تو یاد هیچکس نبود روا
این قدر ارشاد تو بخشیده / تا بدین بس عیب ما پوشیده
قطره دانش که بخشیدی ز پیش / متصل گردان بدریاهای خویش
قطره علم است اندر جان من / وا رهانش از هوا و خاک تن
پیش ازین کین خاکها خسفش کند / پیش ازین کین بادها نشفش کند
گرچه چون نشفش کنی قادری / کش از ایشان وا ستانی واخری

सुनि सुनि जन की ठकुर सुहानी । मन भयो मत्त मतंगज हानी
सेवक मन हु छांड़ ठकुराई । सरल स्वभाव सबहि शिर नाई
निधन (नाश) जबहि धन जन ह्वै जावे । नगर नारि नर निकट न आवे
पद पंकज (कमल) जो सीस नवावहिं । सोइ जन प्रेत प्रेत कहि धावहिं
द्वारहु देखि द्वेष चित धारी । कुशल[१] हु पूछत होंहि दुखारी
सिद्ध युवक धनपति तोहि जानी । प्रेम पियूष पियाव सुबानी
तन धन बल बुधि निरखि विहीना । तजहिं तोहि कहि कर मतिहीना
निसदिन चरण कमल अनुरागे । भाग्य अष्ट भय तजि सब भागे
जन शिक्षा हित कछुक बखाना । बिनु हरि कृपा होहि नहि ज्ञाना ।

सत संगति बिनु संत के बिनु सर्वज्ञ (परमात्मा) सहाय ।
सुगति (मुक्ति) पाव किम जीव जड़ किं संदेह नसाय ॥

हे अनादि अव्यय अविकारी । तुम यह सकल सृष्टि विस्तारी
वाह्यान्तर गति जानन हारे । अव्यय अमर अकाम पियारे
कृपा सिंधु कामद करुणाकर । भजहिं अन्य ते मन्द मन्दतर
तुम बल अस्तुति करुं तुम्हारी । हरहु अविद्या कृत अंधियारी
ज्ञान सरित जो हृदय बहाई । वारिद बोध सो लेहु मिलाई
विषय समीर न शोखव ते ही । त्राहि त्राहि प्रभु परम सनेही
जब लग तन नहि अनिल (वायु) सुखावे । जब लग अनल (अग्नि) न ताहि जरावे
तुम सर्वज्ञ समर्थ गुसाई । अनल अनिल (अग्नि पवन) तुमरे वश माई

१ जो तुम उनसे कुशलता भी पूछोगे तो भी दुःखित होंगे और अपना हाल पूछ दण्डवत करेंगे और दुःखित होंगे॥

قطره کو در هوا شد یا که ریخت / از خزینه قدرت تو کی گریخت
گر در آید در عدم یا صد عدم / چون بخوانیش او کند از سر قدم
صد هزاران ضد ضد را می‌کشد / بازشان حکم تو بیرون می‌کشد
از عدم‌ها سوی هستی هر زمان / هست یا رب کاروان در کاروان
خاصه هر شب جمله افکار و عقول / نیست گردد غرق در بحر نغول
باز وقت صبح چون اللهیان / بر زنند از بحر سر چون ماهیان
در خزان بین صد هزاران شاخ و برگ / از هزیمت رفته در دریای مرگ
زاغ پوشیده سیه چون نوحه گر / در گلستان نوحه کرده بر خضر
باز فرمان آید از سالار ده / مر عدم را کانچه خوردی باز ده
آنچه خوردی واده ای مرگ سیاه / از نبات دورد و از برگ و گیاه (گلاب)
ای برادر عقل یک دم با خود آر / دم بدم در تو خزان است و بهار

ای برادر یکدم از خود دور شو
با خود آ و غرق بحر نور شو

باغ دل را سبز و تر و تازه بین / پر ز غنچه ورد و سرو و یاسمین
ز انبهی برگ پنهان گشته شاخ (بهار عرفان است) / ز انبهی گل نهان صحرا و کاخ
این سخنهایی که از عقل کل است (سرشته برگ) / بوی آن گلزار و سرو و سنبل است
بوی گل دیدی که انجا گل نبود / جوش مل دیدی که انجا مل نبود
بو قلاوز است و رهبر مر ترا / می برد تا خلد و کوثر مر ترا
بو دوای چشم باشد نور ساز / شد ز بوی دیده یعقوب باز

यद्यपि सलिल समीर सुखावा । कारण मिलहि न होत अभावा
(जल पवन)
कारण माहि अदृश्य रहाही । प्रकट होइ पुनि आज्ञा पाई
(गुप्त)
जल छिति हरहि अनलहि हरई । ताहि अनिल तिहि नभ ग्रस करई
(पृथ्वी अग्नि) (वायु आकाश)
छिन छिन माह सृजे नव माया । विवश होहि ब्रह्मांड निकाया
(समूह)
प्रबल प्रलय रजनी अंधियारी । जीव चुम्बक की लय कारी
(रात्रि)
प्रात कल्प कर प्रभव पसारे । संवत्सर शशि रवि नभ तारे
(उत्पन्न)
ऋतु निदाघ तरु पर्ण गिराये । यतिः मनो निज धनहि लुटाये
(गरमी) (सन्यासी)
काक उलूकन रोदन ठाना । शोक भवन वन मनहु मसाना
कानन दशा देखि दुखकारी । मेघमाल जनु मोचन वारी
(वन)
द्रुम पल्लव दल मुकुल सुहाये । सुखी देखि द्रुम मनहु निधि पाये
(वृक्ष शाखा पत्र कली)
ऐसोक विचारहु सुत मन माही । ग्रीषम शरद नित माति तुम पाही

नम्राय पाथ मय हृदय नव पावन प्रेम पयोध
(नम्रता जल) (समुद्र)
ह्वै निमग्न लहु ज्ञान मणि तजि तृण विषय विरोध

बाग विचित्र बन्यो मन माही । नित बसंत आतप जहां जाई
(बहार खिज़ा)
शील विटप यम नियम विताना । सुमन अनेक रिद्धि सिधि नाना
(शाखा)
द्रुम विश्वास आप बन माली । करत मुक्ति फल की रखवाली
ज्ञान गंध युत बुद्धि बयारी । हरन ताप त्रिय बहु सुखकारी
गंधहि विमल बसीठ बनाई । देखहु सकल कुसुम सरसाई
(पुष्प)
सोई सुगंधि दिव्य दृशकारी । अनुभव करि ऋषि सकहि निहारी

بوی بد مر دیده را تاری کند
بوی یوسف دیده را یاری کند

تو که یوسف نیستی یعقوب باش
همچو او با گریه و آشوب باش

این رباعی را شنو از جان و دل
تا بگل بیرون شوی از آب و گل

ناز را روی بباید همچو ورد
چون نداری گرد بدخوی مگرد

زشت باشد روی نازیبا و ناز
عیب باشد چشم نابینا و باز

پیش یوسف نازش و خوبی مکن
جز نیاز و آه یعقوبی مکن

معنی مردن ز طوطی بد نیاز
در نیاز و فقر خود را مرده ساز

تا دم عیسی ترا زنده کند
همچو خویشت خوب و فرخنده کند

در بهاران کی شود سرسبز سنگ
خاک شو تا گل بروید رنگ رنگ
سالها تو سنگ بودی دلخراش
آزمون را یک زمانی خاک باش

تمام شد

दृश अनात्म दुख द्वंद बढ़ावे । देख दृष्टि दृग दोष न सावे
इष्ट लाभ हिन वह दुख सहिये । व्याकुल विरह विवश नित रहिये
ऋषि उपदेश सुनहु चित लाई । जिह कर विषय विकार नसाई
मुख मयंक (चन्द्र) सम जो नहिं तोरा । रहिये चितै जिम चकित चकोरा
मान कि सो हु कुरूपहि कीना । नाम नयन सुख नैन विहीना
जो न होइ मुख चन्द्र समाना । रहिये चकोर सरस निर्भ्रामा
शुक दीनेउ शब अर्थ बनाई । दीन खिन्न तन रहिये सहाई
तो तोहिं सन सुख (मुखा) दहिं लावहि । मलय सरस निज पंथ बसावहि

पाहन (पत्थर) पुरुष न पुष्प कहुं उगें पयोधर (बादल) बार (जल)
मृतका माहि सुतरु (कैठार) घने कीनो जिन तन छार
पाथर ह्वै अब लग रहे वर्ष पचासक बीत
परखहु पुन्न पराग (धूल) ह्वै परिचय सों परतीत

इति श्री ज्ञान कहानी

अर्थात्

मसनवी मौलवी रूम का भाषाऽनुवाद

प्रथम भाग

सम्पूर्णम्

ज्ञान कहानी

अर्थात्

मसनवी मौलवी रूम का भाषाऽनुवाद

प्रथमभाग

अनुवादक शंकरानंद

आगरा

मतबे शम्सी मशीन प्रेस आगरा में मुहम्मद क़ादिर और
ऐनुल इब्राहीम खां के प्रबन्ध से छापी गई